Bop-9

रखी संख्या ३९६ (३६×११) में यह लब्धि जोड़ दी ३९६+२ =३९८

जन्मतिथि कृष्णपक्ष की तृतीया है। शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से गिनने पर संख्या आई १८

३९८+१८=४१६÷३०=१३ लब्धि, शेष २६।

अब शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से गिनने पर २६वीं तिथि वैशाख (जन्ममास) कृष्णपक्ष ११ होगी।

मिलान करने पर ज्ञात हुआ कि संवत् २०२८ के वैशाख कृष्णपक्ष ११ को बुधवार है। अतः जातक का नया वर्ष संवत् २०२८ वैशाख कृष्ण ११ बुधवार इष्ट २४।२२।१२ पर प्रारम्भ हुआ।

तिथि निकालने की सरल रीति

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, जन्मकालीन सूर्य एवं वर्ष प्रवेश सूर्य एक ही होता है। उपरोक्त उदाहरण में जन्मकालीन सूर्य ०।७।२६।४७ है।

२०२८ के पंचांग में सूर्य स्पष्ट ०।७।२६।४७ देखा तो उसके सामने वैशाख कृष्ण ११ बुधवार अंकित था। अतः इस प्रकार तुरन्त ज्ञात किया जा सकता है कि वर्ष किस दिन प्रारम्भ होगा।

लग्न निकालने की विधि

लग्न निकालने के लिए लग्न-सारणी देखनी चाहिए। इसमें बाईं ओर ऊपर से नीचे राशि तथा ऊपर बाँयें से दाँयें अंश लिखे होते हैं।

वर्ष सूर्य ०।७।२६।४७ है, इसकी प्रथम दो संख्या ०।७ लें, अर्थात् ० राशि के ७ अंश।

लग्न-सारणी के ० राशि के ७ अंश का फल लिया तो स्पष्ट हुआ ३।४८।६।

इस फल को वर्ष इष्ट में जोड़ा।

२४।२२।१२	वर्ष इष्ट
३।४८।०६	०।७ का सूर्य फल
२८।१०।१८	योग

इस योग को पुनः लग्न-सारणी में देखा तो ४।२७ का फल १८।६।१२ स्पष्ट हुआ। चूंकि अपना इष्ट २८।१०।१८ है जो कि इसके निकटतम, पर कुछ अधिक है, अतः वर्ष लग्न, स्पष्ट सिंह के २७–२८ अंशों के बीच है।

इस प्रकार वर्ष लग्न, सिंह के २७ अंश स्पष्ट हुए।

उस दिन अर्थात् संवत् २०२८ को वैशाख कृष्ण ११ बुधवार, इष्ट २४।२२।१२ पर नया वर्ष सिंह लग्न के २७ अंशों में उदय होगा, इस प्रकार वर्ष लग्न, सिंह होगा।

वर्ष-प्रवेश के दिन जो-जो ग्रह जिस-जिस राशि में हों, वर्ष कुण्डली में भी वे ग्रह उसी-उसी राशि में रख देने चाहिएँ।

इस प्रकार उपरोक्त उदाहरण की वर्ष कुण्डली इस प्रकार बनी—

॥ वर्ष कुण्डली ॥

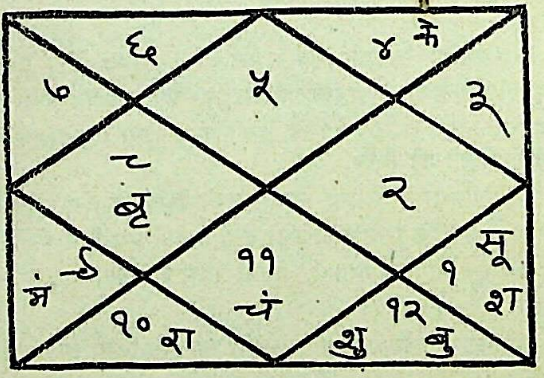

इस वर्ष कुण्डली से ही पूरे वर्ष का शुभाशुभ ज्ञात किया जाता है। पाठकों के लाभार्थ आगे के पृष्ठों में लग्न-सारणी दी जा रही हैं।

॥ लग्न सारणी १ ॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
०	५०	५७	५	१३	२०	२८	१६	४८	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९
	९	४७	२५	५	४८	३५	१८	६	०	४८	४२	३९	४७	३९	४१
	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९
वृषभ	५४	३	१२	२१	३०	३९	४९	५८	७	१७	२६	३५	४५	५४	४
१	५९	५२	४९	४७	५२	५९	११	२४	४०	१	२५	४३	२४	५९	३७
	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
मिथुन	४६	५७	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३४	४५	५६	८	१९
२	४१	१६	५५	३७	४२	९	१९	५१	४७	४५	४५	४८	२२	०	९
	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०
कर्क	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२
३	१३	४४	१६	४९	२२	५६	२९	३	३८	११	४४	२०	५२	२५	२२
	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५
सिंह	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४
४	३४	५७	२७	३९	५९	१९	३९	५५	१२	२८	४४	५८	१२	२५	३८
	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१
कन्या	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७
५	३६	४०	४६	४७	५०	५९	५७	२०	५३	२१	८	१३	४	२०	२४

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	४७	५	५४	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३७	४६
०	४९	५७	९	२३	३९	१	२१	५८	३५	४६	२०	५८	३८	२२	९
वृषभ	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	१४	२४	३३	४३	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	४	१५	२५	३६
१	१९	४	५३	४६	४२	४३	४५	५१	०	१४	३०	४९	१३	३९	९
मिथुन	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	३०	४१	५२	४	१५	२०	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९
२	२०	३२	४९	५	२४	४४	६	२९	५३	१७	४५	१४	४२	११	४२
कर्क	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५
३	३०	३	३७	६	३७	८	३७	१७	३५	४	३०	५६	२२	३७	११
सिंह	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	५५	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२०	३१
४	४९	०	१०	२५	३६	४९	५१	५३	५९	०	१२	७	२२	२७	३२
कन्या	३	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	२८	३९	५०	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	१९	३०	४१	५२	४
५	२८	३३	३७	४३	४८	५४	०	७	१९	१०	२६	३५	४९	२९	११

॥ लग्न सारणी २ ॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६
तुला	१५	२६	३७	३९	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३
६	२२	३४	४८	२	१६	३१	४६	५	२१	४१	६	२०	३३	३	२५
	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२
वृश्चिक	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८
७	२	३५	८	४०	१६	४९	५२	५६	३१	४	३८	११	४३	१६	४७
	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८
धनु	४०	५२	३	१४	२४	३६	४७	५८	८	१९	३०	४१	५२	२	१३
८	५१	०	७	१२	१५	१५	१३	८	४१	५१	१८	२३	४	४४	१९
	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३
मकर	५५	५	१४	२४	३३	४२	५२	१	१०	२०	२९	३८	४७	५६	५
९	२२	१	३६	१७	३५	५९	१९	३६	४९	१	८	१३	११	८	१
	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७
कुंभ	२०	२८	३६	४४	५२	०	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	९
१०	१७	२१	१३	२१	१८	१२	५३	५४	४२	२८	१२	५४	३४	१३	५०
	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०
मीन	८	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५१
११	५२	११	१७	४८	६	१९	४२	०	१८	४०	५४	१२	४३	४९	८

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	१८	२९
तुला	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	४	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५
६	४९	१३	३८	३	३०	५६	२५	४३	२३	५२	२३	५४	२५	५७	२९
वृश्चिक	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९
७	१८	४९	१८	४७	१५	४३	७	३१	५४	३६	३६	५४	१३	३६	३९
धनु	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
	२३	३४	४४	५५	५	१५	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३५	४४
८	५१	२१	४७	१०	२९	४६	५९	९	१५	१७	१८	१४	६	५५	४१
मकर	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
	१३	२२	३१	४०	४८	५७	५	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२
९	५·१	३८	२२	२	३९	१४	४७	२	३८	५९	२०	३७	५१	३	५१
कुंभ	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	१७	२४	३२	३९	४८	५५	२	९	१७	२४	३२	३९	४६	५४	१
१०	१७	५९	३२	५८	२८	३९	३३	५४	१९	४४	७	२४	५१	२	३२
मीन	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	५८	५	१३	२०	२७	३५	४२	५०	५७	४	११	२०	२७	३५	४२
११	२८	५८	९	३१	५३	१६	४०	५	२७	११	३२	२०	२८	०	३४

एक स्पष्टीकरण

जन्मपत्रिका का आधार जन्म स्थान होता है। उपरोक्त उदाहरण उस व्यक्ति का है, जिसका जन्म भी जोधपुर में हुआ था और जो अपना ३७वाँ वर्ष भी जोधपुर में व्यतीत कर रहा है, पर यदि यही व्यक्ति स्थायी रूप से दिल्ली रहता (चाहे जन्म उसका जोधपुर में हुआ हो) और ३७वाँ वर्ष भी मुख्यत: दिल्ली में ही व्यतीत करने का इच्छुक होता तो इष्टकाल दिल्ली का स्पष्ट करना चाहिए।

उपरोक्त इष्ट २४।२२।१२ है अर्थात् जोधपुर में सूर्योदय के पश्चात् ९ घंटे, ४४ मिनट, ४८ सैकण्ड बीतने पर वर्ष प्रारम्भ हुआ।

उस दिन जोधपुर में सूर्योदय प्रात: ५ बजकर ३६ मिनट पर हुआ था—

५—३६—००
९—४४—४८
१५—२०—४८

अर्थात् वर्ष प्रवेश दोपहर को ३ बजकर २० मिनट, ४८ सैकण्ड पर हुआ।

पर उस दिन दिल्ली में सूर्योदय प्रात: ५ बजकर, ५२ मिनट, ३२ सैकण्ड पर हुआ था।

५—५२—३२
९—४४—४८
१५—३७—२०

अर्थात् दिल्ली में उसे नया वर्ष दोपहर को ३ बजकर, ३७ मिनट, २० सैकण्ड पर प्रारम्भ होगा, अत: उसके लिये इस समय का इष्ट निकालना चाहिए। पाठक स्वयं देखें कि मात्र दो स्थानों पर वर्ष प्रारंभ होने में १६, मिनट ३२ सैकण्ड का अन्तर आ गया। एतदर्थ ज्योतिर्विदों को चाहिए कि वे स्थान को भी ध्यान में रक्खें और उसी के अनुसार वर्ष कुण्डली बनायें।

जन्मपत्रिका का आधार जन्म स्थान होता है, जबकि वर्षफल का

आधार कर्म स्थान होता है। अतएव जन्म स्थान एवं कर्म स्थान के सूर्योदय का अन्तर ज्ञात करके ही शुद्ध वर्षफल बनाना चाहिये, तभी प्रामाणिक वर्ष कुण्डली बन सकती है।

मुंथा

वर्षफल में मुंथा को काफी महत्त्व दिया है और इसे भी एक ग्रह माना गया है। इसकी वार्षिक गति १ राशि, मासिकगति २$\frac{१}{२}$ अंश तथा दैनिक गति ५ कला है।

मुंथा स्पष्ट

जन्म लग्न में गताब्द जोड़कर १२ का भाग देने से शेष तुल्य मुंथा स्पष्ट होगी।

पूर्व उदाहरण में जन्म लग्न स्पष्ट २।१३।२१।५३ है तथा गताब्द ३६ है।

२—१३—२१—५३
+३६
३८—१३—२१—५३ ÷ १२ (मात्र ३८ में ही)

लब्धि ३, शेष २—१३—२१—५३ अर्थात् मुंथा ३७वें वर्ष में मिथुन राशि १३ अंश, २१ कला, ५३ विकला पर स्पष्ट है।

॥ मुंथा कुण्डली चक्रम ॥

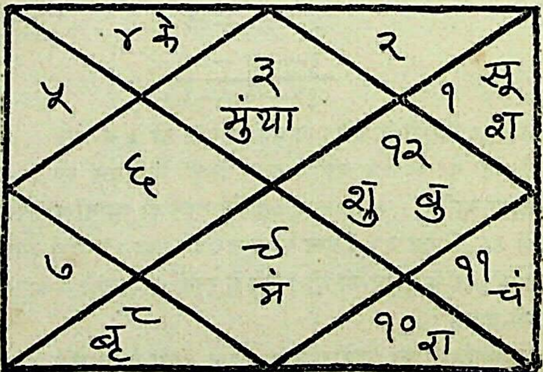

३७वें वर्ष में यह मुंथा मिथुन राशि में लिखी जायेगी ।

मुंथा कुण्डली में मुंथा को प्रधानता देते हुए बाकी ग्रह उन्हीं स्थानों पर लिखे जाते हैं, जहाँ वे वर्ष कुण्डली में हैं ।

मुंथा विचार

वर्ष कुण्डली देखने के लिए ग्रहों की स्थिति का अध्ययन आवश्यक है। आगे के पृष्ठों में सर्वप्रथम मुंथा का अध्ययन एवं तदनन्तर क्रमशः सभी ग्रहों का फल स्पष्ट किया जा रहा है ।

मुंथा

१. लग्न में

लग्न में मुंथा हो तो उसका फल सम होता है, न तो वह विशेष लाभदायक होती है और न ही विशेष हानिकारक। विशेषतः लग्नस्थ मुंथा का यही फल है कि वह परिश्रम करने से धन प्राप्ति में सहायक होती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मुंथा व्यर्थ की चिन्ता एवं क्लेश ही देती है।

२. दूसरे भाव में

दूसरे भाव में मुंथा इस वर्ष नये-नये उद्योग-व्यवसायों में धन लगवाती है तथा जातक को कठोर परिश्रम करने के लिये प्रवृत्त करती है। वह उस वर्ष अपने परिश्रम से प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेता है एवं लाभ उठाता है, पर मेरी दृष्टि में दूसरे भाव

में स्थित मुंथा कठोर परिश्रम करने पर ही धन प्राप्ति में सहायक होती है। इस प्रकार स्थित मुंथा से धन प्राप्ति में विविध बाधाएँ एवं संकट भी आते रहते हैं।

३. तीसरे भाव में

तीसरे भाव में मुंथा होने से जातक अपनी नवीन योजनाओं एवं युक्तियों से आगे बढ़ने में सक्षम होता है। समाज में सम्मान प्राप्त होता है तथा उसके द्वारा कुछ ऐसा कार्य होता है जो उसे समाज में श्रेष्ठता प्रदान करे, पर अधिकतर यह देखा गया है कि तीसरे भाव में मुंथा पारिवारिक कलह उत्पन्न करती है, भाइयों में पारस्परिक मतभेद बढ़ता है, संयुक्त कुटुम्ब टूटता है तथा भाई अलग-अलग होते हैं। पारिवारिक समस्या को लेकर मुकद्दमा वगैरह भी होता देखा गया है।

४. चौथे भाव में

चौथे भाव में मुंथा हो तो यह पूरे वर्ष-भर अनिष्ट प्रदान करती है। ऐसी मुंथा रक्त-विकार, शरीर में दर्द, हड्डियों के जोड़ों में पीड़ा, वायु-विकार, शत्रु-चिन्ता, कुटुम्व-हानि एवं झूठी बदनामी की कारक होती है। चतुर्थ भावस्थ मुंथा चित्त में उद्विग्नता, आलस्य-वृद्धि, मनस्ताप, सुख में कमी एवं सन्तान-चिन्ता करती है। नौकरी या व्यापार में भी यह परेशानियाँ ही पैदा करती है तथा स्थान परिवर्तन (Transfers) आदि से जातक का दुःख बढ़ता है।

५. पाँचवें भाव में

पंचम भावस्थ मुंथा सुख-शान्तिवर्धक एवं उन्नति प्रदायक होती है। ऐसी मुंथा परीक्षा में सफलता, पुत्र लाभ, पुत्रोन्नति तथा आर्थिक लाभ कराती है। पाँचवें भाव में मुंथा होने पर एक ओर जहाँ व्यक्ति की प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है, वहीं उसे व्यापार में भी लाभ होता है। धर्म में रुचि, तीर्थ यात्रा, विवाह, मांगलिक कार्य एवं सुख-सौभाग्य में वृद्धि ऐसी मुंथा ही प्रदान करती है।

६. छठे भाव में

छठे भाव में मुंथा व्यक्ति को दुष्कर्म में प्रेरित करती है, उसकी

तृष्णा बढ़ जाती है, वह परस्त्रीगामी होता हुआ बदनामी सहता है, इसके हृदय में आसुरी वृत्तियाँ पनपती हैं, मन में हर समय उत्तेजना एवं अशान्ति ही रहती है। स्वभाव में चिड़चिड़ापन, रोगवृद्धि, शत्रु हानि, पश्चात्ताप, आलस्य एवं सिरदर्द बना ही रहता है।

७. सातवें भाव में

सातवें भाव में मुंथा स्त्री को रोगी बनाती है या स्त्री की कुण्डली हो तो उसका पति रोगी रहता है। व्यर्थ का व्यय, भाइयों से हानि, कुटुम्ब में विरोध-वैमनस्य, झूठा मुक़द्दमा, मान-हानि, चित्त में उद्विग्नता वीर्य क्षीणता, अधर्म में रुचि एवं उत्साहहीनता बनी रहती है। सप्तम भावस्थ मुंथा व्यक्ति को जुए एवं सट्टे में भी संग्लन करती है तथा भाग्यहीनता से बने-बनाये कार्य बिगड़ जाते हैं।

८. आठवें भाव में

आठवें भाव में मुंथा हो तो व्यक्ति व्यर्थ ही निरुद्देश्य इधर-उधर भटकता रहता है, उसकी सम्पत्ति की चोरी होती है या व्यापार में घाटा लगता है। बुरे कार्यों में रुचि बढ़ जाने से अपव्यय होता है, जिस का पश्चात्ताप बना रहता है। ऐसे वर्ष में शारीरिक पीड़ा एवं मानसिक चिन्ता दोनों ही बनी रहती हैं। शरीर में कमजोरी एवं दुर्बलता आ जाती है। स्थान परिवर्तन, रोगवृद्धि, मरणान्तक कष्ट आदि स्वाभाविक हैं।

९. नवम भाव में

नवम भाव में मुंथा हो तो उस वर्ष व्यक्ति का भाग्योदय हो और जो इच्छाएँ कई वर्षों से मन में दबी होती हैं, उन्हें खिलने या सम्पन्न होने का मौका मिलता है। यदि व्यक्ति नौकरी में हो तो उसका प्रोमोशन होता है, व्यापार में हो तो उसे उस वर्ष विशेष लाभ मिलता है, जिससे वह उन्नति एवं सम्पन्नता की दिशा में अग्रसर होता है। उसका मन शुभ एवं मांगलिक कार्यों में लगता है, तीर्थ यात्राएँ होती हैं, श्रेष्ठ पद की प्राप्ति एवं समाज में सम्मान होता है।

१०. दशम भाव में

दशम भाव में मुंथा हो तो निश्चय ही पद लाभ, प्रोमोशन एवं राजकीय श्रेष्ठता या राजकीय सम्मान मिलता है, जातक की तरक्की होती है, शुभ कार्यों में व्यय होता है। मनोवांछित कार्य सफलता की ओर अग्रसर होते हैं तथा सुयश एवं सम्मान मिलता है। दशम भावस्थ मुंथा जीवन में ऐश्वर्य एवं पूर्ण सुखोपभोग प्रदान करती है।

११. एकादश भाव में

ग्यारहवें भाव में मुंथा हो तो वह वर्ष आर्थिक दृष्टि से श्रेष्ठ रहता है। एक ओर जहाँ ऐसी मुंथा आकस्मिक धन लाभ प्रदान करने में समर्थ होती है, वहीं दूसरी ओर विविध स्रोत बनाने में भी सहायता प्रदान करती है। राज्य लाभ, रुका हुआ पैसा मिल जाना, आमोद-प्रमोद में वृद्धि, मनोरथ सिद्धि एवं सत्सौभाग्य प्रदान करने में ऐसी मुंथा समर्थ होती है।

१२. द्वादश भाव में मुन्था

बारहवें भाव में मुंथा अनिष्टकारक मानी गई है। ऐसी मुंथा संचित द्रव्य का ह्रास, आलस्य वृद्धि एवं कार्य सफलता में बाधाएँ ही उपस्थित करती है। ऐसी मुंथा होने से दुर्जन-संग, चित्त में विकार, अपव्यय, धन एवं धर्म की हानि तथा रोग वृद्धि ही होती है।

ऊपर प्रत्येक भाव में स्थित मुंथा का शुभाशुभ स्पष्ट किया है, अब नीचे की पंक्तियों में मुंथा पर विशेष विचार किया जा रहा है।

मुंथा विशेष अध्ययन

जन्म कुण्डली में मुंथा का महत्व निर्विवाद है अतः मुंथा का विशेष अध्ययन परमावश्यक है।

१ वर्ष कुण्डली में जब मुंथा सूर्य के साथ में स्थित हो या सूर्य से दृष्ट हो तथा ऐसा सूर्य शुभ भावों का अधिपति हो तो मुंथा उसके शुभत्व में और बल प्रदान करती है। ऐसी मुंथा समाज में सम्मान, व्यापार में वृद्धि, धन लाभ, ऐश्वर्य भोग, यश, कीर्ति एवं सम्मान में भी वृद्धि प्रदान करती है।

२. यदि चन्द्र के साथ मुंथा हो और ऐसा चन्द्र शुभ भावों का अधिपति हो या शुभ भाव में स्थित हो तो ऐसी मुंथा व्यक्ति को आरोग्य, यश एवं सम्मान प्रदान करती है। रोगी हो तो व्यक्ति स्वास्थ्य लाभ करता है। उसके मन में शान्ति, राज्य से सम्मान, नौकरी में प्रोमोशन, व्यापार में लाभ एवं ख्याति में वृद्धि होती है।

३. यदि मुंथा वर्ष कुण्डली में मंगल के घर में, मंगल के साथ में, या मंगल से दृष्ट हो तो उस वर्ष व्यक्ति का एक्सीडेंट होता है, धातु क्षीणता व कमजोरी भी स्वाभाविक है। अनेक प्रकार की चिन्ताएँ, मानसिक असन्तोष एवं शस्त्राघात आदि से दुःख बढ़ता ही है।

४ यदि मुंथा वर्ष कुण्डली में बुध की राशि में, बुध के साथ में या बुध से दृष्ट हो तो उस वर्ष व्यापार में वृद्धि, समाज में यश तथा पूर्ण परिवारिक सुख मिलता है। विद्यार्थी निश्चय ही परीक्षा में सफलता प्राप्त करता है, नौकरी लगती है, बेरोजगार व्यक्ति आय का साधन ढूंढ़ निकालता है तथा उसे सर्वत्र यश, सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

५. यदि वर्ष कुण्डली में मुंथा गुरु से दृष्ट, गुरु के साथमें या गुरु की राशि में स्थित हो तो उस वर्ष घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होता है, परिवारिक सुख प्राप्त होता है तथा स्त्री-पुत्रों से पूर्ण सुख मिलता है। यदि जातक अविवाहित हो तो उसका विवाह होता है, समवयस्क हो तो सन्तान लाभ होता है तथा प्रत्येक दृष्टि से उसे पूर्ण सुखोपभोग होता है।

६. यदि मुंथा वर्ष कुण्डली में शुक्र से दृष्ट, शुक्र की राशि या शुक्र के साथ हो तो उस वर्ष व्यक्ति को धन-धान्य लाभ, स्त्री-पुत्रों से मिलन, ऐश्वर्य भोग तथा भौतिक सुखों की वृद्धि होती है। उस वर्ष ऐश्वर्य-प्रसाधनों पर भी विशेष व्यय होता है तथा उसकी अतृप्त इच्छाएँ तृप्त होती हैं।

७. यदि मुंथा वर्ष कुण्डली में शनि से दृष्ट, शनि के घर में या शनि के साथ में हो तो व्यक्ति को रुधिर-विकार, रोग वृद्धि एवं मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है, मुकदमेबाजी में उसे

परास्त होना पड़ता है तथा विविध रोगों का सामना करना पड़ता है।

८. यदि मुंथा राहु-केतु के साथ हो तो उस वर्ष व्यापार में घाटा होता है एवं किसी निकटस्थ संबंधी द्वारा विश्वासघात होता है, जिससे उसे विशेष आर्थिक हानि का सामना करना पड़ता है।

९. मुंथेश (मुंथा जिस राशि में पड़ी हो, उस राशि का स्वामी) वलवान् होकर शुभ भावों का अधिपति हो तो वह वर्ष सुखकर होता है, पर यदि मुंथेश ६, ८, १२ वें भाव का स्वामी हो तो मरणान्तक कष्ट देता है।

मुंथादान

अशुभ मुंथा होने पर व्यक्ति को मुंथादान करना चाहिए। मुंथादान में कांसे का पात्र, घृत, श्वेत वस्त्र तथा अन्न तुलादान करना चाहिए, जिससे अशुभ मुंथा का दोष दूर होकर वह सुखवर्धक हो सके। इसके साथ ही मृत्युञ्जय जप भी विशेप उपयोगी है।

भाव साधन

वर्षफल को स्पष्ट करने के लिये भाव साधन जरूरी है। भाव साधन स्पष्ट करने से यह ज्ञात हो सकता है कि प्रत्येक भाव कितने अंशों का है तथा कोई भाव कितना वली है।

लग्न से दशम भाव सारणी पाठकों के लिये विशेष रूप से दी जा रही है। अधिकतर पंचांगों में दशम सारणी दी हुई होती है, लेकिन उससे दशम भाव स्पष्ट करने में काफ़ी गणित करना पड़ता है और

समय भी नष्ट होता है।

आगे के पृष्ठों में लग्न से दशम भाव सारणी दी जा रही है। इसके द्वारा लग्न से ही दशम भाव स्पष्ट हो जाता है।

उदाहरणार्थ पिछले उदाहरण में वर्ष लग्न ४।२७।२४।२२ है। इस सारणी में बाईं ओर ऊपर से नीचे राशि तथा बाँयें से दाँयें अंश दिये हुए हैं। ४ राशि के २७ अंश को देखा तो फल मिला १।२६।३८।५, अतः दशम भाव स्पष्ट १।२६।३८।५ है। दशम भाव की राशि में ६ जोड़ने से चतुर्थ भाव स्पष्ट होता है

१।२६।३८।५ दशम भाव में
+६ जोड़े

७।२६।३८।५ चतुर्थ भाव स्पष्ट।

अतः इस प्रकार लग्न या प्रथम भाव स्पष्ट=४।२७।२४।२२
चतुर्थ भाव स्पष्ट=७।२६।३८।५
दशम भाव स्पष्ट=१।२६।३८।५

अन्य भाव स्पष्ट करना

चतुर्थ भाव में से लग्न भाव को बाकी निकालना, जो आवे उसमें ६ का भाग देना, इस प्रकार जो राशि आवे, उसे लग्न भाव में जोड़ने से लग्न भाव की संधि व इसमें उस राशि को जोड़ने से दूसरा भाव। इसी प्रकार पूरे बारह भाव स्पष्ट कर लेने चाहिएँ।

यह ध्यान रहे कि प्रत्येक भाव स्पष्ट के बाद उस भाव की संधि होगी और फिर अगला भाव स्पष्ट होगा।

ऊपर के कथन को पूर्व उदाहरण में घटित करें तो

चतुर्थ भाव ७-२६-३८-५ में से
प्रथम भाव ४-२७-२४-२२ घटाया

तो २-२९-१३-४३ शेष रहे, इसमें ६ का भाग दिया

॥ लग्न से दशम भाव साधन सारणी ॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९
मेष	२३	२४	२५	२५	२६	२७	२८	२८	२९	०	०	१	२	३	३
०	५६	३७	१८	५९	४०	२१	२	४३	२४	५	४०	२८	१५	५	४६
	२६	५६	२६	३८	४३	४२	४७	२२	२७	५२	११	५९	२६	३	३८
	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
वृष	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
१	४३	२३	२९	१९	१०	१	५२	४२	३३	२४	१८	६	८	९	१०
	३९	२१	६	२४	४२	२४	६	५४	४४	३०	१८	२	५४	५४	५४
	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
मिथुन	१५	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२९	०	१
२	४६	५२	५७	३	९	१५	२०	२९	३१	२७	४१	५१	५	९	३२
	४८	४२	५८	२	२७	३	३८	१३	५१	२४	२०	२३	१२	८	५३

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
मेष	४	५	६	६	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१५
०	३६	२३	१०	५७	४४	३१	१८	५	७	४२	३२	२४	२४	६	५६
	४९	१०	४६	४६	४८	४०	५१	१	१४	५०	४३	४८	५०	१	४८
	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
वृष	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
१	११	१२	१३	१३	१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२४	२३	३५	४१
	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	३४	३०	४०	१७
	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
मिथुन	२	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०
२	४६	०	१४	२८	४१	५५	९	२३	३७	५१	४	१८	३१	४६	०
	२७	३८	२४	१०	५५	५५	४०	२९	१७	२	५७	४२	२७	२१	१३

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	११	११	११	११	११	११	११	११	०	०	०	०	०	०	०
कर्क	२१	२२	२३	२४	२६	२७	२८	२९	१	२	३	४	६	७	८
३	१४	१७	४१	५५	९	२३	३६	५०	४	१८	३२	४७	२	१९	३१
	०	४५	३५	२३	१६	२४	४१	२६	५३	१९	७	५१	२२	४१	१५
	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
सिंह	२७	२८	२९	०	१	२	४	५	६	७	८	९	१०	१२	१३
४	९	१८	५७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	२२	६	२०	३५	४४
	२५	३९	५२	६	१९	३३	४८	२	१६	३०	५४	३२	५	८	१२
	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
कन्या	२९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१४
५	३८	४१	४३	४५	४७	५०	५२	५४	५६	५९	१	३	५	७	१०
	२	८	१०	१२	१	०	५	८	३	७	१३	२१	३५	५२	८

अंश	०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२७	२८	२९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
कर्क	९	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२६
३	४५	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५०	०
	४२	१३	३५	३९	५२	६	१९	३५	४८	१२	१६	२९	४३	५६	१२
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
सिंह	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
४	३५	४४	१०	१२	१४	१६	१८	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	५२
	१२	१९	२०	५५	४	८	९	१०	१५	५५	७	२	५	८	१
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
कन्या	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
५	१२	१४	१६	१४	२१	२१	२९	२७	३०	३२	३५	३७	४०	४२	४३
	१	०	७	१४	२२	३०	३२	१	५	८	९	७	२५	५०	५९

॥ लग्न से दशम भाव साधन सारणी ॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
तुला	०	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
६	४५	४	५०	५२	५४	५९	५९	१	२	५	८	१५	२३	३४	४२
	७	५	६०	१३	१५	१९	२२	२	५	१४	३८	५५	१७	१२	३
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	४	५	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	१९	२०
वृश्चिक	१०	१९	२९	३८	४३	५३	३	२०	३५	४९	४	१६	३०	४४	५८
७	७	५	३	२	०	१	५	१३	२५	३५	४५	८	३	१०	१
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
धनु	१०	११	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२७
८	३९	५३	६	२०	३४	४९	२	१५	२९	४३	५७	११	१४	१९	२७
	१४	१	५	३	१५	२२	११	३	२९	१०	१५	२५	४८	३७	३७

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	१८	२९
	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४
तुला	१६	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२६	२७	२८	२९	०	१	३
६	५०	१	१०	५९	२८	३८	४८	५६	९	१५	२४	३३	४२	५२	१
	०	१	८	१५	२२	८	९	३५	४२	५६	२	८	५	३	७
	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५
	२२	२३	२४	२५	२७	२८	२९	०	२	३	४	५	६	८	९
वृश्चिक	२	२५	३८	५५	७	१९	३४	४८	२	१६	३०	४३	५३	११	२५
७	२	५	३	५७	१२	२५	१८	२१	७	४	५	३	१	१५	०
	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
धनु	२८	२९	०	१	२	३	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
८	३०	३०	४२	४७	५३	५८	४	१०	१५	२१	२६	३२	३४	३६	४०
	३७	४२	३	४	५	३	१५	१२	२०	३०	५	८	३	४५	०

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
मकर	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
९	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५२	१०
	१	२	५	२	१	०	३	१	५०	२२	११	८	१५	३	३२
	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
कुंभ	११	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९	२०	२१	२१	२२
१०	४०	५	२२	९	५६	४३	३०	२१	१४	५१	३८	२४	५	४६	३८
	५१	३२	३२	३३	३०	२२	७	५	९	१०	५२	८	३	१५	२७
	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
	३	४	४	५	६	६	७	८	९	९	१०	१०	११	१२	१२
मीन	२४	५	४९	२८	९	५०	३२	१२	३	३४	१५	५६	२७	१३	५९
११	३९	१२	५	३	०	८	२	६	७	५	३	४५	४७	३६	२६

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
मकर	२९	०	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११
९	१	१	५२	४३	३३	२४	१५	६	५६	४६	३८	२९	२०	१०	७
	४०	४५	५०	७	३	४	९	१३	२१	२७	३५	४०	४५	५०	५०
	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
कुंभ	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२७	२७	२८	२९	२९	०	११	२	२
१०	३९	१६	५९	१२	५६	३४	१५	५६	३७	१८	५९	४०	२१	३०	३
	३७	४९	५९	१	२	३	६	८	१०	१२	५	३०	१५	१६	४
	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
मीन	१३	१४	१५	१५	१६	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२१	२१	२२	२३
११	४०	२०	०	३५	२४	५	४६	२८	९	५७	३१	१२	५३	३४	१५
	१२	४२	३५	१	२	८	५	७	३	५३	५९	१	५	३	४

६) ०२-२९-१३-४३ (० राशि

×३०

६०

+२९

६) ८९ (१४ अंश

८४

५

×६०

३००

+१३

६) ३१३ (५२ कला

३१२

१×६०=६०

+४३

६) १०३ (१७

१०२

१

×६०

६) ६० (१०

६०

×

राशि स्पष्ट हुई	०।१४।५२।१७।१०	यह षष्ठांश है।
लग्न	४।२७।२४।२२ में	
	०।१४।५२।१७।१०	षष्ठांश जोड़ा तो
प्रथम भाव की संधि	५।१२।१६।३९।१०	
	०।१४।५२।१७।१०	षष्ठांश जोड़ा
दूसरा भाव	५।२७।०८।५६।२०	
	०।१४।५२।१७।१०	षष्ठांश जोड़ा
	४४	

दूसरे भाव की संधि	६।१२।११।१३।३०	
	०।१४।५२।१७।१०	षष्ठांश जोड़ा
तीसरा भाव	६।२६।५३।३०।४०	
	०।१४।५२।१७।१०	षष्ठांश जोड़ा
तीसरे भाव की संधि	७।११।४५।४७।५०	
	०।१४।५२।१७।१०	
चौथा भाव	७।२६।३८।०५।००	

पाठक स्वयं ऊपर देख लें कि दशम भाव में ६ जोड़ने से जो चतुर्थ भाव स्पष्ट हुआ था, वह यही था।

इसके आगे के भाव स्पष्ट करने के लिये ३० अंश में से षष्ठांश घटाकर जो बचे उसे चतुर्थ भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की संधि होगी।

पूर्व उदाहरण में—

	घटी ३० में से	
	०।१४।५२।१७।१०	षष्ठांश घटाया
	०।१५।७।४२।५०	शेष रहा
	७।२६।३८।५।००	चतुर्थ भाव में
	०।१५।७।४२।५०	शेष जोड़ा
चौथे भाव की संधि	८।११।४५।४७।५०	
	०।१५। ७।४२।५०	शेष जोड़ा
पंचम भाव	८।२६।५३।३०।४०	
	०।१५। ७।४२।५०	शेष जोड़ा
पंचम भाव की संधि	९।१२। ११।१३।३०	
	०।१५। ७।४२।५०	शेष जोड़ा
छठा भाव	९।२७। ८।५६।२०	
	०।१५। ७।४४।५०	शेष जोड़ा
छठे भाव की संधि	१०।१२।१६।३६।१०	
	० ।१५। ७।४२।५०	शेष जोड़ा
सातवाँ भाव	१०।२७।२४।२४।००	

अर्थात् लग्न में ६ जोड़ने से सप्तम भाव स्पष्ट हो जाता है। तत्पश्चात संधि और भाव में ६ राशि जोड़ने से आगे के भाव स्पष्ट हो जाते हैं।

प्रथम भाव संधि	५।१२।१६।३९।१०	में
	६	जोड़े
सातवें भाव की संधि	११।१२।१६।३९।१०	
दूसरे भाव	५ ।२७। ८।५६।२०	में
	६	जोड़
आठवाँ भाव	११।२७।८।५६।२०	

इसी प्रकार दूसरे भाव की संधि में ६ जोड़ने से आठवें भाव की संधि, तीसरे भाव में ६ जोड़ने से नवम भाव। तीसरे भाव की संधि में ६ जोड़ने से नवम भाव की संधि। चौथे भाव में ६ जोड़ने से दशम भाव। चौथे भाव की संधि में ६ जोड़ने से दशम भाव की संधि। पाँचवें भाव में ६ जोड़ने से ग्यारहवाँ भाव। पाँचवें भाव की संधि में ६ जोड़ने से ग्यारहवें भाव की संधि तथा छठे भाव में ६ जोड़ने से बारहवाँ भाव स्पष्ट होता है।

उपरोक्त द्वादश भाव निम्न प्रकार स्पष्ट हुए :

॥ द्वादश भाव स्पष्ट ॥

१	संधि	२	सं	३	सं	४	सं
४	५	५	६	६	७	७	८
२७	१२	२७	१२	२६	११	२६	११
२४	१६	८	१	५३	४५	३८	४५
२२	३९	५६	१३	३०	४७	५	४७
५	**संधि**	**६**	**सं**	**७**	**सं**	**८**	**सं**
८	९	९	१०	१०	११	११	०
२६	१२	२७	१२	२७	१२	२७	१२
५३	१	८	१६	२४	१६	८	१
३०	१३	५६	३९	२२	३९	५६	१३

९	सं	१०	सं	११	सं	१२	सं
०	१	१	२	२	३	३	४
२६	११	२६	११	२६	१२	२७	१२
५३	४५	३८	४५	५३	१	८	१६
३०	४७	५	४७	३०	१३	५६	३९

भाव फलम्

वर्ष का अध्ययन जन्म कुण्डली एवं वर्ष कुण्डली दोनों को सामने रखकर किया जाता है। यह देखना चाहिए कि वर्ष कुण्डली का लग्न, जन्म कुण्डली का कौन-सा भाव है।

उदाहरणार्थ जन्म कुण्डली का लग्न मिथुन हो तथा वर्ष कुण्डली का लग्न सिंह आ जाय तो यह सिंह राशि जन्म कुण्डली का तीसरा भाव है अर्थात् तीसरे भाव का वर्ष माना जायगा।

इस दृष्टि से भी फल कथन सत्यता के निकट पहुँचाने में सक्षम होता है। नीचे प्रत्येक भाव का फल स्पष्ट किया जा रहा है—

प्रथम भाव

यदि वर्ष लग्न भी वही आया हो जो जन्म लग्न है तो वह वर्ष "पुनर्जन्म वर्ष" कहलाता है। ऐसा वर्ष स्वास्थ्य के लिये प्रवल घातक होता है। यदि जातक रोगी हो तो निश्चय ही उसकी मृत्यु समझनी चाहिए। स्वास्थ्य क्षीणता, मानसिक परेशानी, अकारण व्याघात, कार्य सिद्धि में वाधाएँ या व्याघात तथा शारीरिक कष्ट ऐसे वर्ष में होता है, यह निश्चय ही समझना चाहिए।

द्वितीय भाव

यदि वर्ष लग्न जन्म कुण्डली का दूसरा भाव हो तो आय के नवीन स्रोत बनते हैं तथा सम्पत्ति लाभ होता है। आर्थिक दृष्टि से वह वर्ष शुभ एवं अनुकूल रहता है पर इसके साथ ही साथ उस वर्ष एक्सीडेंट का भय भी बना रहता है, सामान्य बीमारी अथवा अस्वस्थता पर व्यय होता है तथा मानसिक चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

तृतीय भाव

यदि वर्ष लग्न जन्म कुण्डली का तीसरा भाव हो तो उस वर्ष पराक्रम वृद्धि, भाइयों की उन्नति तथा कीर्ति फैलती है। उस वर्ष जातक के द्वारा कुछ ऐसा कार्य होता है जो समाजोपयोगी होने के साथ-साथ उसकी ख्याति एवं सम्मान बढ़ाने में भी सहायक होता है।

चतुर्थ भाव

यदि वर्ष लग्न जन्म कुण्डली का चौथा भाव हो तो उस वर्ष जातक के जीवन में प्रसन्नता एवं सुख वृद्धि होती है, नया वाहन प्राप्त होता है तथा सुखोपभोग की वस्तुओं पर जातक का व्यय होता है। जीवन में ऐश्वर्य, सुख,सम्मान, सौभाग्य, वाहन एवं धन-लाभ ऐसे वर्ष में प्रचुरता से होता है।

पंचम भाव

यदि वर्ष लग्न जन्म कुण्डली का पंचम भाव हो तो वह वर्ष अनुकूल एवं सुखदायक रहता है, उस वर्ष विवाह, सन्तान-लाभ, मनोवांछित कार्य-सिद्धि, परीक्षा में सफलता आदि कार्य अनुकूल होते हैं। ऐसा वर्ष 'उद्यमी वर्ष' कहलाता है तथा जातक अपने परिश्रम के बल पर सफलाएँ प्राप्त करता है।

षष्ठ भाव

यदि वर्ष लग्न जन्म कुण्डली का छठा भाव हो तो उस वर्ष मुकदमे में पराजय का सामना करना पड़ता है, शत्रु हावी रहते हैं तथा जातक को विविध बाधाओं एवं संघर्षों का सामना करते रहना पड़ता है। ऐसे वर्ष में धन-हानि, शत्रु-चिन्ता, घर में कलह एवं पश्चात्ताप की अग्नि में जलते रहना पड़ता है।

सप्तम भाव

यदि वर्ष लग्न जन्म कुण्डली का सातवाँ भाव हो तो उस वर्ष घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होते हैं, कुमार या कुमारी हो तो उसका विवाह हो जाता है तथा मनोवांछित सफलता मिलती है। ऐसे वर्ष में विजय के समाचार एवं अनुकूल कार्य होते हैं।

अष्टम भाव

यदि वर्ष लग्न जन्म कुण्डली का आठवाँ भाव हो तो उस वर्ष जातक को घोर कष्ट उठाना पड़ता है, आकस्मिक रूप से एक्सीडेंट होता है या बीमारी का सामना करना पड़ता है तथा मरणान्तक कष्ट उठाना पड़ता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में असफलता, सम्मान-हानि एवं आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ता है।

नवम भाव

यदि वर्ष लग्न जन्म कुण्डली का नवम भाव हो तो ऐसा वर्ष 'भाग्योदय वर्ष' कहलाता है। उस वर्ष व्यापार में पूर्ण सफलता, सुख-सुविधाएँ एवं मनोनुकूल कार्य-सम्पन्नता की प्रसन्नता बनी रहती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है तथा विशेष आर्थिक लाभ से समाज में सम्मान प्राप्त होता है।

दशम भाव

यदि वर्ष लग्न जन्म कुण्डली का दशम भाव हो तो उस वर्ष को 'सफल वर्ष' की संज्ञा से विभूषित किया जाता है। राजकीय सेवा में जाने का सुअवसर मिलता है तथा राजकीय सेवा में हो तो उन्नति, प्रोमोशन, पदक या राज्य सम्मान प्राप्त होता है।

एकादश भाव

यदि वर्ष लग्न जन्म कुण्डली का ग्यारहवाँ भाव हो तो उस वर्ष जातक को व्यापार में श्रेष्ठ धन-लाभ होता है। बेरोज़गार सम्मान-नीय पद प्राप्त करता है तथा काफ़ी हद तक आर्थिक चिन्ता मिटाने में सक्षम हो जाता है। उस वर्ष रुका हुआ रुपया भी प्राप्त हो जाता है तथा आकस्मिक धन-लाभ की संभावनाएँ प्रबल होती हैं।

द्वादश भाव

यदि वर्ष लग्न जन्म कुण्डली का बारहवाँ भाव हो तो उस वर्ष झूठी निन्दा का सामना करना पड़ता है। वासनाओं की तृप्ति हेतु उसे अपव्यय करना पड़ता है, बहुत अधिक फालतू खर्च करना पड़ता है तथा जातक ऋणग्रस्त हो जाता है। मानसिक एवं आर्थिक चिन्ताओं

से ग्रस्त ऐसा वर्ष दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जायेगा ।

हर्ष बल

ताजिक में ग्रह बल को देखने के लिये जो पद्धति प्रचलित है, उसे हर्ष बल कहते हैं। ग्रहों के हर्ष बल चार प्रकार के होते हैं।

प्रथम बल

यदि वर्ष कुण्डली में सूर्य लग्न से ९ वें स्थान पर हो तो उसे बल मिलता है। इसी प्रकार वर्ष कुण्डली में चन्द्र तीसरे, मंगल छठवें, बुध लग्न में, गुरु ग्यारहवें भाव में, शुक्र पाँचवें भाव में और शनि बारहवें भाव में स्थित हों तो उन्हें बल मिलता है।

द्वितीय बल

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित हो तो उसे बल मिलता है।

ग्रह	स्वराशि
सूर्य	सिंह
चन्द्र	कर्क
मंगल	मेष, वृश्चिक
बुध	मिथुन, कन्या
गुरु	धनु, मीन
शुक्र	वृष, तुला
शनि	मकर, कुंभ

नीचे प्रत्येक ग्रह की उच्च राशि स्पष्ट की जा रही हैं।

ग्रह	उच्च राशि
सूर्य	मेष
चन्द्र	वृष
मंगल	मकर
बुध	कन्या
गुरु	कर्क
शुक्र	मीन
शनि	तुला

तृतीय बल

वर्ष लग्न से १, २, ३, ७, ८ और ९ वें भावों में स्त्री ग्रह (शुक्र, बुध, शनि, चन्द्र) हों तो इन ग्रहों को बल मिलता है और ४, ५, ६, १०, ११, १२ वें भावों में पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) हों तो इन ग्रहों को बल मिलता है।

चतुर्थ बल

यदि दिन में वर्ष प्रारम्भ हुआ हो तो पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) को तथा रात्रि में वर्ष प्रारम्भ हुआ हो तो स्त्री ग्रह (शुक्र, बुध, शनि, चन्द्र) को बल मिलता है।

निर्देश

जिस ग्रह को भी हर्ष बल प्राप्त हो उसे ५ विश्वात्मक बल मिलता है और जिस ग्रह को बल प्राप्त न हो उसे शून्य विश्वात्मक बल मिलता है।

पीछे उदाहरण में जो वर्ष कुण्डली स्पष्ट हुई है, उसे निम्न प्रकारेण हर्ष बल प्राप्त होगा :—

पहले प्रकार का बल तो केवल सूर्य को ही प्राप्त होगा, क्योंकि वह लग्न से नवम भाव में है। दूसरे प्रकार का बल सूर्य तथा शुक्र को मिलेगा, क्योंकि दोनों उच्च राशिस्थ हैं। तीसरे प्रकार का बल सूर्य को छोड़कर सभी को मिलेगा तथा रात्रि में वर्ष प्रवेश होने के कारण

स्त्री ग्रहों को चतुर्थ प्रकार का बल प्राप्त होगा।

इस प्रकार योग करने पर सूर्य को १० विश्वात्मक बल, चन्द्र को १०, मंगल को ५, बुध को १०, गुरु को ५, शुक्र को १५ तथा शनि को १० विश्वात्मक बल मिलेला।

॥ हर्ष बल चक्र ॥

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
५	०	०	०	०	०	०	प्रथम बल
५	०	०	०	०	५	०	द्वितीय बल
०	५	५	५	५	५	५	तृतीय बल
०	५	०	५	०	५	५	चतुर्थ बल
१०	१०	५	१०	५	१५	१०	योग

फलकथन

जिस ग्रह का हर्ष बल शून्य हो, वह पूर्ण निर्बल ग्रह कहलाता है। ५ विश्वात्मक बल होने पर वह ग्रह अल्प बली, १० विश्वात्मक बल होने पर वह ग्रह मध्यबली, १५ विश्वात्मक बल होने पर पूर्ण बली तथा २० विश्वात्मक बल होने पर वह ग्रह पराक्रमी कहलाता है।

हर्षित ग्रह अपनी मुद्दा दशा में शुभ फल देते हैं।

ताजिक मित्रादि दृष्टि

वर्ष कुण्डली में प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से ३, ५, ९ तथा ११ वें भाव में बैठे ग्रह का मित्र होता है, २, ६, ८ तथा १२ वें भाव में बैठे ग्रह का सम (अर्थात् न शत्रु, न मित्र) तथा १, ४, ७, १० वें भाव में बैठे ग्रह का शत्रु होता है।

उदाहरणार्थ, पीछे दी हुई वर्ष कुण्डली को देखें तो सूर्य के साथ में बैठने से शनि उसका शत्रु, सूर्य से ८ वें भाव में बैठने से गुरु सम, मंगल नवम भाव में बैठने से मित्र, चन्द्र ११ वें भाव में बैठने से मित्र तथा बुध-शुक्र १२ वें भाव में बैठने से सम होंगे। इसी प्रकार चन्द्र, मंगल आदि ग्रहों के भी शत्रु, सम, मित्र की जानकारी कर लेनी चाहिए।

दृष्टि

ताजिक सिद्धान्त में ग्रहों की दृष्टि भी अलग प्रकार से आँकी जाती हैं।

१. प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से ५ वीं व ९ वीं दृष्टि से देखता है। यह 'प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि' कहलाती है। यह ४५ कलात्मक दृष्टि होती है। यह दृष्टि सभी मनोरथों को सिद्ध करने वाली, श्रेष्ठ एवं लाभ-दायक दृष्टि कहलाती है।

२. प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से तीसरी तथा ग्यारहवीं दृष्टि से भी देखता है, पर यह दृष्टि 'गुप्त स्नेह दृष्टि' कहलाती है। यह तीसरी

राशि पर ४० कला तथा ग्यारहवीं राशि पर १० कलात्मक दृष्टि होती है। यह दृष्टि कार्य सिद्ध करने वाली शुभ एवं श्रेष्ठ होती है।

३. प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से चौथी तथा दसवीं दृष्टि से भी देखता है। यह 'गुप्त शत्रु दृष्टि' कहलाती है तथा यह १५ कलात्मक दृष्टि होती है। यह दृष्टि कार्य का नाश करने वाली एवं पश्चात्ताप की अग्नि में जलाने वाली होती है।

४. प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से १ तथा ७ वीं दृष्टि से भी देखता है अर्थात् अपने साथ बैठने वाले ग्रह को तथा सातवें स्थान पर बैठने वाले ग्रह को भी देखता है। यह 'प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि' कहलाती है तथा ६० कलात्मक दृष्टि होती है। यह दृष्टि प्रबल रूप से कार्य नाश करने वाली तथा हानि पहुँचाने वाली होती है।

नीचे दृष्टि चक्र स्पष्ट किया जा रहा है।

॥ ग्रह दृष्टि चक्र ॥

राशि	कला	फल
१ (साथ में)	६०	हानिप्रद
२	×	×
३	४०	कार्य सिद्धि ✓
४	१५	कार्य नाश
५	४५	मनोरथ सिद्धि
६	×	×
७	६०	हानिप्रद
८	×	×
९	४५	मनोरथ सिद्धि ✓
१०	१५	कार्य नाश
११	१०	कार्य सिद्धि ✓
१२	×	×

फल

ताजिक में ग्रह दृष्टि का प्रबल विधान है। उदाहरणार्थ वर्ष कुण्डली में भाग्येश-लाभेश परस्पर शुभ दृष्टि से युक्त हों तो उस वर्ष

भाग्य से प्रबल लाभ होगा, पर यदि भाग्येश-लाभेश की परस्पर शत्रु दृष्टि हो तो भाग्य की अवनति एवं अर्थ क्षय होगा।

इसी प्रकार अन्य भावाधिपतियों का पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध देखकर ही फलकथन करना चाहिए।

त्रिपताका

वर्ष कुण्डली में त्रिपताका का अध्ययन परमावश्यक है। त्रिपताका का चक्र निम्नरूपेण बनाया जाता है।

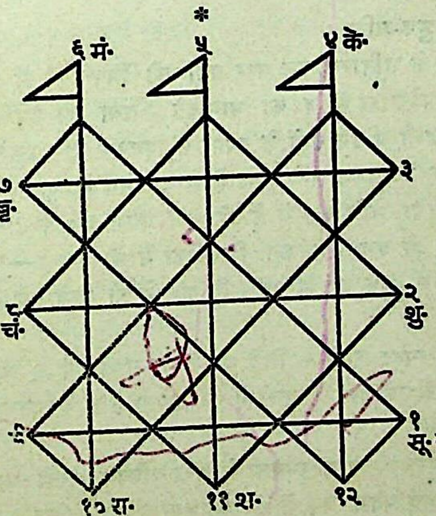

वर्ष कुण्डली में जो लग्न राशि होती है वह तारे के चिन्ह की जगह स्थापित की जाती है और इसके वाद सभी राशियों के अंक लिखे जाते हैं। पीछे उदाहरण में दी हुई वर्ष कुण्डली का लग्न सिंह है, अतः तारे के स्थान पर सिंह यानि पाँचवी राशि होने से ५ का अंक लिखा और उसके वाद क्रमशः ६, ७, ८ आदि अंक लिखे।

ग्रह स्थापन

सूर्य वर्ष प्रवेश संख्या में ४ का भाग दो, जो शेष वचे, जन्म कुण्डली में जिस स्थान पर सूर्य हो उससे आगे गिनकर रखना चाहिए।

उदाहरणार्थ जन्म कुण्डली में मेष राशि पर सूर्य है तथा ३७ वें वर्ष की वर्ष कुण्डली वनाई है अर्थात् ३७ वाँ वर्ष प्रवेश है, अतः ३७ में ४ का भाग दिया तो लब्धि ६ तथा शेष १ रहा, अतः मेष राशि (क्योंकि जन्म कुण्डली में सूर्य मेष यानि पहली राशि में है) में से १ गिनने पर मेष ही आया, अतः सूर्य इस त्रिपताका में १ की संख्या पर रखा गया।

बुध-गुरु-शुक्र-शनि

सूर्य के अतिरिक्त इन चार ग्रहों को त्रिपताका में निकालने के लिये भी प्रवेशाब्द में ४ का भाग देते हैं तथा जो शेष वचते हैं उन्हें जन्म कुण्डली में इन ग्रहों के स्थान से गिनकर आगे रखते हैं।

चूंकि उदाहरण जन्म कुण्डली में वुध मेष में, गुरु तुला में, शुक्र वृष में तथा शनि कुंभ में है और वर्ष प्रवेश ३७ में ४ का भाग देने से शेष १ ही वचता है, अतः त्रिपताका में भी ये ग्रह—वुध मेष में, गुरु तुला में, शुक्र वृष में एवं शनि कुंभ में ही लिखे गये।

चन्द्र

चन्द्र स्पष्ट करने के लिये वर्ष प्रवेश संख्या में ९ का भाग दें, जो शेष वचे उसे जन्म कुण्डली में चन्द्र स्थान से आगे गिनकर त्रिपताका में स्थित करें।

उदाहरणार्थ जन्म कुण्डली में चन्द्र वृश्चिक यानी आठवीं राशि का है। वर्ष प्रवेश ३७ में ९ का भाग दिया। शेष १ बचा, अतः

त्रिपताका में चन्द्र वृश्चिक राशि में ही लिखा गया।

मंगल

वर्ष प्रवेश संख्या में ६ का भाग देकर जो शेष बचे उसे जन्म कुण्डली से आगे गिनकर रखें। जन्म कुण्डली में मंगल कन्या राशि का है। वर्ष प्रवेश संख्या ३७ में ६ का भाग देने से शेष १ बचा, इससे त्रिपताका में मंगल कन्या राशि में ही लिखा गया।

राहु

वर्ष प्रवेश संख्या में ६ का भाग देकर जो शेष बचे उसे जन्म कुण्डली में पीछे की तरफ गिनकर रखें। चूँकि राहु हमेशा उल्टा चलता है, अतः राहु की गिनती करते समय पाँच, चार, तीन इस प्रकार उल्टा गिनना चाहिए। चूँकि जन्म कुण्डली में राहु मकर राशि में है। वर्ष प्रवेश ३७ में ६ का भाग देने से शेष १ बचा, अतः राहु मकर राशि में ही लिखा गया।

केतु

त्रिपताका में राहु जहाँ स्थित हो उससे आगे सातवें स्थान पर केतु को स्थित करना चाहिए।

त्रिपताका चक्र से शुभाशुभत्व

त्रिपताका चक्र से ग्रहों के वेध का ज्ञान होता है।

त्रिपताका में १२ कोण हैं, जिनके आगे राशि अंक लिखे हुए हैं। एक कोण पर जो ग्रह स्थित हो उस रेखा के दूसरे सिरे पर जो ग्रह हो, उन दोनों ग्रहों का परस्पर वेध कहलाता है।

इसमें भी चन्द्र को सर्वाधिक प्रधानता दी गई है अर्थात् यह देखा जाता है कि चन्द्र का किस ग्रह से वेध है।

त्रिपताका चक्र में चन्द्र का

१. सूर्य से वेध होने पर सूर्य की मुद्दा दशा में रक्त सम्बन्धी बीमारी, ज्वर, पित्तादि रोग होता है। जातक का मन अस्थिर एवं परेशानी पूर्ण रहता है तथा वह आर्थिक अपव्यय से कष्ट पाता है।

२. मंगल से वेध होने पर रक्त विकार रहता है, मन में उद्विग्नता

बनी रहती है तथा शत्रुभय होने से चित्त में खिन्नता रहती है।

३. बुध से वेध होने पर कौटुम्बिक कलह रहता है। भाइयों से वाद-विवाद व बँटवारा होता हैं। व्यापार में वृद्धि होती है तथा शत्रु के कारण हानि उठानी पड़ती हैं।

४. गुरु से वेध होने पर घर में मांगलिक कृत्य सम्पन्न होते हैं। तीर्थ यात्रा, मुकदमे में जीत, आकस्मिक धन-प्राप्ति एवं शुभ कार्यों में व्यय होता है।

५. शुक्र से वेध होने पर परीक्षा में सफलता, इन्टरव्यू में सफलता, विद्या प्राप्ति, धन लाभ, शत्रु-विजय, वायु-विकार, जल में डूबकर मरने की आशंका, वासना की प्रबलता एवं पर स्त्री गमन आदि होता है।

६. शनि से वेध होने पर निम्न स्तर के लोगों से परिचय, नीच की संगति, वायु-विकार, नज़ला आदि रोग होते हैं तथा परिचित व्यक्ति से विश्वासघात होने के कारण अर्थ क्षय होता है।

७. राहु से वेध होने पर चित्त में मलिनता, दूषित विचारों का उदय, कठिनाइयाँ, असफलताएँ एवं विविध रोगों से ग्रस्त होना पड़ता है।

८. केतु से वेध होने पर दुःख, चिन्ता, मलिनता, कीर्ति क्षय, पेट-दर्द, मन्दाग्नि, अपच एवं स्वास्थ्य में बिगाड़ उत्पन्न होता है।

९. हर्ष बल से देखने पर यदि ग्रह निर्बल हो और उस ग्रह से चन्द्रमा का वेध हो तो उस ग्रह की मुद्दा दशा में कष्ट, बाधा एवं पीड़ा रहती है, लेकिन यदि हर्ष बल में ग्रह बलवान हो और उसका चन्द्रमा से बेध हो तो वह सुखकर होता है।

१०. यदि चन्द्रमा कई पाप ग्रहों से बेध करे तो वह वर्ष दुःखमय एवं कष्टदायक ही होगा।

११. इसी प्रकार भाग्येश-राज्येश या भाग्येश-लाभेश या लाभेश-आयेश का वेध सुखकर होगा तथा भाग्येश-अष्टमेश या आयेश-कष्टेश का वेध हानिकारक होगा।

इसी प्रकार पारस्परिक ग्रहों का वेध देखकर फलाफल स्पष्ट करना

चाहिए।

ऊपर जो त्रिपताका उदाहरण दिया गया है, उसमें चन्द्रमा का वेध शुक्र तथा शनि से है। मंगल का सूर्य व बुध से वेध है। शनि से शुक्र का वेध है। बृहस्पति का मंगल से वेध है। इसी प्रकार त्रिपताका चक्र से वेध-ज्ञान करना चाहिए।

पंचवर्गी बल

वर्ष कुण्डली मे जिन पंचवर्गों का गणित करना चाहिए वे ये हैं :

१. गृह बल
२. उच्च बल
३. हद्दा बल
४. द्रेष्काण बल
५. नवमांश बल

आगे के पृष्ठों में प्रत्येक बल को अलग-अलग रूप में स्पष्ट किया जा रहा है।

१. गृह बल

गृह बल को जानने के लिये प्रत्येक ग्रह के मित्र, सम व शत्रु का ज्ञान होना आवश्यक है, पर यह मैत्री जातक मत से भिन्न होती है। इसमें प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से ३, ५, ९ तथा ११ वें स्थान में रहने वाले ग्रह का मित्र होता है, २, ६, ८ तथा बारहवें स्थान में रहने वाले ग्रह से समभाव रखता है तथा १, ४, ७ तथा १० वें स्थान पर रहने

वाले ग्रह का शत्रु होता है।

इसे निम्न रूपेण स्पष्ट किया जा सकता है।

मित्र	सम	शत्रु
३	२	१
५	६	४
९	८	७
११	१२	१०

ग्रह की स्वराशि निम्न रूपेण होती है।

सूर्य	सिंह
चन्द्र	कर्क
मंगल	मेष, वृश्चिक
बुध	मिथुन, कन्या
गुरु	धनु, मीन
शुक्र	वृष, तुला,
शनि	मकर, कुंभ,

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह अपनी ही राशि में हो उसको ३० विश्वात्मक बल, मित्र राशि में होने पर २२।३० विश्वात्मक बल, सम राशि में होने पर १५।० विश्वात्मक बल तथा शत्रु राशि में होने पर ७।३० (अर्थात साढ़े सात) विश्वात्मक बल प्राप्त होता है।

उदाहरणार्थ, पीछे के पृष्ठों में दी गई वर्ष कुण्डली का अध्ययन करें तो सूर्य मंगल की राशि (मेष) में है और सूर्य से नवम भाव में होने के कारण मंगल उसका मित्र है अर्थात् मित्र के घर में स्थित होने के कारण उसे २२।३० (साढ़े बाईस) विश्वात्मक बल प्राप्त हुआ। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रहों का गृह बल ज्ञात करना चाहिए।

२. उच्च बल

उच्च बल साधन के लिये ग्रहों की उच्च राशि अंश तथा नीच राशि अंश ज्ञात करने जरूरी हैं।

ग्रह	उच्च राशि	अंश	नीच राशि	अंश
सूर्य	मेष	१०	तुला	१०
चन्द्र	वृष	३	वृश्चिक	३
मंगल	मकर	२८	कर्क	२८
बुध	कन्या	१५	मीन	१५
गुरु	कर्क	५	मकर	५
शुक्र	मीन	२७	कन्या	२७
शनि	तुला	२०	मेष	२०

जिस ग्रह का उच्च बल ज्ञात करना हो उस ग्रह में से उसकी नीच राशि व अंश घटित कर देना चाहिए। यदि शेप ६ राशि से अधिक हो तो उसे पुनः १२ राशि में से घटाना चाहिए। ६ राशि से कम हो तो घटाने की जरूरत नहीं। जो घटाने से शेष हों, उनके अंश बना कर ९ का भाग देने से उस ग्रह का उच्च बल स्पष्ट होता है।

उदाहरण

गत पृष्ठों में दी गई वर्ष कुण्डली में सूर्य ०।७।२६।४७ है। सूर्य के नीच राशि अंश ६।१० हैं। उन्हें घटाया, यदि राशि में से राशि नहीं घटती हो तो ऊपर की राशि में १२ जोड़ कर घटा देने चाहिए—

राशि ।	अंश ।	कला ।	विकला	
०।	७।	२६।	४७	(राशि में १२ जोड़कर)
६।	०।	५०।	०	घटाये
५।	२७।	२६।	४७	

चूंकि यह राशि ६ से कम है, अतः इसे पुनः १२ राशि में से घटाने की जरूरत नहीं। अब इस ५।२७।२६।४७ के अंश बनाये तो स्पष्ट १७७।२६।४७ अंशों में ९ का भाग दिया तो लब्धि मिली १९।४२।५८।३३। यह सूर्य का उच्च बल स्पष्ट हुआ।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी उच्च बल ज्ञात करना चाहिए।

३. हद्दा बल

वर्ष कुण्डली में ग्रह स्पष्ट करने के बाद हद्दा बल भी देख लेना

।। श्री हद्दा चक्र ।।

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि
	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	
प्रथम	६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२	अंश तक
हद्दा	गुरु	शुक्र	बुध	मंगल	गुरु	बुध	शनि	मंगल	गुरु	बुध	शुक्र	शुक्र	स्वामी
द्वितीय	१२	१४	१२	१३	११	१७	१४	११	१७	१४	१३	१६	अंश तक
हद्दा	शुक्र	बुध	शुक्र	शुक्र	शुक्र	शुक्र	बुध	शुक्र	शुक्र	गुरु	बुध	गुरु	स्वामी
तृतीय	२०	२२	१७	१९	१८	२१	२१	१९	२१	२२	२०	१९	अंश तक
हद्दा	बुध	गुरु	गुरु	बुध	शनि	गुरु	गुरु	बुध	बुध	शुक्र	गुरु	बुध	स्वामी
चतुर्थ	२५	२७	२४	२६	२४	२८	२८	२४	२६	२६	२५	२८	अंश तक
हद्दा	मंगल	शनि	मंगल	गुरु	बुध	मंगल	शुक्र	गुरु	मंगल	शनि	मंगल	मंगल	स्वामी
पंचम	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	अंश तक
हद्दा	शनि	मंगल	शनि	शनि	मंगल	शनि	मंगल	शनि	शनि	मंगल	शनि	शनि	स्वामी

चाहिए। इसमें प्रत्येक राशि के ५ भाग कर दिये गये हैं, पर वे सभी भाग समान नहीं हैं, जैसे मेष राशि के ३० अंश होते हैं, पर इसके पाँचों भाग ६-६ अंशों के नहीं हैं, अपितु इसके भाग ६,६,८,५,५ इस प्रकार ये पाँचों भाग मिलकर अंश यानी एक राशि बनती है।

इस प्रत्येक भाग का स्वामी भी अलग-अलग है। ऊपर जो मेष राशि के पाँच भाग किये हैं, उसके पहले भाग का स्वामी गुरु, दूसरे भाग का शुक्र, तीसरे भाग का बुध, चौथे भाग का मंगल तथा पाँचवें भाग का स्वामी शनि हैं।

पृष्ठ ६२ पर जो हद्दा चक्र दिया जा रहा है, इससे यह स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि मेष राशि के प्रथम ६ अंशों तक पहली हद्दा, जिसका स्वामी गुरु, फिर दूसरी हद्दा ६ से १२ अंशों तक जिसका स्वामी शुक्र, फिर तीसरी हद्दा १२ से २० अंशों तक जिसका स्वामी बुध, फिर २० से २५ अंशों तक चौथी हद्दा जिसका स्वामी मंगल, एवं २५ से ३० अंशों तक पाँचवीं हद्दा है।

उदाहरणार्थ, पीछे जो वर्ष कुण्डली स्पष्ट की गई है, उसमें सूर्य स्पष्ट ०।७।२६।४७ है अर्थात् मेष राशि के ७ अंशों में सूर्य है। हद्दा चक्र में मेष राशि में देखने से ज्ञात हुआ कि सूर्य दूसरी हद्दा में है जिसका स्वामी शुक्र है।

वर्ष कुण्डली में सूर्य से शुक्र बारहवें हैं, अतः सम है, (यानी न शत्रु है, न मित्र) अतः सूर्य शुक्र की हद्दा में है जो कि सम है।

यदि ग्रह अपनी स्वयं की हद्दा में हो तो उसे १५ विश्वात्मक बल मिलता है, मित्र की हद्दा में हो तो ११¼ विश्वात्मक बल, सम ग्रह की हद्दा में हो तो ७½ विश्वात्मक बल एवं शत्रु की हद्दा में हो तो ३¾ विश्वात्मक बल मिलता है। उपरोक्त उदाहरण में सूर्य सम ग्रह की हद्दा में है, अतः उसे ७।३० यानी साढ़े सात विश्वात्मक हद्दा बल मिला।

इसी प्रकार अन्य सभी ग्रहों का हद्दा बल स्पष्ट कर देना चाहिए।

।। श्री द्रेष्काण चक्रम् ।।

राशि	मेष ०	वृष १	मिथुन २	कर्क ३	सिंह ४	कन्या ५	तुला ६	वृश्चिक ७	धनु ८	मकर ९	कुंभ १०	मीन ११
प्रथम द्रेष्काण १—१० अंशों तक	मं	बु	बृ	शु	श	मू	चं	मं	गु	बृ	गु	श
द्वितीय द्रेष्काण ११ से २० अंशों तक	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
तृतीय द्रेष्काण २१ सें ३० अंशों तक	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं

४. द्रेष्काण बल

जन्म के षड्वर्गों में जो द्रेष्काण होता है, उससे ताजिक का द्रेष्काण सर्वथा भिन्न होता है। पृष्ठ ६४ पर द्रेष्काण चक्र दिया जा रहा है। प्रत्येक राशि में तीनद्रेष्काण होते हैं। प्रथम द्रेष्काण १ से १० अंश तक, दूसरा द्रेष्काण २० अंशों तक तथा तीसरा द्रेष्काण २० से ३० अंशों तक होता है। मेष राशि के पहले द्रेष्काण का स्वामी मंगल, दूसरे का सूर्य तथा तीसरे द्रेष्काण का स्वामी शुक्र है।

पूर्व उदाहरण में सूर्य मेष राशि के ७ अंशों में है, अतः सूर्य पहले द्रेष्काण में है, जिसका स्वामी मंगल है। वर्ष कुण्डली में मंगल, सूर्य से नवम भाव पर है, अतः मित्र है और मित्र राशि में स्थित होने के कारण उसे ७।३० यानी साढ़े सात विश्वात्मक बल मिला।

यदि ग्रह अपने ही द्रेष्काण में हो तो १० विश्वात्मक बल, मित्र के द्रेष्काण में हो तो ७½ विश्वात्मक बल, सम के द्रेष्काण में हो तो ५ विश्वात्मक बल एवं शत्रु के द्रेष्काण में हो तो २½ विश्वात्मक बल मिलता है।

५. नवमांश बल

नवमांश या नवांश बल के लिये 'नवांश बोधक चक्र' का अध्ययन आवश्यक है। उदाहरण में सूर्य०।७।२६।४७ है, नवमांश चक्र में मेष राशि की पंक्ति में १० अंशों तक वाली पंक्ति में देखा तो ज्ञात हुआ कि सूर्य ३ यानी मिथुन के नवांश में है जिसका स्वामी बुध है, अतः सूर्य बुध के नवांश में माना जायेगा।

वर्ष कुण्डली में सूर्य से बुध १२ वें भाव में स्थित होने के कारण मित्र है और मित्र के नवांश में होने के कारण उसे ३¾ यानि ३।४५ विश्वात्मक बल मिला।

यदि ग्रह अपने ही नवांश में हो तो ५ विश्वात्मक बल, मित्र के नवांश में हो तो ३¾ विश्वात्मक बल, सम के नवांश में हो तो २½ विश्वात्मक बल तथा शत्रु के नवांश में हो तो १¼ विश्वात्मक बल मिलता है।

॥ श्री नवांश बोधक चक्रम् ॥

राशि अंश—कला	मेष ०	वृष १	मिथुन २	कर्क ३	सिंह ४	कन्या ५	तुला ६	वृश्चिक ७	धनु ८	मकर ९	कुंभ १०	मीन ११
३—२०	१ मं	१० श	७ चं	४ शु	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं
६—४०	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू
१०—००	३ बु	१२ गु	९ गु	६ बु	३ बु	१२ गु	९ गु	६ बु	३ बु	१२ गु	९ गु	६ बु
१३—२०	४ चं	९ मं	१० श	७ शु	२ चं	१ मं	१० श	७ शु	२ चं	१ मं	१० श	७ शु
१६—४०	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं
२०—००	६ बु	३ बु	१२ गु	९ गु	६ बु	३ बु	१२ गु	९ गु	६ बु	३ बु	१२ गु	९ गु
२३—२०	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श
२६—४०	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श
[illegible]	९ [illegible]	६ [illegible]	३ [illegible]	१२ [illegible]	९ [illegible]	६ [illegible]	३ [illegible]	१२ [illegible]	९ [illegible]	६ [illegible]	३ [illegible]	१२ [illegible]

इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी नवांश बल ज्ञात कर लेना चाहिए।

विंशोपक बल

पीछे के पृष्ठों में प्रत्येक ग्रह का ग्रह बल, उच्च बल, हद्दा बल, द्रेष्टकाण बल तथा नवमांश बल स्पष्ट करना समझाया गया। प्रत्येक ग्रह के ये पाँचों बल जोड़कर ४ का भाग देने से जो लब्धि होगी, वह विंशोपक बल कहलायेगी।

पीछे उदाहरण में सूर्य का प्रत्येक बल इस प्रकार किया गया है :—

ग्रह बल—	२२।३०
उच्च बल—	१६।४२
हद्दा बल—	७।३०
द्रेष्काण बल—	७।३०
नवमांश बल—	३।४५
योग—	५६।५७

अतः योग ५६।५७ में ४ का भाग दिया तो लब्धि १४।५६ मिली अर्थात् सूर्य का विंशोपक बल १४।५६ है।

बली ग्रह का निर्णय

वर्ष में जिस ग्रह का विंशोपक बल ११ से २० तक होता है, वह पूर्णबली, ६ से १० तक हो तो मध्यबली एवं १ से ५ तक हो तो अल्पबली या निर्बल होता है। यदि विंशोपक बल २० से अधिक हो तो वह ग्रह पराक्रमी होता है।

पंचाधिकारी

निम्न पाँच ग्रह पंचाधिकारी कहलाते हैं।

१. जन्म लग्नपति

जन्मकुण्डली में जो ग्रह लग्न राशि का स्वामी है, वह जन्म लग्नपति कहलाता है।

२. वर्ष लग्नपति

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह लग्न राशि का स्वामी हो, वह वर्ष लग्नपति कहलाता है।

३. मुंथाधिप

वर्ष कुण्डली में मुंथा जिस राशि में हो, उस राशि का स्वामी मुंथाधिप कहलाता है।

४. राशिपति

यदि दिन में वर्ष प्रवेश हुआ हो तो सूर्य जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी एवं यदि रात्रि में वर्ष प्रवेश हुआ हो तो चन्द्र जिस राशि में हो, उस राशि का स्वामी राशिपति कहलाता है।

५. त्रिराशिपति

नीचे चक्र में देखते हुए दिन में वर्ष प्रवेश हुआ तो दिवात्रिराशिपति एवं रात्रि को वर्ष प्रवेश हुआ हो तो रात्रित्रिराशिपति स्वीकार करना चाहिए।

।। त्रिराशिपति चक्र ।।

राशि	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
दिवात्रिराशिपति	सू	शु	श	शु	गु	चं	बु	मं	श	मं	गु	चं
रात्रित्रिराशिपपित	गु	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	गु	चं

पीछे जिस वर्ष कुण्डली का उदाहरण दिया गया है, उसके अनुसार पंचाधिकारी निम्नरूपेण होंगे ।

१. जन्म लग्नपति—बुध
२. वर्ष लग्नपति—सूर्य
३. मुंथाधिप— बुध
५. राशिपति— शनि (रात्रि में वर्ष प्रवेश होने के कारण)
५. त्रिराशिपति— सूर्य

वर्षेश का निर्णय

वर्षेश या वर्षराट् का निर्णय उपर्युक्त पंचाधिकारियों में से ही किया जाता है।

१ जो ग्रह पंचाधिकारियों में सबसे अधिक बलवान हो (पंचवर्गी बल निकाल कर देख लेना चाहिए) तथा लग्न को देखता हो, वही ग्रह वर्षेश या वर्षराट् कहलाता है।

२. यदि पंचाधिकारियों में एक से अधिक ग्रह बलवान हों तो उनमें से जो ग्रह लग्न को देखता हो वह वर्षेश होगा।

३. यदि दो या अधिक ग्रह बलवान हों तथा दोनों ही लग्न को देखते हों तो जो ग्रह एवं लग्नेश दोनों को देखता हो वह वर्षेश होगा।

४. वर्षेश होने के लिये उस ग्रह को प्राथमिकता देनी चाहिए जो लग्न एवं लग्नेश पर शुभ दृष्टि रखता हो ।

५. यदि वर्षेश बलवान हो, शुभ हो, पर यदि उसकी दृष्टि लग्न पर न हो तो उसे वर्षेश नहीं माना जा सकता।

६. यदि पंचाधिकारियों की लग्न पर समान दृष्टि हो तथा बल में भी वे बराबर हों अथवा पाँचों ही ग्रह निर्बल हों तो मुंथेश या मुंथा-

धिप ही वर्षेश होता है।

७. पंचाधिकारियों में से यदि पाँचों ही ग्रहों की लग्न पर दृष्टि न हो तो सबसे बली को वर्षेश माना जा सकता है, पर कम कला युक्त दृष्टि तो होनी ही चाहिए।

कुछ विद्वानों के अनुसार यदि पंचाधिकारियों की दृष्टि एवं बल समान हो तो पंचाधिकारियों में से राशिपति को वर्षेश मान लेना चाहिए।

कुछ विद्वानों के अनुसार तब चन्द्र को वर्षेश न मानकर, वह जिस ग्रह के साथ 'इत्थशाल' करता हो उस ग्रह को वर्षेश मान लेना चाहिए, लेकिन मेरी राय में चन्द्रमा जलीय एवं कोमल प्रकृति प्रधान होने के कारण राजा के उत्तरदायित्व का निर्वाह भली प्रकार नहीं कर पाता, अतः उसे वर्षेश बनाना न्यायोचित नहीं।

दीप्तांश

सूर्यादि ग्रह अपने से नियत अंश के भीतर रहने वाले ग्रह को जो तेज प्रदान करते हैं, उसी को दीप्तांश कहते हैं। जैसे सूर्य अपने अधिष्ठित अंश से आगे १५ अंश तक के ग्रह को अपना तेज देता है।

उदाहरणार्थ, सूर्य मेष के २७ अंशों पर अवस्थित हो और शुक्र वृष के ७ अंशों पर अवस्थित हो तो यद्यपि ये दोनों ही ग्रह अलग-अलग राशियों में हैं, परन्तु सूर्य से आगे १० अंशों पर ही शुक्र होने के कारण शुक्र को भी सूर्य का तेज मिलेगा।

नीचे प्रत्येक ग्रह के दीप्तांश स्पष्ट किये जा रहे हैं।

सूर्य—१५ अंश
चन्द्र—१२ अंश
मंगल—८ अंश
बुध—७ अंश
गुरु—९ अंश
शुक्र—७ अंश
शनि—९ अंश

दीप्तांश देखने का प्रकार

जिन दो ग्रहों में पारस्परिक दृष्टि हो, उन दोनों ग्रहों के दीप्तांश जोड़िये तथा उन्हें आधा कर दीजिये। यदि वे दोनों ग्रह दीप्तांश में हैं तो उनकी दृष्टि पक्की एवं श्रेष्ठ रहेगी।

उदारहणार्थ, पीछे दी गई वर्ष कुण्डली में सूर्य मेष राशि के ७ अंशों में तथा गुरु वृश्चिक राशि के १६ अंशों में है। राशि को छोड़ कर केवल अंशों पर ध्यान देने से ज्ञात हुआ कि गुरु, सूर्य से ९ अंश आगे है। सूर्य के दीप्तांश १५ एवं गुरु के दीप्तांश ९ का योग २४ हुआ, जिसके आधे १२ हुए, अतः यदि इन दोनों ग्रहों में १२ अंशों तक का भी अन्तर हो (इसमें राशि पर ध्यान नहीं दिया जाता, केवल अंशों को ही देखा जाता है) तो ये दोनों ग्रह दीप्तांश में होंगे। चूंकि गुरु केवल ९ ही अंश आगे है अतः वर्ष कुण्डली में सूर्य एवं गुरु दोनों ही दीप्तांश में हैं।

अब आगे के पृष्ठों में वर्षेश पर कुछ विस्तार से विवेचन किया जा रहा है।

वर्षेश फल

पीछे यह स्पष्ट किया जा चुका है कि पंचाधिकारियों में से वर्षेश का निर्णय किस प्रकार किया जा सकता है।

नीचे जो पूर्ण बली, मध्यवली या निर्बल अथवा हीनबली शब्द का प्रयोग है, उसका अर्थ विशोपकबल से है, अर्थात् गृह, द्रेष्काण, नवांशादि से कौन-सा ग्रह किस प्रकार का बल रखता है।

सूर्य

सूर्य यदि पूर्ण वली होकर वर्षेश हो तो राज्य से लाभ, प्रोमोशन, तरक्की, आर्थिक लाभ, रुका हुआ पैसा प्राप्त होना, धार्मिक कार्यों में व्यय, मित्रों में वृद्धि, ऊँचे स्तर के लोगों से परिचय, ख्याति, कीर्ति, यश एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

यदि सूर्य मध्यबली होकर वर्षेश हो तो पारस्परिक कौटुम्बिक-विवाद, शरीर में अस्वस्थता, स्थानान्तरण, सामान्य धन-लाभ, सन्तान

प्राप्ति एवं उच्चाधिकारियों से अनबन होती हैं।

यदि सूर्य हीनबली होकर वर्षेश हो तो मनुष्य को उस वर्ष में कई प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। राज-दण्ड का भागी होना पड़ता है तथा मानहानि, मुकदमे में असफलता, विश्वासघात से धनहानि एवं घर में कलह रहती है।

चन्द्र

यद्यपि हमने चन्द्रमा को वर्षेश नहीं माना है, तथापि कुछ आचार्यों के मत से चन्द्रमा भी वर्षेश हो सकता है।

चन्द्र यदि पूर्ण बली होकर वर्षेश हो तो व्यापार में असाधारण सफलता मिलती है तथा उस वर्ष जातक को नौकरी में लाभ होता है। सफेद वस्तुओं के व्यापार से उसे श्रेष्ठ लाभ होता है एवं उस वर्ष उसके हाथों से कुछ ऐसा कार्य होता है, जिससे समाज में उसका सम्मान एवं ख्याति बढ़ती है।

घर में विलासिता की वस्तुओं का क्रय होता है। स्त्री-पुत्रादि से पूर्ण सुख मिलता है, विवाह होता है तथा जातक नाना प्रकार के वैभव-भोग का आनन्द उठाता है।

यदि चन्द्रमा मध्यबली होकर वर्षेश हो तो उच्चाधिकारियों से मतभेद बढ़ते हैं, जिससे नौकरी में हानि उठानी पड़ती है। जातक की उन्नति या प्रोमोशन में कुछ न कुछ बाधा आती ही रहती है। स्त्री बच्चों की ओर से वह उदासीन रहता है एवं शारीरिक अस्वस्थता से निर्बलता का सामना करना पड़ता है।

यदि चन्द्रमा क्षीणबली होकर वर्षेश हो तो जातक को शीत, ज्वर, कफ, खाँसी आदि रोगों से ग्रस्त होना पड़ता है। पड़ौसियों से लड़ाई होती है। वीर्य दोष, रक्त-दूषितता आदि से कष्ट उठाना पड़ता है तथा हर समय चित्त में खिन्नता बनी रहती है।

मंगल

यदि मंगल पूर्णबली होकर वर्षेश हो तो उस वर्ष उच्च राज्याधिकारियों से उसे लाभ हो। मुकदमे में निश्चित सफलता मिले और

यदि वह व्यक्ति पुलिस या मिलिटरी में सेवारत हो तो उसे प्रोमोशन या तरक्की मिले। कीर्ति, सम्मान, नायकत्व, चुनावों में सफलता, धन-लाभ, स्त्री-लाभ तथा नाना प्रकार के सुख मिलते हैं।

यदि मंगल मध्यबली होकर वर्षेश हो तो उस वर्ष रुधिर-विकार रक्त-दोष, रक्त-न्यूनता आदि रोगों का सामना करना पड़ता है। यद्यपि उसे नायकत्व मिल जाता है तथापि उसे कठोर संघर्षों का सामना करना पड़ता है।

यदि निर्बल मंगल वर्षेश हो तो मुकदमेबाज़ी हो सकती है। रोगी रहने के कारण उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। अपयश दुःख, अग्निभय, चौर्यभय एवं एक्सीडैण्ट का सामना करना पड़ता है।

बुध

यदि वलवान बुध वर्षेश हो तो जातक को अपार सुख मिलता है, व्यापार में असाधारण सफलता मिलती है, परीक्षा में पास होता है, तथा इन्टरव्यू वगैरह में पूर्ण सफलता उसके चरण चूमती है।

वैद्यक या डाक्टरी कार्य करने वालों को श्रेष्ठ लाभ, राज्य की ओर से विशेप सम्मान, सफलता एवं श्रेष्ठ पद प्राप्त होता है। पठन-पाठन, लेखन-कला, ग्रन्थ-रचना आदि से ख्याति मिलने के साथ-साथ धन-लाभ भी होता है।

यदि बुध मध्यबली होकर वर्षेश हो तो व्यापार से लाभ, मित्रों की संगति, गायन कलादि में रुचि, कॉमर्स एकाउन्टेन्सी, बैंकिंग, चार्टर्ड एकाउन्टेन्सी आदि परीक्षाओं में सफलता मिलती है।

यदि बुध हीनबली होकर वर्षेश हो तो जातक को निरन्तर असफलताओं का सामना करते रहना पड़ता है। इन्कमटैक्स का भी छापा पड़ता है, मान-सम्मान में भी क्षति पहुँचती है, त्वचा-सम्बन्धी रोग, खुजली आदि भी होती है। झूठे मुकदमे में भी उलझना पड़ता है, जिसके कारण अन्त में बदनामी होती है।

गुरु

यदि पूर्ण बली होकर गुरु वर्षराट् हो तो उस वर्ष बेकार व्यक्ति

की नौकरी लगती है, राज्य में तरक्की होती है, परीक्षा में सफलता मिलती है तथा मंत्र सिद्धि करने के कारण अथवा उत्तम ग्रन्थ रचना के कारण उसे पर्याप्त ख्याति एवं प्रसिद्धि प्राप्त होती है।

विवाहित व्यक्ति को पुत्र लाभ होता है, मुकदमे में न्याय मिलता है और जीवन प्रसन्न तथा आमोद-प्रमोदमय व्यतीत होता है।

यदि वर्षेश गुरु मध्यवली हो तो पारस्परिक सम्बन्धों में मतभेद उभरते हैं, स्वास्थ्य में पांडुता वढ़ती है, जिसके फलस्वरूप जातक दुर्वल हो जाता है।

यदि हीनवली गुरु वर्षेश हो तो इष्ट मित्रों तथा परिवार में कलह वढ़ती है। किसी वुजुर्ग सम्बन्धी का देहावसान होता है, धन-लाभ में वाधाएँ आती हैं तथा लोक निन्दा, कलह आदि से चित्त में मलिनता वढ़ती है।

शुक्र

यदि पूर्ण वली शुक्र वर्षेश हो तो जातक उस वर्ष विलासिता की सामग्री पर अत्यधिक व्यय करता है। साज-सजावट पर विशेष ध्यान देता है। घर में स्वर्णाभूषण वनते हैं। नया मकान या फार्म खरीदा जाता है। विजय लाभ एवं समाज में सम्मान मिलता है।

यदि शुक्र मध्यवली होकर वर्षेश हो तो उसे गुप्त रोगों का शिकार होना पड़ता है। व्यापार में अल्प लाभ होता है तथा धन-संचय के मार्ग में कई वाधाओं का सामना करना पड़ता है।

यदि शुक्र हीनवली होकर वर्षेश हो तो घर में कलह, शत्रुओं से पराजय, सम्वन्धियों से उग्रवाद-विवाद, पत्नी का त्याग, बुद्धि का ह्रास तथा विविध कष्टों का सामना करना पड़ता है।

शनि

शनि पूर्ण वली होकर वर्षेश हो तो जातक को उस वर्ष मुकदमे में सफलता मिलती है। नीच, निम्न एवं म्लेच्छ लोगों से धन-लाभ होता है। लोहा, कोयला व पत्थर आदि के व्यापार में असाधारण सफलता मिलती है।

यदि शनि मध्यबली होकर वर्षेश हो तो वायु-विकार अथवा वायु-जन्य रोगों से पीड़ित होना पड़ता है। गले में रोग अथवा टांसिल्स आदि का आपरेशन होता है। कामुकता एवं वासना का भी प्राबल्य होता है।

यदि शनि हीनबली होकर वर्षेश हो तो विश्वासघात से धन-नाश, विविध रोगों से ग्रस्त, चेचक, हैजा आदि से संताप, शत्रु-पीड़ा, किसी प्रियजन की मृत्यु से दुःख एवं एक्सीडेण्ट होता है।

यदि वर्षेश कमज़ोर या दुःखदायी हो तो उसके द्वारा उत्पन्न अरिष्टों के शमन हेतु शास्त्रोक्त उपचार करना चाहिए।

सहम संस्कार

वर्ष कुण्डली बनाने के बाद भी यह जिज्ञासा तो स्वाभाविक है ही कि इस वर्ष शुभाशुभ कैसा रहेगा। इसकी सुगमता के लिये विद्वानों ने सहमों का आश्रय लिया। ताजिक नीलकंठी के अनुसार सहम निम्न-लिखित हैं:

१	पुण्य	२	गुरु
३	ज्ञान	४	यश
५	मित्र	६	माहात्म्य
७	आशा	८	समर्थता
९	भ्राता	१०	गौरव
११	राजा	१२	तात्

१३	माता	१४	सुत
१५	जीवित	१६	जल
१७	कर्म	१८	मांद्य
१९	काम	२०	कलह
२१	क्षमा	२२	शास्त्र
२३	बन्धु	२४	बन्धक
२५	मृत्यु	२६	परदेश
२७	धन	२८	दारा (परस्त्री)
२९	अन्य कर्म	३०	वाणिक
३१	कार्य सिद्धि	३२	विवाह
३३	प्रसूति	३४	संताप
३५	श्रद्धा	३६	प्रीति
३७	बल	३८	तनु
३९	जाड्य	४०	व्यापार
४१	पानीयम्	४२	शत्रु
४३	शौर्य	४४	उपाय
४५	दरिद्र	४६	गुरुता
४७	जल कर्म	४८	बन्धन
४९	दुहिता	५०	अश्व
५१	भार्या	५२	मोक्ष
५३	वसु	५४	पितृव्य
५५	क्लेश	५६	गमागम
५७	गज	५८	सन्मति
५९	घात	६०	कोष्ठ
६१	चतुष्पद्	६२	व्यसन
६३	कृषि	६४	दृष्टि
६५	आखेट	६६	मृत्यु
६७	अंग	६८	प्राप्ति

६९	निधि	७०	जाति
७१	ऋण	७२	बुद्धि
७३	आधान	७४	धैर्य
७५	सत्यक्		

ऊपर जो सहम दिये गये हैं, इसका तात्पर्य यह है कि पृच्छक की जिज्ञासा इतने कार्यों में हो सकती है।

सहम-संस्कार करते समय दिन में वर्ष प्रवेश है या रात्रि में वर्ष-प्रवेश है इसका ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि एक ही सहम दिन में वर्ष प्रवेश होने पर दूसरे प्रकार से स्पष्ट होता है तथा रात्रि में वर्ष प्रवेश होने पर दूसरे प्रकार से। आगे कुछ प्रमुख सहम संस्कार स्पष्ट कर रहा हूँ।

।। सहम-संस्कार ।।

क्रम संख्या	सहम	दिन में वर्ष प्रवेश हो तो	रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो
१	पुण्य	चं—सू+ल	सू—चं+ल
२	गुरु	सू—चं+ल	चं—सू+ल
३	यश	गुरु सहम—पुण्य सहम+ल	पुण्यसहम—गुरु सहम+ल
४	भ्राता	गु—श+ल	गु—श+ल
५	विवाह	शु—श+ल	शु—श+ल
६	कार्य सिद्धि	श—सू+सू पुण्य	श—चं+चं पुण्य
७	माता	चं—शु+ल	शु—चं+ल
८	पुत्र	गु—चं+ल	गु—चं+ल
९	विदेश	धर्म सहम—ध प+लग्न	धर्म सहम—ध प+लग्न
१०	संतान	गु—बु+ल	बु—गु+ल
११	व्यापार	मं—बु+ल	मं—बु+ल
१२	शत्रु	मं—श+ल	श—मं+ल
१३	बन्धन	पुण्य सहम—शनि+ल	श—पुण्य+ल
१४	गौरव	गु—चं+सू	गु—चं+सू

१५	तात	श—सू+ल	सू—श+ल
१६	धन	धन भाव–लग्नेश+लग्न	धनभाव—लग्नेश+लग्न
१७	अन्यस्त्री	शु—सू+ल	शु—सू+ल
१८	मृत्यु	अष्टम भाव—चं+श	अष्टमभाव–चं+श
१९	मित्र	गुरु सहम–पुण्यसहम+शु	पुण्यसहम–गुरुसहम+शु
२०	आशा	श—शु+ल	शु—श+ल
२१	राज्य (पिता)	श—सू+ल	सू—श+ल
२२	कर्म	मं–बु+ल	बु—मं+ल
२३	प्रसूति	बृ—बु+ल	बु—बृ+ल
२४	रोग	ल—चं+ल+१	ल—चं+ल+१
२५	यात्रा	नवमभाव—नवमेश+ल	नवमभाव—नवमेश+ल

उदाहरणार्थ पुण्य सहम स्पष्ट करना है तो उदाहरण वर्ष कुण्डली में ग्रह स्पष्ट करने पर ज्ञात हुआ कि सूर्य स्पष्ट ०।७।२६।४७, चन्द्र स्पष्ट १०।१४।८।५९ व लग्न स्पष्ट ४।२७।५२।१८ है। वर्ष प्रवेश रात्रि में है, अतः पुण्य सहम स्पष्ट करने के लिये सूर्य में से चन्द्र घटाकर उसमें लग्न जोड़ना है।

०।७।२६।४७ सूर्य स्पष्ट में से
१०।१४।८।४९ चन्द्र स्पष्ट घटाया
तो शेष रहे १।२३।१७।४८
इसमें ४।२७।५२।१८ लग्न स्पष्ट जोड़ा

तो पुण्य सहम ६-२१-१०-६ स्पष्ट अर्थात् तुला राशि के २१ अंश, १० कला, ६ विकला स्पष्ट हुआ।

अतः कुण्डली बना कर लग्न में तुला राशि लिख दें एवं अन्य सभी ग्रह, वर्ष कुण्डली के अनुसार लिख देने से पुण्य कुण्डली बन जायगी। इस कुण्डली पर से पुण्य कार्य हेतु फलाफल ज्ञात किया जा सकता है।

इसी प्रकार विद्या, विवाह, व्यापार, धन आदि सहमों का संस्कार कर विद्या कुण्डली, विवाह कुण्डली, व्यापार कुण्डली, धन कुण्डली आदि बना कर वर्ष में शुभाशुभ ज्ञात किया जा सकता है।

ऊपर जो सहम दिये हैं या नाम परिगणना की है, उनमें से कुछ सहमों के नाम प्राचीन होने के कारण बोधगम्य नहीं, अतः मैं उन्हें स्पष्ट कर रहा हूँ।

१. गुरु—शिक्षक, उपदेशक
२. ज्ञान—विद्या, विद्याध्ययन
३. जाड्य—अज्ञानता, आलस्य
४. वसु—शरीर, शारीरिक गठन
५. बल—सैन्य शक्ति
६. जल—शारीरिक कान्ति, ओज, तेजस्विता
७. गौरव—मान-प्रतिष्ठा, सम्मान
८. राज—राज्य कृपा, नौकरी
९. माहात्म्य—युक्ति चातुर्यता, तुरन्त निर्णय बुद्धि
१०. धृति—चतुराई
११. सामर्थ्य—शारीरिक बल
१२. आशा—इच्छा
१३. बन्धक—बन्धन, पराश्रयता
१४. गुरुता—विशेषाधिकार
१५. शौर्य—शत्रु से मुकाबला करने की शक्ति
१६. पानीयम्—वर्षा
१७. मांदि—रोग, कष्ट, शारीरिक ज्वर
१८. प्रसूति—सन्तानोत्पत्ति, प्रसव
१९. बन्धु—सगोत्रीय भाई-बन्धु, रिश्तेदार

सहम का फल कब मिलेगा ?

सहम सम्बन्धी शुभ फल या अशुभ फल कब मिलेगा या कितने दिनों से मिलेगा, इसके लिये निम्न विधि है।

सहम-स्पष्ट में से सहम-लग्नेश को घटा दें, फिर उसके अंश बना कर, उस स्थान के स्वोदय मान से गुणा कर ३०० का भाग दें, जो लब्धि आये, उतने ही दिनों में उस सहम का फल मिलेगा। यह दिन-

गणना वर्ष प्रवेश से करनी चाहिए ।

उदाहरणार्थ, हमने पीछे जो पुण्य सहम स्पष्ट किया वह ६।२१।१०।६ था अर्थात् पुण्य सहम व लग्न तुला आया, जिसका स्वामी शुक्र है । वर्ष कुण्डली में शुक्र-स्पष्ट ११।६।१४।३ है, अतः पुण्य सहम ६।२१।१०।६ में से पुण्य सहमेश ११।८।१४।३ घटाया—

६।२१।१०।६	पुण्य सहम में से
११। ८।१४।३	पुण्य सहमेश घटाया तो
७।१२।५६।३	लब्धि मिली ।

×३०

२१०

+१२

२२२ अंश । कला, विकला छोड़ दें ।

जोधपुर के व्यक्ति का वर्ष था और वर्ष आरम्भ २१-४-७१ को है । जोधपुर के अक्षांश २६—१८ हैं, अतः जोधपुर का स्वोदय मान तुला लग्न का ३३६—३० है ।

उपर्युक्त २२२ अंशों को स्वोदय मान ३३६½ से गुणा किया तो गुणनफल ७४७०३ स्पष्ट हुए, इसमें ३०० का भाग दिया तो लब्धि २४६ स्पष्ट हुई ।

अर्थात् वर्ष-प्रवेश से २४६ दिन बाद पुण्य सहम का शुभाशुभ मिलेगा । वर्ष प्रवेश २१-४-७१ है, इसमें २४६ दिन जोड़े तो ज्ञात हुआ कि पुण्य सहम का फल ३० दिसम्बर १९७१ को मिलेगा ।

सहम शुभाशुभ फल

ऊपर सहम कुण्डली बनाने की विधि स्पष्ट की जा चुकी है। सहम कुण्डली देखते समय निम्न तथ्य भी ध्यान में रखने चाहिएँ—

१. सहम लग्नेश की दृष्टि सहम पर है या नहीं ।

२. सहम और सहम लग्न पर किन-किन शुभ व पाप ग्रहों की दृष्टि है ।

३. सहम लग्न में कौन-कौन से पाप ग्रह बैठे हैं और कौन-कौन से

से शुभग्रह।

४. सहम लग्नेश पूर्णबली है, मध्यबली है या क्षीणबली है ?

५. सहमेश और सहम लग्न वर्ष से ६, ८, १२ वें तो नहीं हैं ?

६. सहम लग्नेश, अष्टमेश, षष्ठेश या व्ययेश के साथ तो नहीं है या इन ग्रहों की उस पर दृष्टि तो नहीं है ?

यह हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि यदि सहमेश और सहम लग्न बलवान और शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट होगा तो शुभफलद होगा और यदि वह पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त होंगे अथवा उन्होंने षष्ठेश, अष्टमेश या द्वादशेश से सम्पर्क किया होगा तो पापफलद होगा।

विपरीत फल

कुछ सहम ऐसे भी हैं, जो क्षीण होने पर ही शुभफलदायक होते हैं। उदाहरणार्थ, रोग सहम, मृत्यु सहम आदि बलवान होंगे तो रोग वृद्धि ही करेंगे और यदि निर्बल एवं क्षीण बली हुए तो रोग उत्पन्न करने में कम समर्थ होंगे, जो कि एक प्रकार से शुभफलदायक होगा।

अतः इस प्रकार के सहम यदि वर्ष में निर्बल एवं क्षीण ही हों तभी शुभफलदायक रहते हैं।

एक निराकरण

सहम विचार करते समय पहले जन्म कुण्डली का अध्ययन कर लेना चाहिए। उदाहरणार्थ, यदि जन्मकुण्डली में भाई होने का योग ही न हो तो फिर वर्ष में भ्रातृ सहम स्पष्ट करना व्यर्थ ही होगा। विद्वानों के अनुसार भी—

आदौ जन्मनि सर्वेषां
सहमानां बलाबलम्।
विमृश्य संभवो येषां
तानि वर्षे विचिन्त्यमेत्॥

अतः सहम विचार करते समय जन्मकुण्डली का सम्यक् अध्ययन आवश्यक रहेगा।

षोडश योग

ताजिक अथवा वर्षफल के अध्ययन में निम्नलिखित सोलह योगों का सर्वाधिक महत्त्व है और इनका अध्ययन सर्वोपरि एवं परमावश्यक है।

१. इक्कवाल योग

यदि वर्ष कुण्डली में सभी ग्रह १, २, ४, ५, ७, १० और ११ वें भावों में ही स्थित हों तो इक्कवाल योग होता है।

कुण्डली में जिस वर्ष इक्कवाल योग होता है वह भाग्योदयी वर्ष कहलाता है। उस वर्ष राज्य-सम्मान, ख्याति, अर्थ-लाभ एवं समस्त ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

२. इन्दुवार योग

यदि सभी ग्रह ३, ६, ९ तथा १२ वें भाव पर ही हों तो इन्दुवार योग होता है।

कुण्डली में जिस वर्ष इन्दुवार योग होता है, उस वर्ष राज्यच्युति, अपयश, धन-हानि एवं घोर दुःख भोगना पड़ता है।

३. इत्थशाल योग

कुछ लोग इसे मुत्थशिल योग भी कहते हैं।

परस्पर दो ग्रह ऐसे भावों में बैठे हों, जिससे वे एक-दूसरे को देखते हों। इन दोनों ग्रहों में से तेज गति वाला ग्रह कम अंशों में तथा मन्दगति वाला ग्रह उससे अधिक अंशों में हो, लेकिन इन दोनों ग्रहों

के अंशों में इतना कम अन्तर हो कि यह दोनों ग्रहों के दीप्तांशकों से कम हो, तब इन परस्पर दो ग्रहों का इत्थशाल या मुत्थशिल कहा जाता है।

इसमें ध्यान रखने की वात यह है कि चन्द्र, वुध, शुक्र, सूर्य, मंगल गुरु और शनि उत्तरोत्तर मंद गति ग्रह कहलाते हैं अर्थात् चन्द्र से बुध मंद गति है, बुध से शुक्र मंद गति है और इसी प्रकार आगे भी समझना चाहिए। उदाहरणार्थ, यदि वर्ष कुण्डली में मंगल ५।१७ हो तथा शुक्र २।१४ हो तो दोनों में दृष्टि तो होगी ही। चूंकि शुक्र तेज गति ग्रह है, पर मंदगति ग्रह मंगल से कम अंशों पर है और दोनों ग्रहों के अंशों में २ का ही अन्तर है।

चूंकि मंगल के दीप्तांश ८ और शुक्र के दीप्तांश ७ हैं, पर इन दोनों ग्रहों का अन्तर दीप्तांशों से कम है अतः इत्थशाल योग हुआ।

चूंकि मंगल भाग्येश एवं शुक्र धनेश है, अतः भाग्येश-धनेश का इत्थशाल होने से श्रेष्ठ धन लाभ होगा।

इस योग के तीन भेद हैं—

१. वर्तमान इत्थशाल

२. पूर्ण इत्थशाल तथा

३. भविष्यत् इत्थशाल

१. ऊपर जो इत्थशाल का वर्णन किया है, वह वर्तमान इत्थशाल है।

२. यदि दो ग्रहों में १ विकला से ३० विकला का ही मात्र अन्तर हो तो पूर्ण इत्थशाल योग होता है।

३. यदि मन्दगति ग्रह जिस राशि में हो, उससे पिछली राशि में शीघ्रगति ग्रह मात्र दीप्तांश तुल्य अन्तर पर ही हो तो भविष्यत् इत्थशाल योग होता है।

ध्यान में रखने की बात यही है कि दो ग्रहों के अंश, कलादि में जितना ही पूर्ण एवं श्रेष्ठ इत्थशाल योग माना जाएगा।

विचारणीय बात यह भी है कि इत्थशाली ग्रह केन्द्र, त्रिकोणादि

शुभ भावों में शुभ ग्रहों के साथ स्थित हों तभी वे श्रेष्ठ फल देने में समर्थ होंगे। यदि ये ग्रह छठे, आठवें या बारहवें भाव में हों तो इत्थशाल निष्फल ही होता है, ऐसा मेरा अनुभव है।

४. ईशराफ योग

कुछ विद्वान इस योग को मूशरिफ योग भी कहते हैं।

यह योग इत्थशाल के ठीक विपरीत होता है। अर्थात् परस्पर दो ग्रहों में दृष्टि हो, परन्तु शीघ्रगामी ग्रह के अधिक अंश हों एवं मंदगामी ग्रह कम अंशों पर हो। इससे शीघ्रगामी ग्रह आगे ही आगे बढ़ता रहेगा और दोनों ग्रहों का मिलन न हो सकेगा, फलस्वरूप ईशराफ योग बनेगा।

जिस भावेश के साथ ईशराफ योग होता है, उस भाव की हानि ही होती है। उदाहणार्थ, भाग्येश-धनेश में ईशराफ योग निष्पन्न हो तो दुर्भाग्यवश बुद्धि भ्रष्ट होने से धन-हानि होगी।

५. नक्त योग

यदि लग्नेश और कार्येश (जिस भाव का हम विचार कर रहे हैं, उस भाव के स्वामी को कार्येश कहते हैं, उदाहरणार्थ भाग्य का विचार कर रहे हैं तो भाग्येश को कार्येश कहा जायगा) में परस्पर दृष्टि न हो और उन दोनों के बीच में दीप्तांशों के अन्तर्गत कोई ऐसा शीघ्रगामी ग्रह हो, जो लग्नेश और कार्येश दोनों को देखता हो तो इस प्रकार वह एक ग्रह के तेज को लेकर दूसरे को दे देता है अर्थात् वह मध्यस्थता का काम करता है।

ऐसा योग नक्त योग कहलाता है। कुण्डली में जिस वर्ष ऐसा योग होता है, उस वर्ष कार्य सिद्धि तो होती है, पर वह किसी अन्य के सहयोग से होती है।

६. यमया योग

यह योग भी नक्त योग के समान ही है, परन्तु अन्तर केवल यही है कि यदि दो ग्रहों के बीच कोई शीघ्रगामी ग्रह मध्यस्थता करे यानी दोनों ग्रहों को देखे तो नक्त योग और यदि मंदगति ग्रह मध्यस्थता करे तो

यमया योग निष्पन्न होता है।

यह मंदगति ग्रह लग्नेश और कार्येश दोनों ही ग्रहों से मंदगति ग्रह होना चाहिए।

जिस वर्ष यमया योग होता है, उस वर्ष कार्य सिद्धि कुछ विलम्ब एवं बाधाओं के बाद ही हो पाती है।

७. मणऊ योग

यदि लग्नेश एवं कार्येश में इत्थशाल हो, किन्तु कोई पापग्रह (शनि या मंगल) या ये दोनों ही ग्रह उपर्युक्त लग्नेश-कार्येश में से शीघ्रगति ग्रह की शत्रुदृष्टि (१, ४, ७, १०) से देखते हों और शीघ्र-गति ग्रह के अंशों से इस ग्रह (मंगल या शनि) के अंशों का अन्तर दीप्तांशों के अन्दर हो और मित्र या शत्रु (किसी भी दृष्टि से दूसरे ग्रह को भी) देखता हो तो मणऊ योग होता है।

यह योग कार्य नाश करने वाला एवं अशुभ योग है।

यदि वर्ष कुण्डली में इत्थशाल हो, पर साथ ही मणऊ योग भी हो तो इत्थशाल निष्फल हो जाता है। कुछ विद्वानों के अनुसार यदि शनि या मंगल लग्नेश या कार्येश के साथ दीप्तांशों के भीतर हों, तब भी मणऊ योग बनता है।

यह योग कार्यनाश का ही सूचक है।

८. कम्बूल योग

यह फारसी शब्द 'कबूल' से बना है। विस्तार से इस योग के ३२ भेद हैं।

यदि लग्नेश और कार्येश में परस्पर इत्थशाल हो और इन दोनों से या दोनों में से किसी एक से भी चन्द्र इत्थशाल करता हो तो कम्बूल योग बनता है। चन्द्र क्योंकि शीघ्रगामी ग्रह है, अतः यह योग कबूल यानी स्वीकृति सूचक योग है।

यह अत्यन्त शुभफलदायक एवं कार्यसिद्धिप्रद योग है।

यदि लग्नेश, कार्येश और चन्द्र तीनों ही उच्च राशि के या स्व-राशि के हों तो श्रेष्ठ कम्बूल योग बनेगा। यदि लग्नेश, कार्येश तथा

चन्द्र नीच राशि, शत्रुराशिस्थित या निर्बल हों तो निर्बल कम्बूल योग बनता है।

९. गैरी कम्बूल योग

लग्नेश और कार्येश परस्पर इत्थशाल करें, पर चन्द्र इत्थशाली न हो तो गैरी कम्बूल योग बनता है।

यदि लग्नेश-कार्येश की परस्पर दृष्टि हो, पर चन्द्र लग्नेश-कार्येश को नहीं देख रहा हो और राशि के अंतिम भाग (लगभग २८-२९ अंशों में) में हो तथा आगे की राशि में किसी अन्य बलवान ग्रह से इत्थशाल कर ले तो गैरी कम्बूल योग होता है।

यह योग किसी अन्य के सहयोग से कार्यसिद्धि कराता है।

१०. खल्लासर योग

लग्नेश और कार्येश का इत्थशाल हो और चन्द्रमा न कम्बूल करता हो न गैरी कम्बूल करता हो अर्थात् चन्द्र की इनमें से किसी के साथ युति, दृष्टि या सम्बन्ध न हो तो खल्लासर योग होता है।

इस योग के होने से कम्बूल योग नष्ट हो जाता है। यह कार्य-विनाशक योग है।

११. रद्द योग

यदि इत्थशाल करने वाले दोनों ही ग्रह निर्बल हों, अस्त हों, नीच राशि में स्थित हों, शत्रु राशिस्थ हों, क्रूर ग्रहों के साथ हों या षष्ठेश, अष्टमेश, व्ययेश से युति या सम्बन्ध रखते हों तो रद्द योग होता है।

यदि दोनों ग्रहों में से एक भी ऐसा निर्बल या क्षीण ग्रह हो तो भी रद्द योग हो जाता है। रद्द योग इत्थशाल को नष्ट करने के साथ-साथ कार्य में बाधा एवं असफलता देने वाला ही होता है।

१२. दुष्फाली कुत्थ योग

लग्नेश और कार्येश में इत्थशाल हो, पर इन दोनों में मंद गति ग्रह स्वराशि, उच्चराशि, द्रेष्काण, नवांशादि से बलवान हो अर्थात् विशोपक में बली हो और शीघ्र गति ग्रह अपनी उच्च या स्वराशि में न हो

तथा विंशोपक में निर्बल एवं क्षीण हो तो दुष्फाली कुत्थ योग बनता है।

यह योग होने से काफी प्रयत्नों के बाद अन्य के सहयोग से कार्य सिद्धि होती हैं।

१३. दुत्थकुत्थीर योग

यदि लग्नेश एवं कार्येश दोनों निर्बल हों, जिसके कारण इत्थशाल होने पर भी पूर्ण सफलता संदिग्ध हो; परन्तु दोनों में से एक भी ग्रह किसी स्वगृही, उच्च या बलवान् ग्रह से इत्थशाल करता हो तो दुत्थ कुत्थीर योग बनता हैं।

इस योग के होने से परिश्रम के बाद किसी दूसरे की सहायता से कार्य सिद्धि होगी, ऐसा समझना चाहिए।

१४. तम्बीर योग

लग्नेश और कार्येश की परस्पर दृष्टि न हो, पर इनमें से एक ग्रह राशि के अंत में स्थित होकर आगे की राशि में स्थित बलवान् ग्रह से इत्थशाल करता हो तो तम्बीर योग होता है। कुछ विद्वान इसे शुभ तम्बीर योग भी कहते हैं।

यह योग परिश्रम के बाद किसी अन्य के सहयोग से कार्य सिद्धि देने वाला होता है।

१५. कुत्थ योग

लग्न में स्थित ग्रह बलवान् होता है। इनसे २,३,४,५,७,९,१० तथा ११ वें भाव में स्थित ग्रह उत्तरोत्तर हीनबली ग्रह कहलाते हैं। इसी प्रकार स्वराशि, स्वहद्दा, स्वद्रेष्काण, स्वनवांश, हर्षित एवं श्रेष्ठ विंशोपक बल से सम्पन्न ग्रह उत्तरोत्तर बली कहलाता है।

यदि वर्ष कुण्डली में लग्नेश तथा कार्येश दोनों ही ग्रह बली हों तो कुत्थ योग होता है। जिस वर्ष कुत्थ योग होता है उस वर्ष पूर्ण उन्नति, सफलता, विजय, हर्ष एवं श्रेष्ठ धन लाभ होता है।

१६. दुरूफ योग

यह कुत्थ योग का विपरीत हैं। यदि वर्ष कुण्डली में लग्नेश एवं कार्येश दोनों ही निर्बल हों या ३,८,१२ वें भाव में स्थित हों या शत्रु-

क्षेत्री, नीच, पापग्रह से युक्त, कान्तिहीन, अस्त, वक्री या विंशोपक बल से क्षीण बली हों तो दुरूफ योग होता है।

यह रोग अनिष्टकारक, कार्यनाशक एवं बाधाएँ देनेवाला होता है।

उपरोक्त सोलह योग वर्ष के प्राण हैं। अतः इनका उचित विचार करके ही फलाफल किया जाय, तभी अनुकूल रहता है।

मास प्रवेश

वर्ष कुण्डली बनाने के बाद मास कुण्डली भी बनाई जाती है। इस प्रकार वर्ष के बारहों महीनों की बारह कुण्डलियाँ बनती हैं।

वर्ष कुण्डली ही पहले मास की कुण्डली मानी जाती है।

नियम

जन्मकालीन सूर्य प्रतिमास एक राशि आगे बढ़ता हुआ उसी जन्मकालीन अंश, कला, विकला में समान होता है। उक्त समय में प्रतिमास मास प्रवेश होता है।

पीछे उदाहरण में जो वर्ष कुण्डली बनाई है, उसका स्पष्ट सूर्य ०।७।२६।४७ है, क्योंकि जन्म कुण्डली का स्पष्ट सूर्य भी यही है, अतः

०।७।२६।४७	प्रथम मास प्रवेश
१।७।२६।४७	द्वितीय मास प्रवेश
२।७।२६।४७	तृतीय मास प्रवेश
३।७।२६।४७	चतुर्थ मास प्रवेश

ऐसे ही आगे बारहों महीनों का मास प्रवेश सूर्य समझना चाहिए।

मासार्क

मास प्रवेश सूर्य को मासार्क भी कहा जाता है। उदाहरणार्थ, ऊपर जो प्रथम, द्वितीय, तृतीय मास प्रवेश सूर्य दिया है, वह मासार्क है।

पंत्यर्क

पंचांग में जो प्रात:कालीन सूर्य स्पष्ट होता है, उसे पंत्यर्क कहते हैं।

मास इष्ट निकालना

मासारंभ इष्ट निकालने के लिये मासार्क में से पंत्यर्क घटा कर उसकी विकला बनानी चाहिए, फिर उसमें सूर्य गति की विकला बना कर भाग देने से लब्धि, वार, घटी, पल होगा। वार को छोड़कर जो घटी व पल होगा, वही इष्ट कहलायेगा।

उदाहरण

पीछे उदाहरण में प्रथम मास कुण्डली (यानी वर्ष कुण्डली) बना ली थी, जिसका सूर्य ०।७।२६।४७ था। इसी हिसाब से दूसरे मास के लिये मासार्क होगा—१।७।२६।४७।

पंचाग में १।७।२६।४७ देखा तो ज्येष्ठ कृष्ण १४ रविवार को प्रातः सूर्य स्पष्ट १।७।५०।५५ है, जो कि मासार्क से अधिक है, अतः इससे एक दिन पूर्व १३ शनिवार का प्रात:कालीन स्पष्ट सूर्य १।०६। ५३।२८ लिया, जिसकी गति ५७।२६ थी।

राशि	अंश	कला	विकला	
१	७	२६	४७	मासार्क में से
१	६	५३	२८	पंत्यर्क घटाया
०	०	३३	१९	
			×६०	विकला बनाने हेतु
			१९८०	
			+१९	विकला
			१९९९	

सूर्य गति ५७।२६×६०=३४२०

३४२०
+२९

३४४९ विकला

३४४९) ११९९ विकला (० वार
×६०

११९९४०(३४ घटी
१०३४७

१६४७०
१३८९६

२६७४
×६०

१६०४४०(४६
१३७९६

२२४८०
२०६९४

१७८६ त्याज्य

चूंकि यह शनिवार को स्पष्ट किया गया था, अतः शनिवार को ३४।४६ इष्ट पर दूसरा मास प्रारम्भ हुआ।

एक अन्य सुगम विधि

मास इष्ट निकालने की एक सुगम विधि स्पष्ट कर रहा हूँ।

तीसरा मास स्पष्ट करना है तो मासार्क २।७।२६।४७।

पंचाग में प्रातःकालीन ग्रह स्पष्ट देखा तो आषाढ़ शुक्ल १ को प्रातः सूर्य २।७।२२।११ है, जो कि मासार्क से कम है, अतः यह २।७।२२।११ पंत्यर्क हुआ।

नियम

मासार्क में से पंत्यर्क बाकी निकालो और सबकी विकला बना

कर फिर ६० से गुणा कर प्रतिविकला बना दो एवं सूर्य गति की विकला बना कर भाग दो, जो लब्धि होगी, वही मास प्रारम्भ इष्ट होगा, पर यदि पंत्यर्क अधिक हो (मासार्क से ज्यादा हो) तो ऊपर लिखित विधि करके जो लब्धि आवे उसे ६० घटी में से बाकी निकाल दो, जो शेष रहेगा, वही मासारंभ इष्ट होगा, पर मास प्रारम्भ एक दिन पूर्व माना जायेगा।

उदाहरण

ऊपर के उदाहरण में पंत्यर्क कम है, अतः मासारम्भ आषाढ़ शुक्ल १ को ही माना जायगा (यदि मासार्क से पंत्यर्क अधिक होता तो मासारम्भ इससे एक दिन पूर्व अर्थात आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को माना जाता)

२।७।२६।४७ मासार्क
२।७।२२।११ पंत्यर्क
४।३६ शेष रहे
×६०
२४०
+३६
२७६ विकला
×६०
१६५६० प्रतिबिकला

आषाढ़ शुक्ला १ को सूर्य गति ५६।५५

५६।५५
×६०
३३६०
+५५
३४१५ विकला

१६५६०÷३४१५=४ लब्धि, शेष २६००

=२६०० × ६० = १७४००० ÷ ३४१५ = लब्धि ५०
= शेष ३२५० त्याज्य

अतः इष्ट ४।५०

आषाढ़ शुक्ल १ को ४।५० इष्ट घटी पर तीसरा मास प्रारम्भ हुआ। इस इष्ट से लग्न स्पष्ट कर लग्न कुण्डली बना कर इस दिन के ग्रह स्थित करने से तृतीय मास कुण्डली बन जायगी।

उदाहरणार्थ, यदि पंत्यर्क २।७।२८।३४ होता तो

२।७।२८।३४ पंत्यर्क में से
२।७।२६।४७ मासार्क शेष करते
१।५७
× ६०
६०
+ ५७
११७ विकला
× ६०
७०२० प्रतिविकला

७०२० ÷ ३४१५ (सूर्य गति विकला) लब्धि २
शेप १६० × ६० = ११४०० ÷ ३४१५
लब्धि ३, शेष त्याज्य।
पूर्ण लब्धि २।३

चूंकि मासार्क कम है, अतः इस पूर्ण लब्धि को ६० घटी में से घटाया।

६०—००
२—०३
५७—५७

अतः इष्ट स्पष्ट हुआ ५७।५७

चूंकि ६० में से घटाया है, अतः एक दिन पहले यानी आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को इष्ट ५७।५७ पर तीसरा मास प्रारम्भ हुआ।

इस इष्ट से लग्न स्पष्ट कर मास कुण्डली बना लेनी चाहिए।

मासाधिपति का निर्णय

मासाधिपति का निर्णय करते समय निम्न अधिकारियों को ध्यान में रखना चाहिए—

१. मास लग्नपति

२. मुंथाधिपति (मुंथा प्रतिमास २½ अंश आगे बढ़ती है)

३. जन्म लग्न का स्वामी

४. त्रिराशिपति

५. दिन में मास प्रवेश हो तो सूर्याधिष्ठित राशि का स्वामी एवं रात्रि में मास प्रवेश हो तो चन्द्राधिष्ठित राशि का स्वामी।

६. वर्ष लग्न का स्वामी।

उपरोक्त छः ग्रहों में से जो सर्वाधिक बलवान होकर मास लग्न को देखता हो, वही मासाधिपति होता है।

इस मास स्वामी के शुभाशुभ के अनुसार ही मास फल स्पष्ट करना चाहिए।

मास फल

नीचे मैं मास को देखने के कुछ नियम स्पष्ट कर रहा हूं।

१. मास कुण्डली में भी मुंथा की स्थापना की जाय। मुंथा प्रति मास २½ अंश आगे बढ़ती है।

२. मास कुण्डली भी उसी प्रकार से देखी जाय, जिस प्रकार वर्ष कुण्डली देखी जाती है।

३. मास लग्न का नवांशपति यदि मास लग्नेश एवं नवांश स्वामी के साथ मित्र भाव से स्थित हो या परस्पर एक-दूसरे से दृष्ट हो या इन दोनों को चन्द्र मित्र दृष्टि से देख रहा हो तो उस मास में विविध सुख, ऐश्वर्य, भोग-विलास आदि प्राप्त होते हैं, चित्त में प्रसन्नता रहती है तथा व्यक्तित्व निखरता है।

४ लग्नांशेश और लग्नेश्वरांशेश दोनों परस्पर शत्रु भाव से देखते हों और चन्द्र की भी इन पर शत्रु दृष्टि हो तो वह मास कष्ट,

व्याधि एवं परेशानी के साथ व्यतीत होता है।

५. मास कुण्डली में जिस भाव के नवांश का स्वामी अपने स्वामी के नवांशपति द्वारा देखा जाता हो या मित्रभाव में हो या ये दोनों साथ हों तो वह मास सम्पन्न एवं सुखमय व्यतीत होता है।

६. जिस मास में जिस भाव का स्वामी नीच, अस्त या वक्री होता है, उस भाव की हानि समझनी चाहिए।

७. वर्ष लग्नेश, मास लग्नेश, मास नवांशपति, ये मास कुण्डली में जिस भावेश के द्वारा दृष्ट हों या इनकी जिस भाव पर या जिस भावेश पर दृष्टि हो तो उस भाव की विशेष वृद्धि समझनी चाहिए।

८. यदि मास कुण्डली में षष्टेश, अष्टमेश एवं द्वादशेश निर्बल एवं अस्त हों तो उस मास में विशेष शुभ होता है।

९. जिस मास में वर्ष लग्नेश, मास लग्नेश, वर्षराट् और मास मुंथापति ये चारों ही ग्रह पाप ग्रहों से दृष्ट हों या छठे, आठवें, बारहवें भाव में स्थित हों तो उस मास में विशेष कष्ट, परेशानी एवं बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

१०. यदि मासपति, वर्षपति तथा मुंथेश, अष्ठमेश, षष्ठेश या द्वादशेश से दृष्ट हो या उनके साथ स्थित हो तो उस मास परिवार के सदस्य बीमार पड़ते हैं, आकस्मिक संकट का सामना करना पड़ता है, नौकरी में पदच्युति का भय रहता है, व्यापार में हानि होती है तथा मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहना पड़ता है।

११. वर्ष लग्नेश, मास लग्नेश और वर्षराट ये तीनों ही बलवान होकर मास कुण्डली में यदि केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित हों तो उस मास व्यक्ति को विशेष सुख प्राप्त होता है तथा लाभदायक समाचार सुने जाते हैं।

१२. केवल मास लग्नेश १, ४, ७, १० या ११ वें भाव में स्थित हो तो उस मास व्यापार में लाभ एवं अधिकारियों से मनोवांछित सफलता मिलती है।

१३. मासेस तथा मास-लग्नपति दोनों ही नवम भाव में शुभ ग्रहों

से दृष्ट हों तो वह मास विशेष शुभ रहता है।

१४. यदि मास कुण्डली में अष्टम भावस्थ चन्द्र हो तो उस महीने में शत्रुओं द्वारा पीड़ित होना पड़ता है।

१५. चन्द्र की बारह अवस्थाएँ होती है। 'ताजिक नीलकंठी' के अनुसार—

विराय राशि चन्द्रस्थ भागा द्विघ्नाः शरोद्धृताः।
लब्धंगता अवस्थास्युर्भोग्यायां : फलमादिशेत्॥

अर्थात् चन्द्र की राशि को छोड़कर अंशादि को दो से गुणाकर पाँच का भाग देने पर लब्धगत अवस्था और वर्तमान में भोग्यवास्था प्राप्त होती है।

उदाहरणार्थ, चन्द्र ६।१४।२।८। है तो अंशादि १४।२।८ × २ = २८।४।१६ ÷ ५ लब्धि ५, शेष ३।४।१६

लब्धि पाँच, अर्थात् चन्द्रमा की हास्यावस्था होगी।

यदि	लब्धि	१	हो	तो	प्रवासावस्था
”	”	२	”	”	नष्टावस्था
”	”	३	”	”	मृतावस्था
”	”	४	”	”	जयावस्था
”	”	५	”	”	हास्यावस्था
”	”	६	”	”	रत्यावस्था
”	”	७	”	”	क्रीड़ितावस्था
”	”	८	”	”	प्रसुप्तावस्था
”	”	९	”	”	मुक्त्यावस्था
”	”	१०	”	”	ज्वरावस्था
”	”	११	”	”	कम्पितावस्था
”	”	१२	”	”	सुस्थितावस्था

जिस मास की कुण्डली में चन्द्र—

प्रवासावस्था में	हो	तो	यात्राएँ
नष्टावस्था ”	”	”	द्रव्यनाश

मृतावस्था	में	हो	तो	मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट
जयावस्था	,,	,,	,,	विजय
हास्यावस्था	,,	,,	,,	विलास, मौज-शौक
रत्यावस्था	,,	,,	,,	पर्याप्त सुख
क्रीड़ितावस्था	,,	,,	,,	विशेष सुख
प्रसुप्तावस्था	,,	,,	,,	कलह
मुक्त्यावस्था	,,	,,	,,	शारीरिक कष्ट
ज्वरावस्था	,,	,,	,,	भय, बीमारी
कम्पितावस्था	,,	,,	,,	मानसिक चिंता
सुस्थितावस्था	,,	,,	,,	सुख

१६. जिस महीने मास लग्नपति उच्च का या स्वराशिस्थ हो वह मास विशेष शुभ रहता है।

१७. जिस मास कुण्डली में चन्द्र कर्क राशि का या उच्च राशि का हो तो उस मास मनोवांछित कार्य सम्पन्न होता है।

१८. जिस महीने दशम भावपति चर राशि में हो एवं मास लग्नेश भी चर राशि में हो तो उस मास सरकारी सेवारत व्यक्तियों का स्थानान्तरण होता है।

१९. दशमेश बलवान, शुभ ग्रहों के साथ या दृष्ट हो तथा मास-राट् साथ में हो तो उस मास में पदोन्नति होती है।

२०. भाग्येश-लग्नेश, भाग्येश-धनेश, भाग्येश-लाभेश की युति या दृष्टि व्यापारियों के लिये विशेष धनदायक मानी गई है।

२१. जिस भाव का विचार करना हो उस भाव के पति का बलाबल, अन्य ग्रहों से सम्बन्ध तथा चर-स्थिर राशियों पर स्थिति देखकर ही फलाफल करना चाहिए।

होरा

शास्त्रोक्त दृष्टि से 'होरा' शब्द 'अहोरात्र' का अपभ्रंश रूप है, जिसका आदि और अंत के अक्षर का लोप होने से 'होरा' शब्द बना, जिसका तात्पर्य एक दिन-रात है, पर रूढ़ियावस्था में 'होरा' शब्द मास-कुण्डली के एक भाव का प्रतीक बन गया है, जिसकी अवधि २ दिन १२ घंटे है।

एक मास कुण्डली में १२ भाव होते हैं तथा मास कुण्डली एक महीने की होती है। इस दृष्टि से एक भाव, लगभग ढाई दिन अर्थात् २ दिन १२ घंटे का प्रतिनिधित्व करता है।

मास कुण्डली के बाद होरा विवरण प्रस्तुत किया जाता है। जिस समय से मास कुण्डली प्रारम्भ होती है, उस समय में ढाई-ढाई दिन जोड़कर होरा विवरण तैयार किया जाता है।

उदाहरणार्थ, किसी व्यक्ति का नया मास १२ जनवरी १९७२ को प्रातः ९ बजकर ४५ मिनट १८ सैकण्ड पर लगा तो उसका होरा विवरण निम्न प्रकारेण होगा—

प्रथम होरा प्रारम्भ	१२-१-७२	प्रातः	९-४५-१८
दूसरी होरा ,,	१४-१-७२	रात्रि	९-४५-१८
तीसरी होरा ,,	१७-१-७२	प्रातः	९-४५-१८
चौथी होरा ,,	१९-१-७२	रात्रि	९-४५-१८

इसी प्रकार बारहों होरा तैयार कर लेनी चाहिएँ, पर यह कार्य

स्थूल है । जहाँ तक मेरा अनुभव है, इस प्रकार होरा कुण्डली वनाने पर हम कई बार सत्य से काफी दूर रह जाते हैं ।

प्रत्येक मास ठीक तीस दिनों का ही हो, यह सत्य नहीं है । सूर्य, राश्यंश, कला, विकला से उसमें अन्तर आता रहता है । कोई महीना २६ दिन का भी हो जाता है तो कोई ३१ दिन का भी ।

सूक्ष्मता से होरा निम्न प्रकार से स्पष्ट की जानी चाहिए ।

उदाहरणार्थ, तीसरे मास का होरा विवरण स्पष्ट करना है। तीसरा मास प्रारम्भ १२-१-१९७२ प्रातः ९-४५-१८ पर। चौथा मास प्रारम्भ १०-२-१९७२ प्रातः ११-४०-१२ पर। चौथे मास से तीसरे मास को घटाकर १२ का भाग देने से जो लब्धि होगी वही १ होरा का मान होगा।

ऊपर के उदाहरण से—

चौथे मास का प्रारम्भ

१०-२-१९७२ प्रातः ११-४०-१२ से, तीसरे मास का प्रारम्भ १२-१-७२ प्रातः ९-४५-१८ घटाया तो शेष रहा २८ दिन, १ घंटा, ५४ मिनट, ५४ सैकण्ड। यह तीसरे महीने का मान है। इसमें १२ का भाग दिया तो एक होरा का मान आया २ दिन, ८ घंटे ९ मिनट ३४ सैकण्ड। अब होरा विवरण इस प्रकार होगा—

पहली होरा प्रारम्भ	१२-१-७२	प्रातः	९-४५-१८
दूसरी होरा प्रारम्भ	१४-१-७२	मध्यान्ह	५-५४-५२
तीसरी होरा प्रारम्भ	१७-१-७२	रात्रि	२-४-२६
चौथी होरा प्रारम्भ	१९-१-७२	प्रातः	१०-१४-००

इस प्रकार होरा स्पष्ट करने से पाठक स्वयं देख सकते हैं कि कितना अधिक अन्तर आ जाता है।

होरा कुण्डली

जिस समय होरा प्रारम्भ हो उस समय का इष्ट निकाल कर जो कुण्डली बनाई जायगी वह होरा कुण्डली होगी।

इस प्रकार एक महीने की बारह होरा कुण्डलियाँ बनेंगी। प्रत्येक

होरा कुण्डली उस मास के एक भाव का प्रतिनिधित्व करेगी। उदाहरणार्थ, पहली होरा कुण्डली मास के प्रथम भाव का व दूसरी होरा कुण्डली मास के दूसरे भाव का प्रतिनिधित्व करेगी। इसी प्रकार बारहों भावों को स्पष्ट करके समझा जा सकता है।

होरा कुण्डली विवेचन

१. होरा कुण्डली में निम्न ग्रहों पर विशेष रूप से विचार करना चाहिए—

१. होरा लग्नपति
२. होरा मुंथापति
३. मास लग्नपति
४. वर्ष लग्नपति
५. वर्षेश
६. मुंथेश (वर्ष मुंथेश)
७. होरेश—होरा कुण्डली में जो सर्वाधिक बलवान् ग्रह हो और होरा लग्न पर दृष्टि रखता हो।

२. होरा लग्नपति तथा मास भावपति (अर्थात् जिस भाव की वह होरा है) का पारस्परिक सम्बन्ध।

३. कार्येश, होरा-लग्नपति एवं मास भावपति का पारस्परिक सम्बन्ध एवं दृष्टि सम्बन्ध।

४. होरेश का शुभ ग्रहों एवं पापग्रहों से पारस्परिक सम्बन्ध।

५. कार्येश की स्थिति, सम्बन्ध।

इसके अतिरिक्त मास कुण्डली देखने के नियम ही होरा कुण्डली देखने के लिए भी लागू होते हैं।

दिन विवेचन

जिस प्रकार होरा कुण्डली बनती है, उसी प्रकार दिन कुण्डली भी बनाई जाती है, जिससे प्रत्येक दिन का शुभाशुभ ज्ञात किया जा सकता है। वर्षारंभ का जो सूर्य होता है, उसमें एक अंश जोड़कर आगे के दिन की कुण्डली का निर्माण होता है।

पूर्वोक्त उदाहरण में सूर्य स्पष्ट ०।७।२६।४७ है, जो कि २१ अप्रैल, १९७१ का है, जिस दिन सैंतीसवाँ वर्ष प्रारम्भ हुआ था। २२-४-७१ को जब सूर्य ०।८।२६।४७ पर आयेगा, उस समय को आधार बनाकर जो कुण्डली बनाई जायगी, वह २२ अप्रैल १९७१ की कुण्डली होगी, इस प्रकार हमेशा सूर्य के अंशों में एक-एक अंश बढ़ाते रहने से आगे के दिन की कुण्डली बन जाती है, जो कि दिन प्रवेश कुण्डली कहलाती है।

दिन प्रवेश कुण्डली में निम्न अधिकारी माने गये हैं—

१. दिन लग्नेश
२. दिन मुंथेश
३. दिन नवांशपति
४. दिन द्रेष्काणेश
५. दिन राश्यपति

उपर्युक्त पाँचों अधिकारियों में जो सर्वाधिक बली होगा, वही 'दिनेश' कहलायेगा।

दिन फल

१. दिन प्रवेश कुण्डली में देखना चाहिए कि दिन लग्नपति का कार्येश से सम्बन्ध है या नहीं ?

२. दिन लग्नपति की स्थिति ।

३. षष्ठेश, अष्टमेश एवं द्वादशेश की स्थिति अर्थात् ये जिस भाव में भी होंगे, उस भाव को हानि पहुँचायेंगे ।

३. दिनेश का मासेश से सम्बन्ध ।

५. इसके अतिरिक्त मास कुण्डली को देखने के जो भी नियम हैं, वे दिन प्रवेश कुण्डली पर भी लागू करके देखने चाहिएँ ।

पात्यायिनी दशा

वर्षफल में यह दशा परमावश्यक है, परन्तु इस दशा का ज्ञान बहुत ही कम लोगों को होता है । इस दशा को कुछ विद्वान 'पात्यंशी दशा' भी कहते हैं । वर्षफल की दृष्टि से निम्न दशाओं का ज्ञान आवश्यक है और अपने-अपने स्थान पर इन सभी का महत्त्व भी है । ये दशाएँ हैं :—

१. तासीर दशा
२. भाव तासीर दशा
३. स्थल भाव तासीर दशा
४. कालहोरा दशा
५. हद्दा दशा

६. नैसर्गिक दशा
७. तनुभाव दशा
८. मुद्दा दशा और
९. मुग्धा दशा

ये सभी दशाएँ ताजिक मतानुसार हैं। मैं पाठकों को इतने सूक्ष्म गणित में ले जाने की आवश्यकता नहीं समझता। इस अध्याय में केवल पात्यायिनी दशा का विवेचन कर रहा हूँ।

इस दशा को स्पष्ट करने के लिये वर्ष के ग्रह स्पष्ट होने वहुत आवश्यक हैं।

सर्वप्रथम लग्न, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि इन आठों के राशि, अंश, कला, विकला देखनी चाहिएँ। जिस ग्रह के सबसे कम अंश हों, उसे सबसे पहले लिखा जाता है, फिर इसके वाद इससे अधिक अंश के ग्रह को। इस प्रकार सबसे वाद में सबसे अधिक अंश वाले ग्रह को लिखा जाता है।

इसके बाद क्रमशः एक के अंशों को उसके अगले ग्रह के अंशों में घटाया जाता है। इसे हीनांश-पात्यंश कहते हैं।

इसे नीचे उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है।

लग्न स्पष्ट	४।२४।५९।०८
सूर्य	०।०७।२६।३७
चन्द्र	१०।१७।३८।३१
मंगल	८।२८।५९।५१
बुध	१५।२७।५९।५५
गुरु	७।१३।४३।४५
शुक्र	११।४।५७।३८
शनि	०।२४।५७।५६

उपर्युक्त ग्रहों की राशि छोड़ दें तो सबसे कम अंश शुक्र के, फिर सूर्य के, फिर गुरु, चंद्र, शनि, लग्न, बुध एवं मंगल के हैं। सबसे कम अंश के उत्तरोत्तर ग्रहों को लिखें (राशि को छोड़ कर) तो

क्रम इस प्रकार होगा:—

॥ हीनांश ॥

शुक्र	सूर्य	गुरु	चन्द्र	शनि	लग्न	बुध	मंगल
४	७	१३	१७	२४	२४	२७	२८
५७	२६	४३	३८	५७	५६	५६	५६
३८	३७	४५	३१	५६	८	५५	५१

अब सबसे कम अंश चूंकि शुक्र के हैं, अतः वह ज्यों का त्यों रहा, फिर सूर्य ७।२६।३७ में से शुक्र घटाया तो २।२८।५६ आये। ये पात्यंश हैं। गुरु के १३।४३।४५ से सूर्य ७।२६।३७ घटाया तो ६।१७। ८ गुरु के पात्यंश निम्न प्रकार बने।

॥ पात्यंश ॥

शुक्र	सूर्य	गुरु	चन्द्र	शनि	लग्न	बुध	मंगल	योग
४	२	३	३	७	०	३	०	=२८
५७	२८	१७	५४	१६	१	०	५६	=५६
३८	५६	८	४:	२५	१२	४७	५६	=५१

एक रहस्य

यहाँ पर मैं एक रहस्य स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूँ कि पात्यंश का कुल योग उतना ही होगा, जो हीनांश के अंतिम ग्रह का स्पष्ट होगा, जिसके कि सबसे अधिक अंश हैं।

ऊपर के उदाहरण में हीनांश ग्रहों में सबसे अधिक अंश मंगल के २८।५६।५१ हैं, अतः पात्यंश के सभी ग्रहों का योग भी २८।५६।५१ ही आया। यह योग न मिले तो समझ लेना चाहिए कि बीच में कहीं गणित की त्रुटि है।

अब पात्यंशों के इस योग की विकलाएँ बनाकर १२,९६,००० में भाग दें (वर्ष दिन ३६० की विकलाएँ ६०×६०=३६०×६०= २१६०० घटी×६०=१२,९६,००० विकलाएँ)जो लब्धि होगी, वह

ध्रुवक होगा ।

ऊपर उदाहरण में—पात्यंश योग २८।५६।५१ की विकलाएँ २८×६०=१६८०+५६=१७३६×६०=१,०४,१६०+५१=१,०४,२११ विकलाएँ ।

२१,६६,०००÷१,०४,२११=२१ दिन २ घटी, १० पल ध्रुवक सिद्ध हुआ ।

अब शुक्र के पात्यंश से २१ दिन २ घटी १० पल का गुणा किया, जो गुणनफल आया, वह शुक्र की पात्यंश दशा हुई । इस प्रकार प्रत्येक ग्रह के पात्यंश से ध्रुवक को गुणा करने से जो गुणनफल आयेगा, वही उस ग्रह की पात्यंश दशा होगी ।

पर यह ध्यान रहे कि पूरे ग्रहों की पात्यंश दशा का योग ३६० दिन होते हैं । न्यूनाधिक होने पर गणित में त्रुटि समझनी चाहिए ।

विशेष विवरण

१. पात्यंश दशा में ग्रहों का क्रम वही होगा, जो 'पात्यंश स्पष्ट' में है । वर्ष प्रारम्भ दिनांक से पहले ग्रह की दशा प्रारम्भ होगी ।

२. पात्यंश दशा में ग्रहों की दशा के दिन नियत नहीं हैं, ये अंशों के अनुसार न्यूनाधिक होते हैं ।

३. पात्यंश दशा में लग्न की भी दशा होती है, पर राहु-केतु की दशा नहीं होती ।

पात्यायिनी दशाफल

१. वर्ष कुण्डली में ग्रह अपनी स्थिति व बलाबल आदि के अनुसार ही अपनी पात्यंश दशा में फल देगा ।

२. यदि वर्ष कुण्डली में ग्रह भाग्येश है या शुभ भावों का अधिपति है तो उसकी पात्यंश दशा भी भाग्योदयकारक एवं शुभफलदायक रहेगी ।

३. हर्ष बल एवं पंचवर्गी बल से ग्रह का बल देखकर ही उसके

फलाफल देने का समय उसकी पात्यंश दशा में बताना चाहिए।

योगिनी मुद्दा दशा

योगिनी मुद्दा दशा को कुछ लोग योगिनी मुद्रा दशा भी कहते है।

नियम

अश्विनी से जन्म नक्षत्र तक गिनने से जितनी संख्या आवे, उसमें गताब्द जोड़ कर तीन और जोड़ दें। इस प्रकार जो योग फल आवे, उसमें ८ का भाग देने से १ आदि शेष में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रा, उल्का, सिद्धा तथा संकटा की दशा होती है।

नीचे प्रत्येक योगिनी के दशा समय को स्पष्ट किया जा रहा है।

योगिनी नाम	दशा समय मास दिन
१. मंगला	०—१०
२. पिंगला	०—२०
३. धान्या	१—००
४. भ्रामरी	१—१०
५. भद्रा	१—२०
६. उल्का	२—००
७. सिद्धा	२—१०
८. संकटा	२—२०

उदाहरण

पूर्वोक्त उदाहरण में जन्म नक्षत्र अनुराधा था, अश्विनी से गिनने पर जिसकी क्रम संख्या १७ है तथा गतवर्ष (गताब्द) ३६ है।

१७+३७+३=५७ योग

५७÷८=लब्धि ७, शेष १

अतः शेष १ रहने पर मंगला की दशा सर्वप्रथम प्रारम्भ होगी। यदि शून्य शेष रहे तो सर्वप्रथम संकटा फिर मंगला आदि की दशाएँ चलेंगी।

वर्ष प्रारम्भ २१-४-७१ को है, अतः २१-४-७१ से मंगला की दशा प्रारम्भ।

फिर १-५-७१ से पिंगला की दशा प्रारम्भ, फिर २१-५-७१ से धान्या की दशा प्रारम्भ होगी। इस प्रकार पूरी दशा स्पष्ट कर देनी चाहिए।

दशाफल

१. मंगला

यह दशा जीवन में प्रसन्नता सुख एवं समृद्धि प्रदान करने वाली है। इस दशा में घर में मंगलमय एवं शुभ कार्य होते हैं, मनोवांछित इच्छाएँ पूरी होती हैं तथा हर्षवर्धक समाचार सुनने को मिलते हैं।

२. पिंगला

इस दशा में मनस्तोष मिलता है। आपने जो कार्य किया है या जो योजना बनाई है, उसे सम्पन्न होने का मौका इसी दशा में मिलेगा। सामाजिक सम्बन्ध बढ़ेंगे एवं व्यापारिक सम्बन्धों से लाभ होगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह दशा अनुकूल एवं शुभ रहेगी।

३. धान्या

यह दशा सन्तान पक्ष के लिये अनुकूल रहेगी, परीक्षा में सफलता अथवा यदि आपने कोई इन्टरव्यू दिया है तो उस सम्बन्ध में विशेष शुभफलदायक समाचार सुनने को मिलेगा। लड़के की नौकरी लगेगी, या प्रोमोशन होगा अथवा मनोवांछित अवसर मिलेगा। पारिवारिक

प्रसन्नता एवं शुभ समाचार भी मिलते रहेंगे।

४. भ्रामरी

भ्रामरी मुद्दा दशा में मनमें अस्थिरता बनी रहती है। यद्यपि आप कुछ कर दिखाने को आतुर हैं तथापि कोई न कोई बाधा ऐसी उपस्थित होती रहेगी कि वह कार्य सम्पन्न न हो सकेगा। व्यर्थ का भ्रमण, आकस्मिक एवं व्यर्थ का व्यय भी इस दशा में सम्भव है।

५. भद्रा

इस दशा का फल मिश्रित रहेगा। शुभ कार्यों में बाधाएँ आयेंगी तथा शत्रु आपसे परास्त होंगे। मुकदमे आदि में आपकी जीत होगी, पर अत्यधिक व्यय हो जाने से मानसिक परेशानियाँ बढ़ेंगी। इस दशा में जो भी कार्य होंगे, वे आकस्मिक रूप से ही होंगे।

६. उल्का

यह दशा जीवन में परेशानियाँ एवं बाधाएँ पैदा करने वाली ही कही जाती है। कई प्रकार की कठिनाइयाँ उपस्थित होंगी, आय के स्रोत रुकेंगे, अधिकारियों के कोप का शिकार होना पड़ेगा तथा फालतू खर्च होगा। मानसिक परेशानियाँ बढ़ेंगी तथा झगड़े-टंटे होंगे।

७. सिद्धा

यह दशा वर्ष में अनुकूल एवं सिद्धिदायक रहेगी। आपने जो योजना बनाई है वह इस समय में आकर क्रियान्वित होगी, शुभ समाचार सुनने को मिलेंगे, धन प्राप्ति होगी तथा कार्यसिद्धि होगी।

८. संकटा

अपने नाम के अनुरूप यह दशा कई प्रकार के संकट उत्पन्न करेगी, स्वास्थ्य में निम्नता आयेगी, राजकोप होगा, नौकरी में स्थानान्तरण, धन-हानि, भाग्यहीनता एवं शत्रु से परास्त होना पड़ेगा। इस दशा में सावधानी बरतना आवश्यक है।

विंशोत्तरी मुद्दा दशा

वर्ष में इस दशा का सर्वाधिक महत्त्व है और वर्षफल में जब तक इस दशा को स्पष्ट नहीं किया जाता, तब तक वर्षफल अधूरा ही माना जाता है।

विधि

अश्विनी से जन्म नक्षत्र तक गिनें, इसमें गतवर्षों को जोड़ कर दो घटा दें, जो संख्या बचे उसमें ९ का भाग दें, एक आदि शेष रहने पर क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु तथा शुक्र की दशा समझें।

उदाहरण

गत उदाहरण में जन्म नक्षत्र अनुराधा था, जो अश्विनी से गिनने पर क्रम में १७ वाँ होता है, इसमें गतवर्ष ३६ जोड़ कर दो घटाये तो संख्या स्पष्ट हुई ५१, इसमें ९ का भाग देने से लब्धि ५ तथा शेष ६ बचे, अतः सूर्यादि क्रम से गिनने पर सर्वप्रथम शनि की मुद्दा दशा प्रारम्भ हुई।

दशा समय

प्रत्येक ग्रह के विंशोतरी दशा वर्षों को तीन से गुणा करने से मुद्दा दशा के दिन स्पष्ट होते हैं। आगे के पृष्ठों में प्रत्येक ग्रह का दशा समय स्पष्ट किया जा रहा है।

।। विंशोत्तरी मुद्दा दशा ।।

ग्रह	मास	दिन
सूर्य	०	१८
चन्द्र	१	००
मंगल	०	२१
राहु	१	२४
गुरु	१	१८
शनि	१	२७
बुध	१	२१
केतु	०	२१
शुक्र	२	००

नीचे प्रत्येक ग्रह की अन्तर्दशा स्पष्ट की जा रही है।

सूर्य १८ दिन

	दिन	घटी	पल	दिन	घंटा	मिनट
सूर्य में सूर्य	०	५४	०	०	२१	३६
चन्द्र	१	३०	०	१	१२	०
मंगल	१	३	०	१	१	१२
राहु	२	४२	०	२	१६	४८
गुरु	२	२४	०	२	९	३६
शनि	२	५१	०	२	२०	२४
बुध	२	३३	०	२	१३	१२
केतु	१	३	०	१	१	१२
शुक्र	३	०	०	३	०	०

चन्द्र ३० दिन

	दिन	घटी	पल	दिन	घंटा	मिनट
चन्द्र में चन्द्र	२	३०	०	२	१२	०
मंगल	१	४५	०	१	१८	०
राहु	४	३०	०	४	१२	०
गुरु	४	०	०	४	०	०

	दिन	घटी	पल	दिन	घंटा	मिनट
शनि	४	४५	०	४	१८	०
बुध	४	१५	०	४	६	०
केतु	१	४५	०	१	१८	०
शुक्र	५	०	०	५	०	०
सूर्य	१	३०	०	१	१२	०
मंगल २१ दिन						
मंगल में मंगल	१	१३	३०	१	५	२४
राहु	३	९	०	३	३	३६
गुरु	२	४८	०	२	१९	१२
शनि	३	१९	३०	३	७	४८
बुध	२	५८	३०	२	२३	२४
केतु	१	१३	३०	१	५	२४
शुक्र	३	३०	०	३	१२	०
सूर्य	१	३	०	१	१	१२
चन्द्र	१	४५	०	१	१८	०
राहु ५४ दिन						
राहु में राहु	८	६	०	८	२	२४
गुरु	७	१२	०	७	४	४८
शनि	८	३३	०	८	१३	१२
बुध	७	३९	०	७	१५	३६
केतु	३	९	०	३	३	३६
शुक्र	९	०	०	९	०	०
सूर्य	२	४२	०	२	१६	४८
चन्द्र	४	३०	०	४	१२	०
मंगल	३	९	०	३	३	३६
गुरु ४८ दिन						
गुरु में गुरु	६	२४	०	६	९	३६

	दिन	घटी	पल	दिन	घंटा	मिनट
शनि	७	३६	०	७	१४	२४
बुध	६	४८	०	६	१९	१२
केतु	२	४८	०	२	१९	१२
शुक्र	८	०	०	८	०	०
सूर्य	२	२४	०	२	९	३६
चन्द्र	४	०	०	४	०	०
मंगल	२	४८	०	२	१९	१२
राहु	७	१२	०	७	४	४८
शनि ५७ दिन						
शनि में शनि	९	१	३०	९	०	३६
बुध	८	४	३०	८	१	४८
केतु	३	१९	३०	३	७	४८
शुक्र	९	३०	०	९	१२	०
सूर्य	२	५१	०	२	२०	२४
चन्द्र	४	४५	०	४	१८	०
मंगल	३	१९	३०	३	७	४८
राहु	८	३३	०	८	१३	१२
गुरु	७	३६	०	७	१४	२४
बुध ५१ दिन						
बुध में बुध	८	१३	३०	७	५	२४
केतु	२	५८	३०	२	२३	२४
शुक्र	८	३०	०	८	१२	०
सूर्य	२	३३	०	२	१३	१२
चन्द्र	४	१५	०	४	६	०
मंगल	२	५८	३०	२	२३	२४
राहु	७	३९	०	७	१५	३६
गुरु	६	४८	०	६	१९	१२

	दिन	घटी	पल	दिन	घंटा	मिनट
शनि	८	४	३०	८	१	४८
केतु २९ दिन						
केतु में केतु	१	१३	३०	१	५	२४
शुक्र	३	३०	०	३	१२	०
सूर्य	१	३	०	१	१	१२
चन्द्र	१	४५	०	१	१८	०
मंगल	१	१३	३०	१	५	२४
राहु	३	९	०	३	३	३६
गुरु	२	४८	०	२	१९	१२
शनि	३	१९	३०	३	७	४८
बुध	२	५८	३०	२	२३	२४
शुक्र ६० दिन						
शुक्र में शुक्र	१०	०	०	१०	०	०
सूर्य	३	०	०	३	०	०
चन्द्र	५	०	०	५	०	०
मंगल	३	३०	०	३	१२	०
राहु	९	०	०	९	०	०
गुरु	८	०	०	८	०	०
शनि	९	३०	०	९	१२	०
बुध	८	३०	०	८	१२	०
केतु	३	३०	०	३	१२	०

दशाफल

जैसा कि में पिछले पृष्ठों में ही स्पष्ट कर चुका हूँ, विंशोत्तरी मुद्दा दशा का महत्व वर्ष में सर्वाधिक होता है, जिसका प्रयोग प्रत्येक वर्षफल बनाने वाले तथा देखने वाले को करना चाहिए।

विंशोत्तरी मुद्दा दशा स्पष्ट करते समय भयात-भभोग स्पष्ट कर दशा का भुक्त-भोग्य निकाल लेना चाहिए, तभी वह समय अचूक एवं

सत्य सिद्ध होगा।

दशा का फल कब मिलेगा, इसके लिये यह स्पष्ट है कि यदि दशानाथ वर्ष कुण्डली में प्रथम द्रेष्काण में हो तो दशा के प्रारम्भ में, द्वितीय द्रेष्काण में हो तो दशा के मध्य में तथा तृतीय द्रेष्काण में हो तो दशा के अन्त में शुभाशुभ फल प्राप्त होता है, परन्तु यदि दशानाथ वर्ष प्रारम्भ समय में वक्री हो तो उल्टा फल जानना चाहिए, अर्थात् वक्री दशानाथ यदि प्रथम द्रेष्काण में हो तो दशा के अन्त में, द्वितीय द्रेष्काण में हो तो दशा के मध्य में तथा तृतीय द्रेष्काण में हो तो दशा के प्रारम्भ में शुभाशुभ फल प्राप्त होगा।

आगे के पृष्ठों में प्रत्येक ग्रह का दशाफल स्पष्ट किया जा रहा है।

ग्रह मुद्दा दशाफल

सूर्य

सूर्य की मुद्दा दशा जातक को यात्राएँ कराती है, विदेश यात्राओं के भी यह कई प्रसंग उपस्थित करती है तथा राज्य कार्य में पदोन्नति एवं धनवृद्धि के अवसर देती है। ऊँचे अधिकारियों के बीच परिचय क्षेत्र बढ़ता है तथा जातक तन्त्र, मंत्र, यंत्रादि में पहले से अधिक विश्वास करने लगता है, परन्तु इस दशा में मानसिक चिन्ता बराबर बनी रहती है। बन्धुजनों में विरोध, स्त्री से कलह, पुत्रों को कष्ट तथा पिता की मृत्यु जैसे अवसर भी उपस्थित होते हैं। यदि सूर्य नीच राशिगत हो तो मस्तिष्क पीड़ा, शूल पीड़ा, उदर पीड़ा एवं नेत्र रोगों से भी

दुःखी होना पड़ता है।

चन्द्रमा

चन्द्रमा की मुद्दा दशा जातक के लिये साधारणतः सौभाग्यसूचक ही होती है। इस दशा में जातक तीर्थ यात्राएँ करता है, धार्मिक कार्यों में उसकी रुचि बढ़ती है तथा घर में विवाहादि मंगल कार्य होते हैं। राज्य-सम्बन्धी कार्यों में उसे सम्मान मिलता है तथा नौकरी में उन्नति के योग बनते हैं। चन्द्रमा की ही दशा में जातक चुनाव जीत कर विधान सभा या लोक सभा का सदस्य चुना जाता है तथा परीक्षा आदि कार्यों में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

चन्द्रमा यदि सूर्य से अस्त या पापकर्तरी योग बनाता हो अथवा पाप ग्रहों के मध्य बैठा हो तो घर में कलह, क्रूर कार्यों से प्रसन्नता, सिर, दर्द, मानसिक चिन्ताएँ तथा चित्त में खिन्नता बनी रहती है। व्यापारादि कार्यों में धन नाश का योग भी साधारणतः देखा जाता है। इस दशा में कन्या सन्तान तथा भ्रमण भी विशेष होता है।

मंगल

मंगल की मुद्दा दशा धन योग बनाती है, परन्तु वह शुभ कार्यों की अपेक्षा क्रूर कार्यों से ही धनागम के योग बनाती है। इस दशा में जातक बान्धवों से विरोध करता है तथा मकान का बँटवारा या भूमि सम्बन्धी मामलों में कोर्ट-कचहरी चढ़ता है। मुकदमेबाजी होती है और उसमें विजय पाता है। इस दशा में शस्त्र भय तथा चोर भय भी बना रहता है। शत्रुओं से, शस्त्रों से एवं झगड़ों से जातक अर्थलाभ करता है।

यदि मंगल वक्री, अस्त या नीच हो तो पित्त-प्रकोप, रुधिर सम्बन्धी बीमारियाँ, ज्वर, पक्षाघात तथा मूर्च्छा जैसे रोग बने रहते हैं। पत्नी से कलह, भाइयों से वैमनस्य तथा अधिकारियों से उग्र मतभेद हो जाते हैं तथा जातक को नई-नई चिन्ताएँ घेरे रहती हैं। मंगल केन्द्रगत या त्रिकोणगत हो तो शुभफल देता है। ऐसा मंगल अपनी दशा में भूमि-प्राप्ति, मकान बनाना, कृषि कार्यों से लाभ, मानसिक शान्ति

तथा आय के कई स्रोत उपस्थित करता है।

बुध

बुध की दशा में जातक की व्यापार वृद्धि होती है। दूर-दूर तक व्यापार फैलता है तथा नये-नये सम्बन्ध स्थापित होते हैं। घर में पुत्रोत्सव होता है, परिवार में शुभ समाचार मिलते हैं तथा घर में लक्ष्मी का स्थायी निवास होता है।

बुध की मुद्दा दशा में वेरोजगार व्यक्ति नौकरी करने लगता है। इस दशा में दूत-कार्य की सम्भावनाएँ बढ़ जाती है तथा सोने-चाँदी के कार्य में जातक को विशेष लाभ होता है। इस दशा में जातक एक से अधिक उद्यम-उद्योग करता है तथा उसके आय के एकाधिक स्रोत होते हैं। धार्मिक कार्यों में उसकी रुचि उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है, कृषि कार्यों में लाभ होता है तथा कारीगरी के कार्यों में निपुणता प्राप्त करता है। उसका जीवन मधुर एवं सुखमय बनता है।

यदि बुध नीच, अस्त या वक्री हो अथवा ६,८ या १२ वें भाव में बैठा हो तो जातक को वात, पित्त, कफ़ादि से पीड़ा होती है और उसकी संचित पूँजी का नाश हो जाता है।

बृहस्पति

गुरु की दशा में ज्ञान-लाभ, परीक्षाएँ देना, परीक्षा में उत्तीर्ण होना तथा उच्च श्रेणी की प्रतियोगिताओं में जातक सफल होता है। राज्य कार्य से उसे विशेष लाभ होता है तथा उच्चाधिकारियों से उसकी जान-पहचान बढ़ती है। वह देवार्चन, तीर्थाटन एवं धार्मिक कृत्यों में संलग्न होता है। उसके हाथों से यज्ञादि कार्य सम्पन्न होते हैं तथा वह श्रेष्ठ प्रकार के भोगों को भोगता है। समाज में उसका सम्मान होता है तथा राज्य स्तर पर उसे पुरस्कार मिलता है। नीच, अस्त, वक्री या व्यभिचारी गत गुरु की दशा में जातक के कंठ में रोग तथा दाह आदि होता है तथा उसे परीक्षा में असफलता का सामना करना पड़ता है। फिर भी कुल मिलाकर बृहस्पति की दशा जातक के जीवन में श्रेष्ठ ही रहती हैं।

शुक्र

शुक्र की मुद्दा दशा में जातक की वे सभी भोग-विलासमयी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं, जो उसके मन में काफी अर्से से होती हैं। इस दशा में जातक को स्त्री, सन्तान एवं परिजनों का पूर्ण सुख मिलता है, भूषणादि बनते हैं तथा पूर्ण वाहन सुख प्राप्त होता है। इस दशा में जातक की कामचेष्टाएँ प्रबल हो जाती हैं तथा घर में नये प्राणी का जन्म होता है।

विद्या-लाभ, संगति में रुचि, ललित कलाओं में सम्मान प्राप्त करना तथा संगीत एवं चित्रकलादि में उच्चस्तरीय पुरस्कार प्राप्त करना इस दशा में सम्भव होता है। व्यापारिक कार्यों में यह दशा उत्तम कोटि की मानी गई है। आकस्मिक द्रव्य लाभ भी इसी दशा में होता है। पितृधन, आय के विभिन्न स्रोत आदि भी इसी दशा में होते देखे गये हैं। निर्बल शुक्र की दशा में जातक को गुप्तांगों के रोग, चित्त सन्ताप, मित्रों का विरोध, स्त्री से कलह तथा धन-हानि का सामना करना पड़ता है।

शनि

बलवान् शनि की दशा में जातक को क्रय-विक्रय से लाभ होता है, नीच एवं निम्न स्तर के कार्यों से धन-संचय होता है। वह नैतिकता एवं ईमानदारी को तिलांजलि दे देता है तथा येन-केन-प्रकारेण धन-संचय में लग जाता है तथा इस प्रकार से धन-संग्रह कर भी लेता है।

शनि की दशा भाग्योदय में भी पूर्ण समर्थ होती है। इस दशा में वह कुल तथा वंश के नाम को उजागर करता है तथा उसकी चतुर्दिक कीर्ति फैलती है।

नीच या अस्त शनि की दशा में आलस्य, निद्रा, व्यभिचार, कफ, वात, पित्तादि रोग, स्त्री संग में विरक्ति, चर्म रोगादि होते हैं।

राहु

राहु की दशा में साधारणतः माता-पिता की मृत्यु, पुत्र-वियोग, धन-हानि, व्यापार में पतन तथा नौकरी में पदावनति होती देखी गई

है। जातक का स्थानान्तरण घर से बहुत दूर हो जाता है। उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है तथा शरीर में नित्य नये-नये रोग उत्पन्न होते रहते हैं। यदि राहु उच्च का हो तो जातक को अटूट सम्पत्ति मिलती है, मुकदमे में जीत होती है, चुनाव लड़ने पर विजयी होता है तथा मंत्रित्व पद प्राप्त होता है।

केतु

राहु की अपेक्षा केतु की दशा शुभ होती है। फिर भी उस दशा में जातक अपने कार्यों पर पछताता रहता है, वह जो भी योजनाएँ बनाता है, वे असफल रहती हैं। शारीरिक कष्ट, राज्य कार्य में बार-बार स्थानान्तरण, मित्रों से विगाड़, व्यर्थ का व्यय तथा धन-हानि होती है, परन्तु शुभदृष्टि केतु की दिशा में विशेष अर्थ की प्राप्ति, घर में शान्ति, राज्य में उन्नति तथा परम सुख मिलता है।

अन्तर्दशा फल

पीछे प्रत्येक ग्रह की मुद्दा दशा का फल स्पष्ट किया गया है। अब आगे की पंक्तियों में प्रत्येक ग्रह की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल स्पष्ट किया जा रहा है।

सूर्य में सूर्य

सूर्य में सूर्य की अन्तर्दशा आने पर जातक के मन में द्वंद्व, अशान्ति, खिन्नता एवं चिन्ता रहती है। यदि सूर्य उच्च का होकर १,४,५,९, १० या ११ वें भाव में हो तो उसकी अन्तर्दशा में राज्य सम्मान, उन्नति, पदोन्नति, धन-लाभ, विवाह और कार्य सिद्धि होती है।

सूर्य में चन्द्र

सूर्य में चन्द्र की अन्तर्दशा आने पर रोगी रोग मुक्त हो जाता है। स्त्री-सुख, धन-लाभ, कृषि कार्य तथा पुत्र-लाभ होता है। यदि चन्द्र क्षीण या पापी हो अथवा पाप ग्रहों से युक्त हो तो धन-धान्य का नाश, स्त्री-पुत्र को कष्ट तथा जातक को विपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

सूर्य में मंगल

सूर्य में मंगल की अन्तर्दशा आने पर कृषिकार्य में उन्नति होती है, नया मकान बनता है, सेना में उच्च पद मिलता है, व्यापार में लाभ तथा मुकद्दमे में विजय प्राप्त होती है। उच्च या स्वक्षेत्री मंगल की अन्तर्दशा विशेष लाभदायक रहती है।

सूर्य में राहु

राहु यदि १, ४, ५, ७, ९ तथा १२वें भाव में हो तो व्यक्ति का धन-नाश, सर्प काटने से मृत्यु, स्त्री पीड़ा तथा पुत्र की ओर से चिन्ता होती है। ३, ६, ८, १०, तथा ११वें भाव में राहु स्थित हो तो उसकी अन्तर्दशा में राज्योन्नति, धन-लाभ एवं विदेश यात्रा होती है।

सूर्य में वृहस्पति

सूर्य में वृहस्पति की अन्तर्दशा आने पर विवाह, पुत्रोत्पत्ति, मंगल-कार्य, पुत्र-पुत्रियों का विवाह, धन-लाभ, पदोन्नति एवं शुभ कार्य होते हैं। गुरु ९ या १०वें अथवा ५वें भाव में हो तो विशेष शुभ होता है। नीच, अस्त या वक्री गुरु की दशा में रोग, धन-हानि एवं मानसिक चिन्ता बढ़ी-चढ़ी रहती है।

सूर्य में शनि

१, ४, ५, ७, ९ तथा १०वें भाव में शनि हो तो उसकी अन्तर्दशा में शत्रु नाश, कचहरी में जीत, धन-लाभ तथा पुत्रोत्सव होता है। ६, ८ १२वें भाव में स्थित नीच या वक्री शनि की अन्तर्दशा में पाप कर्म में रत, वातरोग, कलह तथा कफादि रोग होते हैं।

सूर्य में बुध

उच्च, स्वराशिस्थ अथवा मित्रराशिस्थ बुध की अन्तर्दशा सुखदायक, सौभाग्यवर्धक एवं व्यापार में उन्नति करने वाली होती है, लेकिन द्वितीयेश तथा सप्तमेश बुध होने पर धन नाश होता है।

सूर्य में केतु

सूर्य में केतु की अन्तर्दशा में मनस्ताप, कुटुम्बियों में वैमनस्य, शत्रु-भय, धन-हानि, पदच्युति अथवा नेत्र रोग होते हैं। केतु २, ३, ६, १०,

११वें भाव में शुभ एवं सुखदायक होता है।

सूर्य में शुक्र

उच्च, मित्रक्षेत्री या स्वक्षेत्री शुक्र हो तो सम्पत्ति लाभ, राज्य सम्मान, यश-लाभ एवं विविध सुख प्राप्त होते हैं। छठे तथा १२वें शुक्र हो तो विशेप धनदाता ग्रह बन जाता है। ८वें शुक्र की अन्तर्दशा बदनामी कराती है।

चन्द्र की मुद्दादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

चन्द्र में चन्द्र

चन्द्र उच्च का, स्वक्षेत्री या १, ५, ९, ११वें भाव में हो तो चन्द्र की अन्तर्दशा में यश लाभ, अक्षयकीर्ति, पुस्तक लेखन, राज्योन्नति, कन्या जन्म, कन्या विवाह एवं मंगलकार्य सम्पन्न होते हैं। इस दशा में उत्तम व्यक्तियों से परिचय होता। ६, ८ वें स्थान में स्थित चन्द्र की अन्तर्दशा में व्यर्थ भ्रमण, स्थानान्तरण, व्यर्थ व्यय, आलस्य, खिन्नता एवं राज्य विरोध होता है। माता को दारुण कष्ट अथवा माता की मृत्यु भी इस दशा में होती है। यदि चन्द्र सप्तमेश अथवा द्वितीयेश हो तो दुर्घटना होती है।

चन्द्र में मंगल

चन्द्र में मंगल की अन्तर्दशा उत्तम रहती है। मंगल ३, ६, ११वें स्थान में या उच्च का अथवा स्वक्षेत्री हो तो जातक इस दशा में राज्य-वृद्धि, पद-वृद्धि, समाज में सम्मान तथा विजय प्राप्त करता है। यदि मंगल पाप ग्रहों के साथ या शत्रु क्षेत्री हो तो उसे कृषि हानि, बन्धु वियोग एवं विभिन्न कष्ट झेलने पड़ते हैं।

चन्द्र में राहु

चन्द्र में राहु की दशा मनस्ताप, अर्थक्षय एवं चिन्ताएँ बढ़ाने वाली होती है। यदि राहु पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो कार्य सिद्धि होती है।

चन्द्र में बृहस्पति

चन्द्र में बृहस्पति की दशा श्रेष्ठ रूप से व्यतीत होती है। इस दशा

में राज्य सम्मान, धनागम एवं कीर्ति प्राप्त होती है। यदि गुरु नीच, अस्तया वक्री हो तो पदच्युति, अर्थनाश, पुत्र संताप एवं दुःख प्राप्त होता है। साधारणतः चन्द्र में बृहस्पति की अन्तर्दशा, उत्तमही होती है।

चन्द्र में शनि

चन्द्र में शनि की अन्तर्दशा आने पर उदर पीड़ा, मस्तिष्क शूल, मातृ वियोग, स्वजन विछोह तथा कई कष्टों का सामना करना पड़ता है। यदि शनि त्रिकोणस्थ हो तो धन-धान्य की वृद्धि एवं धनस्त्रोत बनाने में सहायक होता है।

चन्द्र में बुध

चन्द्र में बुध की दशा आने पर ननिहाल या माता से धन-लाभ होता है। पशुलाभ, पुस्तक लेखन, उत्तम कार्य, विद्या लाभ परीक्षा में सफलता एवं प्रतियोगिता में विजय लाभ करता है।

चन्द्र में केतु

चन्द्र में केतु की अन्तर्दशा धन-धान्य की वृद्धि करने वाली व स्त्री सुख, संतान सुख कराने में सहायक होती है। यदि केतु पाप ग्रह से दृष्ट हो तो रोग तथा धनहानि की संभावनाएँ उत्पन्नकरता है।

चन्द्र में शुक्र

चन्द्र में शुक्र की अन्तर्दशा आने पर राज्य में उच्च पद प्राप्ति, चुनाव में सफलता, पुत्र सन्तान वृद्धि, नूतन गृह निर्माण, स्त्री सुख तथा विविध भोग मिलते हैं। यदिशुक्र छठे या १२वें हो तो विशेष अर्थ लाभ होता है। नीच, वक्री, अस्त या व्यभिचारगत शुक्र की अन्तर्दशा कलह, व्याधि, असत्य दोषारोपण तथा मानसिक संताप उत्पन्न करती है।

चन्द्र में सूर्य

सूर्य उच्च का, स्वक्षेत्री या प्रबल हो तो इस दशा में धन लाभ, व्यापार वृद्धि, राज्य गौरव, सुख एवं उन्नति का सुयोग मिलता है। सूर्य ६,८,१२ वें भाव में हो तो नेत्र पीड़ा, पिता की मृत्यु तथा परदेशगमन भी होता देखा गया है।

मंगल की मुद्दादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

मंगल में मंगल

मंगल की मुद्दा दशा में जब मंगल की ही अन्तर्दशा आती है तो परिवार में विरोध, घर में कलह, राज्य चिंता, नौकरी से मुअत्तिली या पदावनति, बना-बनाया काम बिगड़ जाना, शरीर में गर्मी से सम्बन्धित रोग, क्रोध का आधिक्य तथा मानसिक चिन्ता होती है, परन्तु यदि मंगल त्रिकोणेश या त्रिकोणस्थ हो तो इस दशा में वैभव प्राप्ति, धनागम, पुत्र लाभ एवं सुख सुविधाएँ मिलती हैं। इसके साथ ही भूमि, मकान सम्बन्धी क्रय-विक्रय, कृषि में लाभ तथा यदि जातक पुलिस या मिलट्री सेवा में हो तो श्रेष्ठपद लाभ प्राप्त होता है।

मंगल में राहु

राहु मूल त्रिकोण, तीसरे, छठे या ग्यारहवें भाव में हो तो इस दशा मे विशेष वीरता का प्रदर्शन, शत्रुओं का संहार, कृषि लाभ, मुकद्दमे में जीत तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। इसके विपरीत यदि राहु शत्रुक्षेत्री या पापग्रहों से युक्त हो तो इस दशा में जेलयात्रा, सर्प बाधा, क्षय रोग तथा धन का नाश होता है।

मंगल में बृहस्पति

उच्च, स्व, मूलत्रिकोण, केन्द्र तथा ५,९ वें भाव में गुरु हो तो इसकी अन्तर्दशा में उच्च कोटि का ग्रंथ लेखन, यश प्राप्ति, धन-पुत्र लाभ तथा (अविवाहित होने पर) विवाह होता है। इसके साथ ही परिवार तथा जाति में सम्मान, आरोग्य, घर में प्रसन्नता एवं राज्य में सम्मान मिलता है। यदि गुरु ६,८,१२ वें पापी ग्रहों के साथ या दृष्ट हो तो घर में चोरी, राज्यक्षय, पदावनति, सन्तान एवं भ्रातृ नाश होता है।

मंगल में शनि

मंगल में शनि का अन्तर आने पर स्त्री-बाधा, सन्तान पीड़ा, शरीर कष्ट, मुकद्दमे में हार, धन-हानि एवं स्थानान्तरण होता है। शनि केवल मूल त्रिकोणगत हो तभी लाभदायक होता है, ऐसा अनुभव

में आया है।

मंगल में बुध

बुध के अन्तर में सुन्दर, धार्मिक कन्या का जन्म, यश लाभ, प्रेम तथा न्याय मिलता है। यदि बुध नीच, अस्त अथवा वक्री हो तो इस दशा में पैरों में पीड़ा, मानसिक असन्तोष, गृह कलह तथा स्त्री-नाश की सूचना मिलती है।

मंगल में केतु

मंगल में केतु का प्रत्यन्तर आने पर पेट सम्बन्धी रोग, बान्धवों से विग्रह, दुष्टों से शारीरिक क्षति तथा अग्नि बाधा से सम्पत्ति नाश होता देखा गया है। यदि केतु शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो यश वृद्धि तथा सेना में उच्चपद प्राप्ति होती है।

मंगल में शुक्र

केन्द्र में, त्रिकोण में, स्व, उच्च या छठे, १२वें भाव में शुक्र हो तो इस अन्तर्दशा में राज्य लाभ, आभूषण प्राप्ति सुख प्राप्ति तथा राज्य-सम्मान मिलता है। इस दशा में प्रेम सम्बन्ध भी बढ़ते हैं तथा व्यक्ति अधिक भावुक, कल्पनाशील, मनमौजी तथा शानशौकत पर ज़रूरत से ज्यादा व्यय करने वाला बन जाता है। शुक्र २,८ में हो तो बन्धु नाश धन नाश तथा परेशानियाँ उत्पन्न होती हैं।

मंगल में सूर्य

मंगल में सूर्य की अन्तर्दशा में यदि सूर्य कारक ग्रह हो तो वाहन लाभ, पद वृद्धि, धन लाभ आदि होते हैं। अन्यथा मेरे अनुभव में अधिकतर इसके बुरे फल ही प्राप्त हुए हैं।

मंगल में चन्द्र

मंगल में चन्द्र की अन्तर्दशा में उच्च पद प्राप्ति, आकस्मिक धन लाभ, रत्न प्राप्ति, सम्मान तथा व्यापार में वृद्धि होती है। ६,८, १२वें भाव में चन्द्र धन नाश, कलह तथा अकाल मृत्यु का कारण भी बनता है।

राहु की मुद्दादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

राहु में राहु

राहु में राहु की अन्तर्दशा स्वास्थ्य में गिरावट, मानसिक तनाव, चिन्ताएँ, अकाल मृत्यु, स्थानान्तरण, पदावनति, अकाल-मृत्यु का योग उपस्थित करती है। ७ वें भाव में राहु हो तो स्त्री का मरण तथा दूसरे भाव में हो तो प्रबल धन क्षय का कारण बनता है।

राहु में बृहस्पति

राहु में बृहस्पति की अन्तर्दशा में रोग मुक्ति, स्वास्थ्य लाभ, ईश्वराराधन, धन प्राप्ति, पुस्तक लेखन तथा यश प्राप्ति होती है। नीच, अस्त तथा वक्री गुरु की अन्तर्दशा अशुभ परिणामसूचक है।

राहु में शनि

राहु में शनि की अन्तर्दशा आने पर दूर जगह पर स्थानान्तरण, अफसरों से विरोध तथा पुत्रों से कलह होती है। द्वितीयेश या सप्तमेश शनि हो तो अकाल मृत्यु होती है। त्रिकोणस्थ शनि शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो लाभ, सम्मान तथा राजनीतिक कार्यों में सफलता मिलती है।

राहु में बुध

राहु में बुध की अन्तर्दशा में व्यापार वृद्धि, राजकीय ठेके, यश लाभ, विवाहोत्सव तथा शुभ समाचार मिलते हैं, पर यदि बुध ६, ८, १२ वें भाव में पापीग्रहों के साथ या पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसी दशा में राज रोष, पुत्र वियोग, हानि तथा कलह वृद्धि होती है।

राहु में केतु

केतु की अन्तर्दशा में मान हानि, पशुओं का मरण, स्वजन बिछोह, नाना प्रकार के उपद्रव तथा शारीरिक रोग होते हैं। यदि केतु शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो भूमि लाभ अथवा कृषि लाभ होता है।

राहु में शुक्र

१,४,५,६,१२ वें भाव में शुक्र हो तो इस दशा में पुत्रोत्पत्ति, वैभव प्राप्ति विवाह तथा घर में मांगलिक कार्य होते हैं। यदि शुक्र नीच, अस्त, वक्री या पापाचारी हो तो पत्नीमरण, बन्धु नाश, धन-हानि एवं बद-

नामी होती है। शुक्र यदि दूसरे तथा सातवें घर का स्वामी हो तो दुर्घटना की आशंका कही जा सकती है।

राहु में सूर्य

राहु में सूर्य की अन्तर्दशा आने पर धन वृद्धि, परदेशगमन, राज्य से लाभादि होता है। यदि सूर्य ६,८,१२ वें भाव में हो तो नेत्र पीड़ा या आपरेशन होता है।

राहु में चन्द्र

राहु में चन्द्र की अन्तर्दशा में कलह, बन्धु वियोग, धनागमन, अन्न लाभ एवं सुख सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। मुकद्दमे में यह दशा हानि प्रदान करती है।

राहु में मंगल

राहु में मंगल की अन्तर्दशा आने पर नाना प्रकार के उपद्रव, थकावट, मानसिक चिन्ता, बाधाएँ, स्मरणशक्ति का ह्रास, परीक्षा में असफलता तथा पदावनति होती है।

बृहस्पति की मुद्दादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

बृहस्पति में बृहस्पति

बृहस्पति की मुद्दादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा आने पर राज्य-कृपा, नौकरी में तरक्की, जीवन के सभी कार्यों में सफलता, विद्याध्ययन व उसमें सफलता, नौकरी के सम्बन्ध में इन्टरव्यू व उसमें सफलता, पुस्तक लेखन, सम्मान प्राप्ति, विवाह एवं धन लाभ आदि होते हैं। नीच राशिस्थ, वक्री, अस्त या ६,८,१२ वें गुरु हो तो दुःख, स्त्री-चिन्ता, परेशानी होती है। मेरा अनुभव यही रहा है कि गुरु की श्रेष्ठ स्थिति होने पर भी गुरु की महादशा में गुरु का अन्तर ठीक नहीं रह पाता।

बृहस्पति में शनि

बृहस्पति में शनि आने पर ज्वर, रक्त बाधा, वेश्यागमन, मद्यातिरेकता, शारीरिक दौर्बल्य, व्ययाधिक्य एवं मानसिक परेशानियाँ दिनों

दिन बढ़ती रहती हैं। हाँ, यदि शनि मूलत्रिकोणस्थ, स्व या उच्च राशि में हो तो इस दशा में सम्मान, चुनाव में विजय, मुकदमे में जीत, शत्रुओं पर विजय, निरोगता एवं शुभ फलदायक होता है।

बृहस्पति में बुध

बृहस्पति में बुध की अन्तर्दशा आने पर पुत्र लाभ, धारा सभा का सदस्य, व्यापार वृद्धि, व्यापार-प्रसार, नये-नये सम्बन्ध तथा अधिकारी पद प्राप्त होता है। बुध नीच, अस्त, वक्री या ६,८,१२ वें भाव में हो तो स्त्री-चिन्ता, कष्ट एवं दुःख होता है। द्वितीयेश या सप्तमेश बुध भयंकर मानसिक कष्ट प्रदान करता है।

बृहस्पति में केतु

इस अन्तर्दशा में राज्येष, बन्धन, धन नाश, तीर्थ यात्रा, मांगलिक कार्य, भूषणादि का निर्माण, वाहन प्राप्ति एवं देवोराधन होता है।

बृहस्पति में शुक्र

बलवान शुक्र हो तो राज्य लाभ, प्रिय या प्रियतमा मिलन, अवैध सम्बन्धों में दृढ़ता, पत्नी प्रेम विवाह, कन्या सन्तान का जन्म, सौन्दर्यप्रियता, ऐश आराम की वस्तुओं पर व्यय तथा घर में नवीन कार्य सम्पन्न होते हैं, लेकिन यदि शुक्र नीच, अस्त, वक्री पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो स्थानान्तरण, परदेशगमन, कष्ट, बन्धु विरोध, पत्नी पीड़ा आदि होते हैं। यदि शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तमेश हो तो व्यक्ति निरन्तर परेशानियों से ग्रस्त रहता है।

बृहस्पति में सूर्य

सूर्य के अन्तर में तत्काल लाभ, राज्य में उन्नति, वाहन प्राप्ति, पराक्रम प्रभुता, ऐश्वर्य वृद्धि तथा पुत्र लाभ होता है, परन्तु यदि सूर्य ६,८,१२ वें भाव में हो तो दृष्टि न्यूनता, रोग तथा आपरेशन में मदद करता है।

बृहस्पति में चन्द्र

बृहस्पति की महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा आने पर घर में

श्रेष्ठ मांगलिक कार्य, सम्मान वृद्धि, पुत्र-पौत्र जन्म तथा सत्कार्य होते हैं। वैद्यक में प्रतिष्ठा तथा जाति में सम्मान होता है। इस दशा में उच्च पद भी प्राप्त होने की सम्भावनाएं होती हैं।

बृहस्पति में मंगल

बृहस्पति में मंगल की दशा तत्काल सिद्धि, कार्य सफलता, भूमि लाभ, भूमि क्रय-विक्रय, कृषि में उन्नति, मिलों के व्यापार में लाभ तथा तीर्थ यात्रा एवं नवीन आविष्कारों से राज्य अथवा देशव्यापी प्रसिद्धि प्राप्त होती है, परन्तु यदि मंगल ८ वें या १२ वें भाव में हो तो उत्साह हीनता, ज्वर, गुदा रोग, रक्त सम्बन्धी बीमारियाँ तथा परेशानियाँ उत्पन्न कर देता है।

बृहस्पति में राहु

बृहस्पति में राहु की दशा आने पर पीड़ा, गत्यावरोध, ज्वर तथा विविध बाधाएँ आती हैं। यदि राहु कारक ग्रह हो तो विदेश यात्रा, ख्याति सम्मान तथा विद्या लाभ होता है।

शनि की मुद्दा दशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

शनि में शनि

शनि की मुद्दा दशा में शनि की अन्तर्दशा आने पर नाना प्रकार के क्लेश एवं बाधाएँ, अधिकारियों से मतभेद, गृह कलह, दमा, नाड़ी सम्बन्धी बीमारियाँ, स्वजन विछोह तथा राज्य में पदावनति होने की प्रबल सम्भावनाएँ होती हैं। यदि शनि स्वगृही, उच्च या मूल त्रिकोण-गत हो तो इस दशा में विजय, शत्रुओं पर सफलता मुकदमे में जीत ख्याति, उच्च पद प्राप्ति, विदेश गमन, विदेश सम्पर्क तथा पुत्र प्राप्ति होती है।

शनि में बुध

इस दशा में धन-धान्य की वृद्धि, सम्मान लाभ, सुयश, कीर्ति, धन लाभ, व्यापारिकप्रसार, व्यापारिक सफलताएँ तथा शारीरिक निरोगिता प्राप्त होती है। यदि बुध अस्त या वक्री हो तो विलम्ब से कार्यसिद्धि,

प्रयत्न करने पर सफलता तथा उच्चाधिकारियों से मित्रता होती है।

शनि में केतु

शनि में केतु की दशा लगभग खराव ही जाती है। इस दशा में राज्य भंग, स्थानान्तरण, पदच्युति, बन्धु वियोग, स्त्री पीड़ा एवं कुख्याति प्राप्त होती है। यदि केतु शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो उपर्युक्त अशुभ फल में कुछ न्यूनता आ जाती है।

शनि में शुक्र

उच्च, स्व, मूलत्रिकोणगत शुक्र हो तो इस दशा में आरोग्य लाभ, धन प्राप्ति, कल्याण, उन्नति, राज्य में प्रोमोशन, उच्च पद प्राप्ति, प्रसन्नता एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। यदि शुक्र द्वादशस्थ हो तो विदेश यात्रा होती है तथा अतुल धन मिलने की संभावनाएँ बनती हैं। यदि शुक्र ८ वें हो तो स्त्री-मरण, बन्धु वियोग, रोग तथा नाना प्रकार के कष्ट झेलने पड़ते हैं।

शनि में सूर्य

शनि में सूर्य की अन्तर्दशा आने पर पुत्र की प्राप्ति, पद वृद्धि, राज्य सम्मान, जीवन के रहन सहन में परिवर्तन तथा यश की प्राप्ति होती है। यदि सूर्य ६,८,१,२ वें हों तो घर में क्लेश, बँटवारा, भाइयों से प्रबल विरोध, नये-नये शत्रु उत्पन्न होना तथा जठराग्नि एवं नेत्र रोग हो जाता है।

शनि में चन्द्र

शनि में चन्द्र की दशा में धन नाश, पुत्र विरोध, माता की मृत्यु तथा पेट सम्बन्धी रोग होते हैं। हाँ, यदि चन्द्र कारक ग्रह हो तो व्यक्ति को आरोग्य लाभ, सौभाग्य वृद्धि एवं कारोबार में वृद्धि होती है तथा पूर्ण धन लाभ होता है।

शनि में मंगल

इस दशा में जातक विविध भोगों को भोगता है। नौकरी में पद वृद्धि तथा बकाया धन राशि की प्राप्ति होती है। नये गृह का निर्माण, भूमि खरीद-बिक्री से लाभ, नये-नये कारखानों की स्थापना एवं व्या-

पार में वृद्धि होती है। यदि मंगल अकारक तथा ८ वें अथवा १२ वें भाव में हो तो रोगवृद्धि, गुप्तांग पीड़ा, स्थानच्युति, नाना शत्रुओं द्वारा उत्पन्न भय, मित्रों का वियोग तथा मरणान्तक कष्ट प्राप्त होता है।

शनि में राहु

इस दशा में कलह, रक्त दूषितता, विविध प्रकार की चिन्ताएँ, परदेशगमन तथा धन नाश होता है। यदि राहु कारक ग्रह हो या तीसरे अथवा छठे भाव में स्थित हो तो अचानक धन प्राप्ति एवं विविध सुख प्राप्त होते हैं।

शनि में बृहस्पति

इस दशा में यदि बलवान गुरु उच्च, स्वक्षेत्री या कारक हो तो मनोरथ सिद्धि, सम्मान प्राप्ति, पुत्र लाभ, पुस्तक लेखन तथा नवीन कार्य होते हैं, परन्तु यदि बृहस्पति वक्री, अस्त या अकारक ग्रह हो तो कुष्ट रोग, सन्तान बाधा, पत्नी पीड़ा एवं पदच्युत होने की संभावनाएँ प्रबल होती हैं।

बुध की मुद्दादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

बुध में बुध

बुध में बुध की अन्तर्दशा में व्यापार की विशेष वृद्धि देखी गई है। परदेश से सम्पर्क स्थापित होता है तथा चतुर्दिक कीर्ति एवं प्रशंसा फैलती है। इस दशा में श्रेष्ठ विद्यालाभ, प्रतियोगिता में सफलता एवं वैभव प्राप्ति होती है, लेकिन यदि बुध अकारक, नीच, अस्त या वक्री हो तो विविध कष्ट, स्थानान्तरण एवं हानि होती है।

बुध में केतु

बुध में केतु की दशा आने पर अल्प लाभ, जीवन चिन्ताएँ, शारीरिक बाधा, मानसिक परेशानियाँ एवं यश की प्राप्ति होती हैं। यदि केतु कारक ग्रह होकर दूसरे भाव में स्थित हो तो विशेष धन प्राप्ति योग बनता है।

बुध में शुक्र

इस दशा में विविध वाहनों की उपलब्धि, सम्पत्ति लाभ। विद्या

द्वारा ख्याति, बँटवारे से लाभ, समृद्धिपूर्ण जीवन बनता है। यदि शुक्र ८ वें भाव में हो तो पत्नी का मरण, नाना प्रकार के झंझट तथा शारीरिक कष्ट होता है, लेकिन यदि शुक्र द्वितीयेश अथवा अष्टमेश हो तो एक्सीडेंट का खतरा रहता है।

बुध में सूर्य

बुध महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा श्रेष्ठ रहती है। यदि लग्नेश से सूर्य की युति हो तो पद वृद्धि, सम्मानवृद्धि, राज्य में लाभ तथा पुस्तक द्वारा विशेष पुरस्कार मिलता है। यदि रवि-मंगल की युति हो तो नवीन गृह का निर्माण होता है। सूर्य ८ वें व १२ वें भाव में हो तो दृष्टि क्षीणता का शिकार होना पड़ता है।

बुध में चन्द्र

इस दशा में व्यक्ति को विशेष आर्थिक लाभ, व्यापार वृद्धि, सामाजिक सफलताएँ, कन्या जन्म तथा राज्य में तरक्की होती है, लेकिन यदि चन्द्र क्षीण या अष्टम भाव में हो तो उसे सहयोगी द्वारा भी धोखा खा जाने से धन हानि की प्रबल चिन्ता वहन करनी पड़ती है।

बुध में मंगल

बुध में मंगल की दशा आ जाने पर कृषि कार्यों से लाभ, भूमि लाभ, नवीन ग्रह का निर्माण, पुस्तक लेखन द्वारा यश प्राप्ति तथा मुकदमे में जीत होती है। यदि मंगल नीच या वक्री हो तो शत्रुओं से पराजय, हीनता की वृत्ति का उदय, मुकदमे में हार तथा दुर्घटना होती है।

बुध में राहु

इस दशा में जातक विविध कष्ट भोगता है। यदि राहु कारक होकर तीसरे व छठे भाव में हो तो धन लाभ, राज्य सम्मान एवं चुनाव में विजयश्री प्राप्त होती है।

बुध में बृहस्पति

इस दशा के आने पर जातक को विशेष आर्थिक लाभ होता है तथा उसके व्यापार का प्रसार दूर दूर तक हो जाता है। नये-नये सम्बन्ध

स्थापित होते हैं, जो आगे चलकर विशेष लाभदायक बनते हैं। इसी दशा में पुत्र लाभ, ग्रंथ प्रकाशन आदि कार्य भी होते हैं। यदि गुरु नीच या ८ वें भाव में हो तो जातक मरणान्तक कष्ट भोगता है।

बुध में शनि

उच्च, स्वराशिस्थ, मूल त्रिकोण या कारक शनि हो तो इस दशा में पदवृद्धि, राज्य सम्मान एवं चतुर्दिक प्रसंशा होती है, परन्तु यदि शनि ८, १२ वें भाव में हो या अस्त, वक्री या शत्रु क्षेत्री हो तो नाना प्रकार की चिन्ताएँ, व्याधियाँ तथा दुःखों की प्राप्ति होती है।

केतु की मुद्दा दशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

केतु में केतु

केतु में केतु की दशा में जातक का स्थानान्तरण होता है। वह चारों ओर से परेशान हो जाता है, आर्थिक दृष्टि से उसे कई चिन्ताएँ आ घेरती हैं तथा भाइयों से विग्रह एवं राज्य में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं, परन्तु यदि केतु द्वितीय भावस्थ हो तो प्रोमोशन से धन लाभ होता है। यदि केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो तो व्यापार में लाभ होता है।

केतु में शुक्र

केतु में शुक्र की दशा आने पर व्यापार में लाभ, नौकरी में मनोवांछित स्थान पर स्थानान्तरण, राज्य में बाधाएँ, मानहानि एवं पुत्रों की ओर से कष्ट प्राप्त होता है। यदि शुक्र द्वादशस्थ या कारक ग्रह हो तो इस दशा में लेखन, प्रकाशन, यश लाभ एवं सम्मान वृद्धि होती है।

केतु में सूर्य

केतु में सूर्य की दशा अत्यन्त साधारण रहती है। इस दशा में स्थान भ्रष्टता, अधिकारियों से विरोध, गलत फहमियाँ, स्थानान्तरण, शारीरिक कष्ट एवं नाना प्रकार के कष्ट झेलने पड़ते हैं। सूर्य द्वितीयेश हो तो व्यक्ति कई रोगों से ग्रस्त होकर दुःखी होता है।

केतु में चन्द्र

केतु में चन्द्र की अन्तर्दशा सर्वसुखकर होती है। जातक को समाज

में विशेष सम्मान मिलता है तथा वह चतुर्दिक ख्याति प्राप्त करता है। इस दशा में कन्या लाभ, घर में मांगलिक कार्य, भूमि लाभ, नये-नये उद्योगों की स्थापना एवं धन संचय में सहायता मिलती है। यदि चन्द्र नीच राशिस्थ हो तो उपर्युक्त फल में न्यूनता रहती है।

केतु में मंगल

केतु में मंगल की अन्तर्दशा में घर का मकान बनता है, भूमि क्रय-विक्रय से लाभ होता है तथा कृषि कार्य में विशेष उन्नति होती है। मंगल कारक ग्रह हो तो मुकदमे में विजय, व्यापार में वृद्धि एवं श्रेष्ठ धन लाभ होता है। अकारक, अस्त, नीच या वक्री भौम हो तो पागलपन, हिस्टीरिया, जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग तथा कारोबार में हानि होती है।

केतु में राहु

केतु में राहु की दशा निकृष्ट होती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मरणान्तक कष्ट देती है। शीत ज्वर, कलह आदि से जातक घबरा जाता है। व्यापार में हानि, नौकरी में पदावनति एवं अर्थ प्राप्ति में कई प्रकार की बाधाएँ उपस्थित हो जाती हैं।

केतु में बृहस्पति

केतु में बृहस्पिति की अन्तर्दशा में परदेशगमन, स्त्री-वियोग एवं सम्मान क्षति होने की संभावनाएँ बनती हैं। यदि गुरु उच्च, कारक, शुभ एवं मूल त्रिकोणगत हो तो इस दशा में सम्मान, ख्याति लाभ, ग्रंथ लेखन, धनागम के विविध स्त्रोत बनते हैं।

केतु में शनि

इस दशा में जातक को साधारण सुख, मनोकामना पूर्ति एवं सम्मानवृद्धि होती है। यदि शनि अकारक एवं नीच राशिगत हो तो बन्धुओं से विरोध, स्वदेश त्याग, विरोधियों से अनबन एवं शारीरिक क्षति तथा धन-हानि होती है।

केतु में बुध

इस दशा में बान्धवों से प्रीति, धनागम एवं विद्या व्यापार से सुयश, सफलता एवं कीर्ति प्राप्त होती है।

शुक्र की मुद्दादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

शुक्र में शुक्र

१,४,७,१०,५,६,९ या १२ वें भाव में बलवान् होकर शुक्र बैठा हो तो शुक्र मुद्दादशा में शुक्र के अन्तर में जातक विविध भोगों का भोग करता है, उसकी कई इच्छाएँ इस दशा में आकर पूरी होती हैं। इसी दशा में जातक को कन्या सन्तान, लेखन कार्य में सफलता, पुरस्कार तथा राज्यव्यापी कीर्ति भी प्राप्त होती है। नीच, अस्त या वक्री शुक्र हो तो राज्य भय, आर्थिक चिन्ता, बन्धु विरोध, स्त्री मरण तथा सन्तान बाधा उपस्थित होती है।

शुक्र में सूर्य

इस दशा में जातक कलह, सन्तोष एवं दरिद्रता से घिरा रहता हैं। नित्य नई समस्याएँ उसके सामने उपस्थित होती हैं और वह उनका निराकरण करते-करते थक जाता है। यदि सूर्य शुभ, उच्च या कारक ग्रह हो तो धन लाभ, विदेश यात्रा, व्यापार वृद्धि, पितृ सुख एवं मांगलिक कार्य होते हैं।

शुक्र में चन्द्र

शुक्र में चन्द्र की दशा जातक के लिए सौभाग्यदायक होती है। वह मान-सम्मान का अधिकारी बनता है, घर में कन्या का जन्म होता है, व्यापार में वृद्धि, डाक्टरी या वैद्यक के कार्य में पूर्ण सफलता तथा उच्च पद प्राप्त होता है। यदि चन्द्र ३,४,६,८,१२ वें भाव में हो तो जातक को प्रत्येक कार्य में असफलता मिलती हैं।

शुक्र में मंगल

मंगल की अन्तर्दशा में जातक नये मकान का निर्माण करता है। उसे कृषि कार्यों में सफलता मिलती है तथा पुलिस-मिलिटरी में हो तो उच्च पद प्राप्त होता है। यदि मंगल क्षीण हो तो कष्ट, धनहानि तथा आकस्मिक दुर्घटना होती है।

शुक्र में राहु

बलवान् राहु अन्तर्दशा में जातक चुनाव में विजयी होता है, सफलता

उसके चरण चूमती है तथा मंत्री पद प्राप्त करने में सफल होता है। क्षीण तथा पाप ग्रहों से दृष्ट राहु की दशा में नाना प्रकार के कष्ट भुगतने पड़ते हैं।

शुक्र में बृहस्पति

बृहस्पति की अन्तर्दशा में जातक को धन लाभ, यश प्राप्ति, मातृ-पितृ सुख तथा नित्य नये सुखद समाचार सुनने को मिलते हैं। यदि गुरु ६,८,१२ वें भाव में हो तो कष्ट एवं चोर भय होता है।

शुक्र में शनि

शनि की अन्तर्दशा में आलस्य, क्लेश, व्याधियाँ, प्रगति के मार्ग में बाधाएँ एवं धन-हानि होती है। यदि शनि कारक एवं शुभ ग्रह हो तो उक्त फल में कुछ सुधार समझना चाहिये।

शुक्र में बुध

बुध की अन्तर्दशा में जातक को साहित्यिक कार्यों द्वारा धन प्राप्ति, कीर्ति लाभ, यशागम तथा जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है। बुध नीच, अस्त, वक्री या अकारक ग्रह हो तो इस दशा में अपकीर्ति, कुख्याति एवं अल्प लाभ ही होता है।

शुक्र में केतु

शुक्र महादशा में केतु की अन्तर्दशा आने पर कलह, बन्धु वियोग, सन्तान बाधा, मांगलिक कार्यों में रुकावट तथा धन नाश होता है, परन्तु यदि केतु कारक ग्रह हो तो इस अन्तर्दशा में जातक विविध स्त्रोतों से धन संचय करता हुआ कीर्ति लाभ करता है।

ग्रह फल

सूर्य

जिस जातक की वर्ष कुण्डली के लग्न में सूर्य होता है, उसका वर्ष मानसिक परेशानियों से ग्रस्त ही रहता है। स्त्री, पुत्र तथा कुटुम्बियों से उसका मन व्यथित रहता है। वायु-पित्तादि से उसका शरीर कृश तथा क्षीण रहता है। वह पर्यटन प्रिय होता है तथा देश-विदेश में घूमने के योग बनते रहते हैं। उसका धन सदैव एक-सा नहीं रहता बल्कि उसमें ह्रास-वृद्धि होती रहती है। जातक क्रोधी, स्वाभिमानी, शूरवीर और चंचल होता है।

जिसके दूसरे स्थान में सूर्य होता है, वह अत्यन्त भाग्यशाली होता है। गौ, घोड़े आदि चतुष्पदों का उपयोग करता हुआ वह पूर्ण सुख प्राप्त करता है। उसका धन उत्तम कार्यों में व्यय होता है, परन्तु स्त्री के कारण सम्बन्धियों से उसकी कलह होती रहती है। लाभ के जितने भी उपाय वह सोचता है, निष्फल हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति अधिकतर मुख, नेत्र व कर्ण का रोगी रहता है तथा राज्यभीरुता से कार्य करने में हिचकिचाता है।

तीसरे स्थान में पड़ा हुआ सूर्य अत्यन्त प्रतापी और पराक्रमी होता है। ऐसा जातक अपने भाइयों से पीड़ित रहेगा तथा यदा-कदा तीर्थ यात्रा करता रहेगा। युद्ध, वाद-विवाद और मुकदमे आदि में वह अधिकतर विजयी रहता है तथा राज्य द्वारा उसे सुख प्राप्त होता

रहता है।

जिसकी कुण्डली में लग्न से चौथे घर में सूर्य होता है, वह वर्ष में अधिकतर विदेशवासी होता है। युद्ध, वाद-विवाद एवं मुकदमे में वह शत्रु से पराजित होता है तथा उसका अन्तःकरण सदा व्यथित रहता है। ऐसा जातक सुन्दर, पितृधन नाशक, गुप्त विद्याप्रिय तथा वाहन-सुखहीन होता है।

पाँचवें घर में पड़ा हुआ सूर्य जातक को क्रोधी एवं वंचक बना देता है। उसकी बुद्धि कुशाग्र होती है तथा शनैः शनैः धन इकट्ठा करता रहता है। वर्ष भर में उदर-व्याधि संभव है।

जिसके लग्न से छठे स्थान में सूर्य हो, वह शत्रुओं का विनाश करने वाला होता है। राजा, राज्यवर्ग और मित्रों पर अत्यधिक व्यय करता रहता है। माता के कुल द्वारा इसे तकलीफ़ मिलती है तथा चौपाये द्वारा घायल होता है। ऐसा जातक वर्ष-भर निरोगी, शत्रु-नाशक, वीर्यवान और न्यायप्रिय बना रहता है।

जिसके सातवें स्थान में सूर्य पड़ा हो, उसे स्त्री का कष्ट रहता है। उसका शरीर पीड़ित तथा मन चिन्तित रहता है। व्यापार करने पर उसे हानि उठानी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति कठोर, आत्मरत एवं राज्यवर्ग से पीड़ित रहता है।

जिसके आठवें स्थान में सूर्य होता है, वह कार्यतत्पर, चिन्तायुक्त, क्रोधी, धनी तथा धैर्यहीन होता है। विदेशी नारियों के प्रति वह सदैव लालायित रहता है तथा नशा आदि का विशेष सेवन करते रहने से उसका स्वास्थ्य खराब बना रहता है। उसका धन चोरी चला जाता है अथवा गफलत या आलस्य से नष्ट हो जाता है। गुप्तेन्द्रियों की व्याधि से यह जातक विशेष पीड़ित रहता है।

नवें स्थान का सूर्य जातक को दुष्ट स्वभाव का बना देता है। सगे भाई से पीड़ित यह सदैव चिंतित रहता है। ऐसा जातक योगी, तपस्वी, नेता, ज्योतिषी अथवा साधक होता है तथा भृत्यादि सुखों से पूरित वाहनादि का पूर्ण उपयोग करता है।

जिसके दसवें स्थान में सूर्य हो उसका श्रम राजा के द्वारा फल-दायक होता है। यह माता को पीड़ा देने वाला तथा स्वजनों से विछुड़ा रहता है। ऐसा व्यक्ति व्यवहारकुशल, राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त राज्यमन्त्री, उदार एवं ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है।

ग्यारहवें स्थान का सूर्य जातक को राजा द्वारा धन दिलाता है, तथा उसे अनायास ही सम्पत्ति प्राप्त होती है। शत्रु इससे घवराते हैं, सन्तान इसे पीड़ा पहुँचाती रहती है। ऐसा जातक धनी, बलवान, सुखी, स्वाभिमानी, सदाचारी एवं उदर-रोगी होता है।

यदि द्वादश स्थान में सूर्य हो तो जातक नेत्र रोग से पीड़ित रहता है। युद्ध अथवा वाद-विवाद में इसकी जीत रहती है। शरीर में विभिन्न पीड़ाएँ इसे तकलीफ देती हैं। ऐसा व्यक्ति अधिकतर उदासीन, मस्तक रोगी, आलसी और मित्र-द्वेषी होता है।

चन्द्रमा

यदि किसी की वर्ष कुण्डली के लग्न (मेष, वृष तथा कर्क राशि) में हो तो वह मनुष्य धनवान, कान्तिमान तथा पूर्ण आनन्द का भागी होता है। अन्यथा (लग्न, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ, मीन हो तो) वह मनुष्य धनहीन, दुर्बल, दरिद्र, मूर्ख तथा बहरा-सा होता है।

यदि दूसरे भाव में चन्द्रमा हो तो उस पुरुष को धन का विशेष लाभ होता है। शरीर से अत्यन्त सुखी रहता है, वह स्त्रियों से विलास करने में निपुण होता है। अपने कुटुम्बियों पर प्रेम रखता है। ऐसा जातक अत्यन्त सुन्दर, भोगी, परदेशप्रिय, सहनशील एवं भाग्यवान होता है।

जिसके तीसरे स्थान में चन्द्र हो तो उसे पराक्रम से धन प्राप्ति होती है। अनेक स्त्रियों से सहवास करते हुए भी वह संयमशील और समाज में सच्चरित्र माना जाता है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक, यशस्वी, प्रसन्नचित्त, आस्तिक एवं मधुरभाषी होता है। उसे सहोदर भ्राताओं से सुख मिलता है।

यदि लग्न से चौथे स्थान में चन्द्रमा हो तो वह उच्च पद का अभिलाषी होता है, उसे पुत्रों तथा स्त्री का विशेष सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति दानी, सुखी, उदार, रोग-रहित, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी एवं बुद्धिमान होता है।

यदि चन्द्रमा लग्न से पाँचवें स्थान पर हो तो वह मनुष्य उत्तम सन्तान सुख प्राप्त करता है। श्रेष्ठ रत्नादि धारण करने का विशेष शौक होता है। भूमि सुख ऐसे व्यक्ति को अनायास ही प्राप्त होता है। यह व्यक्ति ब्याज लेने-देने का कार्य करता है। ऐसा जातक निर्मल बुद्धि का, चंचल, कन्या सन्तति-प्रधान, सदाचारी एवं क्षमाशील होता है।

जिसके छठे स्थान में चन्द्रमा होता है, वह राजा का विरोध करता हुआ भी समाज में पूज्यनीय होता है। दुश्मन इससे थर्राते हैं, परन्तु ऐसा व्यक्ति मातृभक्त नहीं होता। ऐसा जातक अल्पायु, कफ प्रकृति प्रधान, खर्चीले स्वभाव वाला एवं नेत्र रोगी होता है।

सातवें स्थान का चन्द्रमा स्त्री का पूर्ण सुख देता है। उसे स्थलीय व्यापार से विशेष लाभ होता है। कृष्ण पक्ष में स्त्रियों पर उसकी आसक्ति बढ़ जाती है। मधुर भोजन का वह शौकीन होता है तथा उसकी प्रवृत्ति लोभमय होती है। शत्रुओं से वह सदैव पराजित होता है। ऐसा जातक सभ्य, नेता, विचारक, जल-यात्रा करने वाला, व्यापारी, वकील एवं स्फूर्तिमान होता है।

जिसकी कुण्डली में आठवें स्थान पर चन्द्रमा हो, वह रोगी रहता है, भयंकर व्याधियों एवं शारीरिक कष्ट उसे घेरे रहते हैं। प्रमेह एवं कफ विकार उसे बहुत परेशान करते हैं। व्यापार से उसे लाभ रहता है। ऐसा व्यक्ति वाचाल, स्वाभिमानी एवं ईर्ष्यालु स्वभाव का बन जाता है।

जिसके नवें स्थान में चन्द्रमा हो, वह समाज में आदर का जीवन व्यतीत करता है। युवावस्था में उसका भाग्योदय होता है तथा शरीर से निरोग रहता है। ऐसा जातक सम्पत्ति-सुख एवं सन्तति-सुख

प्रधान, धर्मात्मा, कार्यशील, न्यायी, चंचल, विद्वान, विद्या-व्यसनी, साहसी एवं अल्प भ्रातृवान होता है।

यदि चन्द्रमा लग्न से दसवें स्थान पर पड़ा हो तो वह व्यक्ति धार्मिक स्वभाव का होता है। उसे अपने बन्धु-बान्धवों से सुख मिलता है तथा राज्य की ओर से उसे सम्मान प्राप्त होता है। पहली सन्तान से उसे विशेष सुख नहीं मिलता। ऐसा जातक कार्यनिपुण, दयालु, व्यापारी, यशस्वी, कुल दीपक एवं लोक हितैषी होता है।

ग्यारहवें स्थान का चन्द्रमा जातक को राजा की ओर से प्रतिष्ठा, अधिकार एवं सम्मान दिलाता है। उसके घर में लक्ष्मी का चिरवास रहता है। वह जो भी सोचता है, वह प्रायः पूर्ण नहीं होता। कन्या सन्तति-प्रधान, जातक गुणी, सुखी लोकप्रिय, दीर्घायु, परदेशप्रिय एवं राज्य कार्यदक्ष होता है।

जिसके बारहवें स्थान में चन्द्रमा रहता है, उसे सदैव शत्रु का भय बना रहता है। नेत्रादि विकार इसे विशेष होते हैं। इसका धन सदैव मांगलिक कार्यों में व्यय होता है। माता के द्वारा इसे कष्ट मिलता है। स्त्रियों से यह स्थायी मैत्री नहीं कर सकता तथा इसके मनोरथ भी सफल नहीं होते। ऐसा जातक चंचल, क्रोधी, मृदुभाषी और खर्चीले स्वभाव का होता है।

मंगल

जिसकी वर्ष कुण्डली में मंगल हो उसे लोहा तथा अग्नि से भय रहता है। उसका मन सदैव चिन्तित रहता है। स्त्री और पुत्रों द्वारा वह सदैव कष्ट पाता है तथा उसके कार्य कभी भी पूरे नहीं होते। ऐसा व्यक्ति क्रूर, साहसी, विचाररहित, गुप्त रोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

जिसके दूसरे स्थान पर मंगल पड़ा हो, वह धनहीन होता है, कुटुम्ब से क्लेश पाता रहता है एवं युद्ध, मुकदमे आदि में सदैव पराजित रहता है। ऐसा जातक कटुभाषी, निर्बुद्धि, पशुपालक एवं नेत्र-कर्ण रोगी होता है।

तीसरे स्थान का मंगल अनिष्टकारी होता है। जातक सदैव बीमार और चिड़चिड़ा-सा रहता है। धन के व्यय करने के सौ रास्ते होते हैं, पर आय सीमित ही रहती है। यह विपत्तियों पर विपत्तियों को सहन करता हुआ वर्ष बिताता है। ऐसा जातक शूरवीर, साहस गुण प्रधान, बन्धुहीन, भ्रातृ कष्ट कारक एवं कटुभाषी होता है।

यदि चौथे स्थान में मंगल हो तो वाहन सुख विशेष रहता है। उस वर्ष राज्य में यह विशेष तरक्की करता है। नौकरी ऐसे व्यक्ति के लिए लाभदायक होती है। ऐसा व्यक्ति प्रवासी, संततिवान, अल्प मृत्यु को प्राप्त होने वाला, बन्धु-विरोधी और कृषि-कार्यों में निपुण होता है।

जिसके पाँचवें स्थान में मंगल पड़ा होता है, उसकी जठराग्नि बहुत तेज होती है। पाप कार्य करने में ऐसा व्यक्ति निपुण होता है। क्रोध इसे बहुत आता है और क्रोध में यह सब कुछ कर डालने को उतारू हो जाता है।

जिसके छठे स्थान में मंगल हो, वर्ष में वह शत्रुओं को नीचा दिखाता है। इसे मामा का सुख नहीं मिलता। ऐसे जातक को धन भी बहुत अधिक मिलता है, पर वह खर्च भी अनाप-शनाप करता है, जिससे उसे सदैव धन की कमी बनी ही रहती है। ऐसा व्यक्ति प्रबल जठराग्नि वाला, धैर्यवान, कुलवन्त, कृषि, पुलिस-अफ़सर, दाद का रोगी, क्रोधी, रक्त विकारी एवं शत्रुहन्ता होता है।

सातवें स्थान का मंगल व्यक्ति को एक जगह टिकने नहीं देता। शत्रुओं से वह सदैव पीड़ित रहता है। ऐसा व्यक्ति वातरोगी, राजभीरु, कटुभाषी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन एवं ईर्ष्यालु होता है।

जिसकी वर्ष कुण्डली में आठवें स्थान पर मंगल पड़ा होता है, उसका शुभ ग्रह भी बुरे व्यवहार के कारण शत्रु बना लेता है। इसके प्रत्येक कार्य में विघ्न, बाधाएँ उपस्थित होती ही रहती हैं। ऐसा व्यक्ति मद्यप, व्यसनी, कटुभाषी, नेत्र रोगी, संकोची एवं धन-चिन्ता युक्त होता है।

नवम स्थान पर मंगल मनुष्य को धनी और समाज में श्रेष्ठ होने

का अवसर प्रदानकरता है। उसकी बुद्धि तीक्ष्ण, परन्तु पाप-प्रधान होती है। वह जितना परिश्रम करता है, उतना फल उसे प्राप्त नहीं होता। ऐसा व्यक्ति व्यर्थ का द्वेष रखने वाला, अभिमानी, क्रोधी, अधिकारी, नेता, यशस्वी एवं भ्रातृविरोधी होता है।

दसवाँ मंगल जातक को समाज में श्रेष्ठ एवं कुल दीपक बना देता है। लोग उसका आदर करते हैं, वह अपनी प्रतिभा से सबको चमत्कृत कर देता है। ऐसा व्यक्ति धनवान, गुणी, श्रेष्ठ, कवि, सुखी, यशस्वी, उत्तम वाहनादि से सुख भोगने वाला तथा सन्तति कष्ट वाला होता है।

जिसकी कुण्डली में लग्न से ग्यारहवें भाव में मंगल हो तो वह शत्रुओं का नाश करने वाला होता है। वह अभागा होते हुए भी अपने-आपको भाग्यवान समझता है। गाय, घोड़े रथादि के व्यापार में इसे विशेष लाभ होता है। ऐसा जातक न्यायप्रिय, साहसी, झगड़ालू, मूर्ख क्रोधी, दम्भी और धैर्यवान होता है।

जिस जातक के बारहवें स्थान में मंगल हो, उसका धर्म नष्ट हो जाता है। वह बुरा काम करने पर भी लांछन पाता है तथा झूठे अपवाद से व्यथित रहता है। चोरों, ठगों तथा बेईमानों से यह छला जाता है। ऐसा व्यक्ति स्त्री नाशक, नेत्र रोगी, ऋषि, झगड़ालू, मूर्ख तथा नीच प्रकृति का साहसी होता है।

बुध

जिस जातक के लग्न में बुध होता है। वह अपने पूरे वर्ष को व्यवस्थित करता हुआ उन्नति की ओर अग्रसर होता है। उसकी बुद्धि श्रेष्ठ होती है और धार्मिक कार्यों में उसकी रुचि होती है। उसका शरीर स्वर्ण के समान कांति वाला और वह प्रसन्नचित्त प्राणी होता है। दीर्घायु, गणितज्ञ, विनोदी, उदार, सरल हृदय, विद्वान और मिष्ट-भाषी होता है।

जिसकी कुण्डली में दूसरे स्थान पर बुध होता है, वह बुद्धिमान, तथा परिश्रमी होता है। सभा आदि में भाषण के द्वारा वह जनता को

मन्त्रमुग्ध कर सकता है। ऐसा व्यक्ति दयालु, वकील अथवा नेता एवं मितव्ययी, संग्रह करने वाला, सत्कार्य-प्रवीण और साहसी होता है।

तीसरे स्थान में बुध रखने वाला व्यक्ति व्यापारी से मित्रता स्थापित करने वाला होता है। व्यापारादि कार्यों में इसकी बहुत रुचि होती है तथा स्वतंत्र चेता एवं निर्भीक पुरुष के साथ इसकी मित्रता स्थायी होती है। नम्र स्वभाव और उदार हृदय वाला यह जातक कार्य-दक्ष तथा परिश्रमी होता है।

चौथे स्थान में यदि बुध हो तो व्यक्ति बुद्धिमान होता है। राज्य में उसकी प्रतिष्ठा तथा मित्रों में सम्मान होता है। ऐसा व्यक्ति अपने पिता के धन से वंचित रहता है, पर वाहन-सुखी, भाग्यवान दानी, स्थूल देही, आलसी, लेखक, नीतिवान, बन्धु-बान्धव प्रेमी होता है।

जिसके पाँचवें स्थान पर बुध होता है, उसे सन्तान सुख का अभाव रहता है। यदि होता भी है तो वृद्धावस्था में पुत्र-लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति घोर स्वार्थी तथा छल-कपट से पूर्ण होता है। जो धीरे-धीरे स्थायी अर्थ संचय कर लेता है।

यदि छठे स्थान में बुध हो तो उसका अन्य मनुष्यों के साथ विरोध रहता है। साधु-सन्तों में मारण, मोहन एवं वशीकरण विद्या सीखने में काफी धन व्यय कर डालता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों की बिना सहायता लिए अपने पुरुषार्थ से धन इकट्ठा करता है। यह जातक वादी, कलह-प्रिय, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी एवं स्त्रियों को प्रिय लगने वाला होता है।

यदि कुण्डली में सातवें स्थान पर बुध पड़ा हो तो वह स्त्री के लिए सुखदायक होता है, उसका शरीर स्वर्ण-कान्तिवत् चमकता रहता है। ऐसा जातक सुन्दर, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, धार्मिक, अल्प वीर्यवान और उदार होता है।

आठवें स्थान का बुध व्यक्ति को लम्बी उम्र देता है। यह देश तथा विदेश में भी ख्याति-लाभ करता है। यह व्यापार से लाभ कमाता है,

तथा एक साथ कई स्त्रियों से रमण करता है। ऐसा व्यक्ति अभिमानी, सुन्दर, कृषि-कार्यों में निपुण, कवि, न्यायाधीश, वक्ता, वकील एवं धर्मात्मा स्वभाव का होता है।

यदि नवें स्थान में बुध हो तो वह मनुष्य धार्मिक-कार्यों में रुचि लेने वाला, बुद्धिमान, तीर्थादि करने वाला तथा कुल दीपक होता है। रण में शत्रु इसके सामने टिक नहीं सकते तथा दुर्जनों का यह निर्ममता से विनाश करता है।

जिसके दसवें स्थान में बुध हो, वह पिता द्वारा अर्जित धन प्राप्त करता है। नीति तथा दण्डशास्त्र पर उसका असाधारण अधिकार रहता है। न्याय करने में निपुण होता है। ऐसा व्यक्ति अल्पभाषी, विद्वान, लोकमान्य, व्यवहारकुशल, कवि, लेखक, मातृ-पितृ भक्त एवं जमींदार तुल्य होता है।

ग्यारहवें भाव में बुध पड़ा हो तो वह व्यक्ति को खूब सम्पत्ति देता है। ऐसा व्यक्ति दीर्घायु, सदाचारी, धनवान, प्रसिद्ध, विद्वान, कवि, लेखक, सम्पादक, न्यायी, गायनप्रिय, कुल नायक, पुत्रवान, विचारवान एवं शत्रुनाशक होता है।

जिसके बारहवें स्थान में बुध हो तो वह विद्वान होते हुए भी आलसी रहता है। वकील, धर्मात्मा, कुलीन, गुणी और शास्त्रों का जानकार ऐसा व्यक्ति सभी बन्धुओं को हर प्रकार से सन्तुष्ट रखता है।

गुरु

जिसके वर्ष में लग्न में बृहस्पति होता है, वह अपने गुणों से सब जगह आदर की दृष्टि से देखा जाता है। उसका अधिकांश धन पर्यटन में व्यय होता है। ऐसा व्यक्ति ज्योतिष कार्य में रुचि रखने वाला, दीर्घ आयु भोगने वाला, कार्य कुशल, तत्पर, स्पष्ट वक्ता, सुन्दर, सुखी विनीत, धनी, मृदुभाषी, पुत्रवान एवं धर्मात्मा होता है।

जिसके दूसरे स्थान पर गुरु होता है वह कवि हृदय होता है। उसमें राज्य-संचालन करने की शक्ति होती है तथा वह अपने बकवादी स्वभाव से कई बार हताश, निराश और पराजित भी होता है। ऐसे व्यक्ति

को कठिनता से द्रव्य प्राप्ति होती है तथा प्रयत्न करने पर भी उसके पास धन नहीं टिकता। यह जातक सुन्दर, राज्यमान्य, सुकार्यरत, पुण्यात्मा, भाग्यवान, दीर्घायु, पर द्रव्य पीड़ित होता है।

यदि तीसरे स्थान पर गुरु हो तो वह जातक को नीच स्वभाव का बना देता है। उसे सहोदर भ्राताओं का सुख तो मिलता है तथा मित्रता स्थापित करता हुआ भी कृतघ्न स्वभाव का होता है। भाग्यवान होते हुए भी ऐसे व्यक्ति को कठिनता से द्रव्य की प्राप्ति होती है। यह पुरुष मन्दाग्नि पीड़ित, लेखक, प्रवासी, योगी, आस्तिक, कामी, स्त्रियों के पीछे घूमने वाला, विदेशप्रिय और पर्यटनशील होता है।

यदि गुरु चौथे स्थान पर हो तो उसे वाहनादि का पूर्ण सुख मिलता है। ऐसा जातक भोगी, सुन्दर देही, उद्योगी, सन्तान-रोचक लोकमान्य, मातृ-पितृ भक्त, यशस्वी और व्यवहारकुशल होता है।

जिसके पाँचवें स्थान में गुरु पड़ा हो, उसका स्वभाव विलासी एवं आरामप्रिय होता है। यह श्रेष्ठ वक्ता, कल्पनाप्रिय कवि एवं लेखक होता है। पुत्र के कारण इसे धन-प्राप्ति होती है, परन्तु वर्ष में इसे कठोर संघर्षों के बीच में से गुजरना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति आस्तिक ज्योतिषी, लोकप्रिय, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, सन्ततिवान एवं नीति-विशारद होता है।

छठे स्थान में गुरु रखने वाला जातक रोगी रहता है। शत्रुओं का विनाश करता हुआ मुकदमे आदि में जीतता रहता है। भार्या का उसे पूर्ण सुख प्राप्त होता है, किन्तु मामा का सुख उसे नहीं मिलता। उसकी माता भी सदैव रोगिणी रहती है। ऐसा जातक विवेकी, प्रसिद्ध विद्वान, सुकर्मरत, उदार और प्रतापी होता है।

जिसके सातवें स्थान में गुरु हो उसकी बुद्धि और विभूति श्रेष्ठ होती है। वह स्त्रियों का अधिक प्रेमी नहीं होता यद्यपि वह स्वयं सुन्दर तथा बलवान होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान, प्रधान, वक्ता, गुणज्ञ, गुणी जनों का आदर करने वाला, चित्रकार, नम्र, प्रवासी और निश्चय रूप से परस्त्रीगामी होता है।

आठवें स्थान में पड़ा हुआ गुरु दीर्घायु प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति अधिक समय तक पिता के घर में नहीं रहता। यदा-कदा उसका शरीर रोगों से भी जूझता रहता है, फिर भी वह शील-सम्पन्न, सुखी, शान्त, मधुभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, लोभी, गुप्त-रोगी एवं मित्रों का धन खर्च करने वाला होता है।

जिसके नवें स्थान में वृहस्पति होता है, वह सुन्दर गृह का निर्माण करता है। ऐसा व्यक्ति राजा का प्रिय एवं बन्धु-बान्धवों पर स्नेह रखने वाला होता है। आलसी होने के कारण इसके कई कार्य शुरू किये जाने पर भी अधूरे रहते हैं। ऐसा व्यक्ति यशस्वी, भक्त, वेदान्ती, भाग्यवान, विद्वान, पुत्रवान एवं कई विषयों का थोड़ा-बहुत जानकर होता है।

दसवें स्थान का वृहस्पति जातक को भवन-प्रेमी एवं भूमिपति बना लेता है। वह चित्रकला में निपुण होता है तथा उसकी कीर्ति पूर्वजों से भी बढ़कर होती है। यह व्यक्ति अपने पुत्रों से सन्तुष्ट नहीं रहता। ऐसा जातक सत्कर्मी, सदाचारी, ऐश्वर्यवान, चतुर, न्यायी, ज्योतिष-कला प्रवीण, स्वतन्त्र विचारक, धनी तथा माता-पिता का भक्त होता है।

जिसके ग्यारहवें स्थान में गुरु होता है, वह ऐश्वर्यवान, पिता का धन बढ़ाने वाला एवं दक्षता से व्यापार बढ़ाने वाला होता है। परोपकार में वह सदैव प्रस्तुत रहता है तथा उसका धन सत्कार्यों में ही व्यय होता है। ऐसा व्यक्ति निरोगी, व्यवसायी, धनिक, विद्वान, बहु स्त्री युक्त एवं पराक्रमी होता है।

जिस जातक के बारहवें स्थान में वृहस्पति होता है, वह आलसी, कम खर्च करने वाला, दुष्ट स्वभाव का लोभी पुरुष होता है। ऐसा व्यक्ति शास्त्रों में रुचि रखने वाला होते हुए भी उसकी निन्दा करता है। इसका धन उत्तम कार्यों में व्यय नहीं होता और न यह बुद्धि का ही उपयोग करता है। यह योगाभ्यासी, सम्पादक, सुखी और निश्चित स्वभाव का होता है।

शुक्र

जिसके लग्नस्थान में शुक्र पड़ा होता है, वह वर्ष भर श्रेष्ठ रमणियों के साथ विहार करने को लालायित रहता है तथा उच्च कर्मों को करता हुआ उत्तम सुखों का भोग करता है। ऐसा व्यक्ति दीर्घ आयु वाला, स्वस्थ, सुखी, मृदु एवं मधुरभाषी, विद्वान, कामी तथा राज्य कार्य में दक्ष होता है।

जिसके दूसरे स्थान में शुक्र हो, वह प्रियभाषी तथा बुद्धिमान होता है। स्त्री की कुण्डली हो तो वह सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी पद प्राप्त करने की अधिकारिणी होती है। सुन्दर वस्त्रों का शौकीन ऐसा पुरुष बहु रमणी प्रिय होता है। यह मिष्टान्न भोजी, लोकप्रिय, हीरों-पन्नों की परख करने वाला, कवि, दीर्घ जीवी, साहसी एवं भाग्यवान होता है।

जिसकी कुण्डली में तीसरे स्थान पर शुक्र होता है, वह स्त्रियों का प्रेमी नहीं होता। लाभ होने पर भी वह सन्तुष्ट नहीं रहता। साहसी होते हुए भी कार्य पड़ने पर घबरा जाता है। ऐसा व्यक्ति कृपण, आलसी, चित्रकार, भाग्यवान, बिद्वान और यात्रा करने का शौकीन होता है।

जिसके चौथे स्थान में शुक्र हो, वह अपने साथियों से आगे बढ़ जाता है तथा उच्च पद प्राप्त करता है। इस व्यक्ति के अनेक मित्र होते हैं। घर सभी वस्तुओं से पूर्ण भरा रहता है। ऐसा व्यक्ति दीर्घायु, परोपकारी, आस्तिक व्यवहारकुशल होता है।

पांचवें स्थान पर खड़ा हुआ शुक्र शत्रुनाशक होता है। अल्प परिश्रम से ही इसके कार्य सम्पन्न होते हैं। ऐसा व्यक्ति कवि-हृदय, सुखी, भोगी, न्यायवान, आस्तिक, उदार और व्यवसायी होता है।

जिसके छठे स्थान में शुक्र होता है, उसके नित-नये शत्रु पैदा होते हैं। ठीक प्रकार से कार्य किये जाने पर भी वह सफल नहीं हो पाता। मित्रों द्वारा इसका आचरण नष्ट हो जाता है और गलत कार्यों में धन व्यय कर लेता है। ऐसा व्यक्ति पिता, गुरु आदि के सुख से

वंचित रहता है। यह स्त्री सुखहीन, दुराचारी, बहुमूत्र रोगी, दुखी, गुप्तरोगी तथा मितव्ययी होता है।

जिसके सातवें स्थान में शुक्र होता है, उसके कटि भाग में सदैव पीड़ा रहती हैं। यह बड़ा विलासी, प्रवासी तथा अल्प उद्योगी होता है। ऐसा व्यक्ति उदार, लोकप्रिय, धनिक, व्यर्थ की चिन्ता करने वाला, व्यभिचारी, चंचल, विलासी एवं स्त्री से सुखी होता है।

आठवें स्थान में यदि शुक्र हो तो वह व्यक्ति वाहनादि का पूर्ण सुख लाभ करता है। इसके कार्य बड़े कष्ट से सम्पन्न होते हैं। इसके ऊपर हर समय कर्जा चढ़ा रहता है। ऐसा जातक रोगी, क्रोधी, चिड़चिड़ा, दुःखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील और पराई स्त्रियों में धन व्यय करने वाला होता है।

यदि लग्न स्थान से नवें स्थान में शुक्र हो तो जातक अत्यन्त धनवान होता है। धर्मादिक कार्यों में इसकी रुचि बहुत बढ़ी हुई होती है। सगे भाईयों से इसे बहुत सुख मिलता है और अपना जीवन सुख-पूर्वक व्यतीत करता है। ऐसा व्यक्ति आस्तिक, गुणी, प्रेमी, राजप्रेमी, तथा मौजी स्वभाव का होता है।

जिसके दसवें स्थान में शुक्र होता है, वह व्यक्ति लोभी और कृपण स्वभाव का होता है। ऐसा व्यक्ति विलासी, धनवान, विजयी, हस्तकार्यों में रुचि लेने वाला एवं शक्की स्वभाव का होता है।

जिसके जन्म लग्न से ग्यारहवें स्थान में शुक्र होता है, वह प्रत्येक कार्य में लाभ प्राप्त करता है। सुन्दर, सुशील, कीर्तिमान, सत्य-प्रेमी, गुणवान, भाग्यवान, धनवान, वाहन-सुखी, ऐश्वर्यशाली, लोकप्रिय, जौहरी, कामी तथा पुत्र-सुख भोगता हुआ ऐसा व्यक्ति वर्ष में कीर्ति-मान स्थापित करता है।

यदि बारहवें स्थान में शुक्र हो तो उसके घर में द्रव्य की कमी नहीं रहती। ऐसा व्यक्ति स्थूल, परस्त्रीरत, आलसी, गुण को पहचानने वाला, विद्याप्रेमी, मितव्ययी तथा शत्रुनाशक होता है।

शनि

जिसकी वर्ष कुण्डली में शनि होता है, वह सम्पत्तिशाली, काम-लोलुप, शोक करने वाला तथा मन्द दृष्टि वाला होता है। वह स्वयं रुग्ण रहता हुआ भी शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है। यदि तुला तथा मकर लग्न हो तो शनि अत्यन्त शुभ फल देता है, परन्तु इसके अतिरिक्त अन्य राशियों का लग्न हो तो शनि अपनी दशा में हीन फल ही देता है।

दूसरे भाव में शनि हो तो वह सोने का संग्रह करने वाला होता है। सुख की खोज में वह इधर-उधर फिरता रहता है, पर उसके मन को शान्ति नही मिलती। ऐसा व्यक्ति मुख रोगी, साधु-संन्यासियों को कटुवचन कहने वाला तथा भ्रातृ-वियोगी होता है,

जिससे तीसरे स्थान में शनि होता है, वह सुन्दर, प्रभावोत्पादक भाषण करने वाला, पर उद्योगहीन होता है। इसका भाग्य विघ्नों से घिरा रहता है। ऐसा जातक निरोगी, विद्वान, मल्ल-कुश्ती लड़ने का शौकीन, विवेकी तथा शत्रुओं का नाश करने वाला होता है।

जिसके चौथे स्थान पर शनि पड़ा हो, उस व्यक्ति को पिता का धन प्राप्त नहीं होता। बन्धु-बान्धवों की ओर से भी उसे कष्ट ही मिलता है, कुल की हानि होती है तथा ऐसा व्यक्ति माता-पिता को दुःख देने वाला, बलहीन, अपयशी, शीघ्र क्रोध करने वाला, कपटी, धूर्त तथा उदासीन होता है।

पाँचवें स्थान पर पड़ा हुआ शनि जातक को सन्तान का अभाव देता हुआ बुद्धि को कुण्ठित रखता है। उसकी सम्पत्ति चंचल रहती है। ऐसा व्यक्ति चोर, नास्तिक, मित्रद्रोही, उदर-पीड़ा से ग्रस्त, भ्रमणशील, विद्वान, आलसी एवं चंचल होता है।

यदि छठे स्थान में शनि हो तो वह बलिष्ठ और शत्रुओं का दमन करने वाला होता है। चौपाये रखने का उसे शौक होता है। ऐसा व्यक्ति भोगी, कण्ठरोगी, कवि, जाति-विरोधी, आचार-व्यवहार के नियमों से हीन, योगी, श्वास और दमे आदि बीमारियों से

पीड़ित रहता है।

यदि सातवें स्थान में शनि पड़ा हो तो उसका धन स्थायी रहता है। स्त्री तथा पुत्र के रोगों से वह सदैव पीड़ित रहता है। किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के पश्चात् हिचकिचाता रहता है। उसकी प्रवृत्ति लोभी होती है। ऐसा जातक क्रोधी, नीच, भ्रमणप्रिय, आलसी और स्त्री का भक्त होता है।

आठवें स्थान का शनि व्यक्ति के हृदय को संकुचित बना देता है। अपने भाईयों तथा स्वजनों से अकारण ही वैर बनाये रहता है। ऐसा व्यक्ति स्थूल शरीरी, आलसी और धूर्त होता है। वाचालता, डरपोकपन, धूर्तता और उदारता उसके विशेष गुण होते हैं।

जिसके नवें स्थान में शनि हो, वह कठोर बुद्धि वाला होता है, परन्तु स्वभाव उसका मृदु होता है। योग-वैराग्य आदि शास्त्रों पर उसकी श्रद्धा होती है। रजोगुण प्रधान ऐसा व्यक्ति क्षुद्र बुद्धि के कारण मित्रों तथा बन्धुओं के व्यंग-बाणों से दुःखी रहता है। यह जातक रोग पालने वाला, भ्रमणशील, कृश देही, भीरु, धर्मात्मा, मातृहीन तथा शत्रुओं का नाश करने वाला होता हैं।

जिस जातक के दसवें स्थान में शनि होता है, वह अधिकार के घमण्ड से नीच कार्य में भी प्रवृत्त हो जाता है। वर्ष में उसका सुख धीरे-धीरे बढ़ता है। जीविका अल्प और युद्ध में विजयश्री मिलती है। ऐसा व्यक्ति नेता, न्यायी, राजरोगी, अधिकारी, चतुर, महत्त्वाकांक्षी, परिश्रमी तथा उदर विकार से पीड़ित रहता है।

जिसके ग्यारहवें स्थान में शनि हो उसके पिता द्वारा अर्जित धन नष्ट हो जाता है तथा वह अप्रत्याशित आपत्ति से सदैव दुखी रहता है, परन्तु अर्जित धन को वह सुरक्षित रख पाता है। ऐसा जातक प्रपंची, उत्कट वीर, दीर्घायु, क्रोधी, शिल्पी, व्यवसायी, विद्वान, गुणीजनों का आदर करने वाला, रोगहीन तथा सन्तान की ओर से दुखी होने वाला होता है।

यदि किसी की कुण्डली के बारहवें स्थान में शनि पड़ा हो तो वह

व्यक्ति निर्लज्ज तथा छोटी-छोटी आँखों वाला होता है। विदेश-यात्रा करने में विशेष रुचि लेता हुआ भी यह व्यक्ति उन्माद का रोगी, अपव्ययी, कटुभाषी, दुष्ट, अविश्वासी तथा मामादि को कष्ट देने वाला होता है।

राहु

जिसके वर्ष लग्न में राहु होता है, वह शत्रुओं का नाश करने वाला तथा स्वार्थी स्वभाव का होता है। ऐसा व्यक्ति किसी के संरक्षण में स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करने में असमर्थ होता है। ऐसा व्यक्ति अल्प सन्तान वाला, मस्तक रोगी, नीचकर्म में तत्पर, दुर्बल तथा संसार से विरोध रखने वाला होता है।

दूसरे स्थान पर यदि राहु हो तो वह कुटुम्ब का नाश करने वाला होता है। झूठ बोलने वाला, कटुभाषी तथा निर्भय स्वभाव का ऐसा व्यक्ति धन की वृद्धि और रक्षा करने वाला होता है।

जिसके तीसरे स्थान में राहु हो तो वह वर्ष में अत्यन्त बलिष्ठ रहता है। ऐसा व्यक्ति दृढ़ विवेकयुक्त, प्रवासी, दुःखों का विनाश करने वाला, विद्वान एवं व्यवसायी होता है।

चौथे स्थान में पड़ा हुआ राहु माता को हानि पहुँचाता है पर यदि चतुर्थ भाव मेष, कर्क, कन्या और मिथुन राशि का हो और उसमें राहु पड़ा हो तो श्रेष्ठ फल देता है। ऐसा व्यक्ति क्रूर स्वभाव वाला, उदर रोगी, अल्पभाषी तथा असन्तोषी होता है।

जिसके पाँचवें स्थान में राहु होता है, उसे पुत्र-प्राप्ति होती रहती है। इसकी स्त्री वर्ष भर बीमार रहती है अतः उस ओर से यह चिंतित ही रहता है। ऐसा व्यक्ति मतिमन्द, कुल-धन नाशक, भाग्यवान, कार्य-कर्ता तथा शास्त्रप्रिय होता है।

छठे स्थान का राहु विधर्मियों द्वारा लाभ उठाता है। बलवान्, धैर्यवान तथा वीर्यवान होता हुआ भी ऐसा व्यक्ति कमर दर्द से पीड़ित रहता है। यह जातक बड़े-बड़े कार्य करने वाला, अरिष्टनाशक, पराक्रमी एवं शत्रुओं का नाश करने वाला होता है।

जिसके सातवें स्थान में राहु हो उसका अन्तःकरण अग्नि के समान सदा प्रज्जवलित रहता है। लोग उसकी निन्दा करते नहीं थकते, चाहे वह कितना ही अच्छा काम क्यों न करे। इसे व्यापार से हानि पहुँचती है। वह व्यक्ति भ्रमणशील, वात रोगी, दुष्कर्म करने वाला, चतुर, लोभी एवं बुरे आचरण वाला होता है।

आठवें स्थान में राहु रखने वाला कठोर परिश्रमी होता है। उदर में वायुगोला तथा रक्तगुल्म आदि की बीमारियाँ उसे सदैव सताती रहती हैं। इसे पिता की सम्पत्ति प्राप्त नहीं होती तथा कुटुम्बियों से एकांतवास करता है। विद्वानों तथा बुद्धिमानों में इसकी प्रशंसा होती है। ऐसा नर पुष्ट देही, गुप्त रोगी, बकवाद करने वाला, कामी स्वभाव का होता हैं।

जिसके नवें भाव में राहु होता है, वह अपने सदगुणों से सबको प्रसन्न रखता है। तीर्थों आदि का प्रेमी तथा दयालु स्वभाव का यह जातक अपने कुटुम्ब का कुशलता से पालन-पोषण करता है। ऐसा व्यक्ति वात रोगी, प्रवासी, परिश्रमी, दुष्ट बुद्धि तथा भाग्योदय से रहित होता है।

दसवें स्थान में पड़ा हुआ राहु मनुष्य को नीच कर्मरत बना देता है। वह व्यसनों का शौकीन तथा क्रूर कार्य करने में तत्पर रहता है। बुरे व्यक्तियों की मित्रता करने से जाति तथा समाज में इसे आदर नहीं मिलता। ऐसा व्यक्ति सुन्दर स्त्रियों का भोग करने वाला, वाचाल, अनियमित कार्यकर्ता, सन्तति-क्लेशी तथा मितव्ययीं होता है, परन्तु यदि इस भाव में राहु चन्द्रमा के साथ पड़ा हो तो राजयोग बनता है।

यदि राहु ग्यारहवें स्थान पर हो तो उस जातक को सदैव नीच कार्य वाले लोगों से द्रव्य-प्राप्ति होती है। नौकरों के साथ भ्रमण करने वाला यह व्यक्ति परिजनों का साथ छोड़कर धूर्तों से मित्रता रखता है। पुत्रों का सुख इसे प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति मन्दमति, लाभहींन, परिश्रम करने वाला, अरिष्टनाशक तथा अपने कार्य में चौकन्ना रहने वाला होता है।

बारहवें स्थान में यदि राहु हो तो वह व्यक्ति पसलियों के दर्द से पीड़ित रहता है। उद्योग करने पर भी ऐसे व्यक्ति के कार्य सिद्ध नहीं होते। सज्जनों से विरोध रखता हुआ यह व्यक्ति दुष्टों से मित्रता रखता है। ऐसा व्यक्ति विवेकहीन, मतिमन्द, परिश्रमी, फिजूल खर्च करने वाला, चिन्ताशील एवं कामी होता है।

केतु

जिसकी वर्ष कुण्डली में लग्न में केतु हो, उससे बन्धु-बान्धव परेशान रहते हैं। इसका मन सदैव अशान्त रहता है तथा दुर्जनों से भयभीत रहता है। इसके शरीर में वायु-सम्बन्धी अनेक व्याधियाँ होती हैं। ऐसा व्यक्ति भीरु, चंचल स्वभाव का तथा मूर्ख होता है, परन्तु यदि वृश्चिक लग्न हो और उसमें केतु पड़ा हो तो जातक धनी, परिश्रमी तथा सुख उठाने वाला होता है।

यदि दूसरे स्थान में केतु हो तो जातक मुख रोगी होता है। इसे पिता का धन कठिनता से प्राप्त होता है, उसका आदर अल्प होता है, परन्तु यदि यह भाव मेष, मिथुन या कन्या राशि पर हो तो वह व्यक्ति अत्यन्त सुखी होता है।

तीसरे स्थान में केतु हो तो जातक शत्रुओं का नाश करने वाला, धन भोग एवं ऐश्वर्य का भोग करने वाला होता है। इसके दिल में चिन्ता अकारण ही बनी रहती है और उससे पीड़ित रहता है। भूत-प्रेतों का भक्त, यह जातक बकवादी और चंचल स्वभाव का होता है।

यदि चौथे स्थान पर केतु हो तो वह व्यक्ति माता और मित्र के सुख से वंचित रहता है। उसकी पैत्रिक सम्पत्ति नष्ट हो जाती है तथा अपने घर में ही वह अधिक दिनों तक नहीं टिक पाता। यदि केतु उच्च हो तो यह बान्धवों को सहायता पहुँचाने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति निरुत्साही तथा निरुद्यमी होता है।

पंचम स्थान में केतु हो तो उसके सगे भाई ही उसे पीड़ा पहुँचाते हैं। वायु रोग से वह व्यथित रहता है तथा उल्टे-सीधे कार्य करने पर उसमें हानि से पीड़ा उठाता है। कम सन्तान वाला यह जातक पराक्रमी

होने पर भी दूसरों का दास बना रहता है।

जिसके छठे स्थान में केतु होता है, उसकी मामा द्वारा मानहानि होती है। चौपायों आदि के पालन में इसे सुख मिलता है। यह मन का संकीर्ण होता है। ऐसा जातक झगड़ालू, भूत-प्रेत जनित रोगों से रोगी, सुखी, निरोग एवं मितव्ययी होता है।

सातवें स्थान में केतु रहे तो उसे व्यर्थ की चिन्ता बहुत करनी पड़ती है। अल्प समय में ही उसका धन नष्ट हो जाता है। जल आदि से उसे हानि हो सकती है। स्त्री-पुत्रादि इससे पीड़ित रहते हैं तथा मन सदैव अशान्त बना रहता है। सातवाँ स्थान वृश्चिक राशि का हो, तो केतु बहुत लाभदायक होता है।

जिसके आठवें स्थान में केतु हो, वह व्यक्ति बवासीर आदि रोगों से पीड़ित रहता है। वाहनादि से गिरकर मृत्यु हो जाने का भय रहता है। धन की क़मी रहती है। ऐसा जातक दुष्टबुद्धि, तेजहीन, स्त्रीदोषी एवं चालाक होता है, किन्तु यदि आठवें स्थान का केतु वृश्चिक कन्या और मेष राशि पर हो तो उस जातक की सम्पत्ति बढ़ती है।

नवें स्थान में केतु होने से भाग्य बढ़ाने वाला होता है। उसका दुःख दूर हो जाता है, नीच कर्मरत पुरुषों से उसका धन बढ़ता है। उसे अपने भाइयों से सदैव भय बना रहता है। वह परोपकार अथवा दान करता भी है तो लोग उसकी हँसी उड़ाते हैं।

दसवें स्थान में केतु हो तो वह भाग्यवान तथा कष्टमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है। उसे पिता का सुख नहीं के बराबर मिलता है। यदि नवें स्थान पर कन्या या वृश्चिक राशि हो तो केतु शत्रुओं का नाश करने वाला होता है।

ग्यारहवें स्थान में केतु होने से वह जातक को सभी प्रकार का लाभ देता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान, विद्वान, उत्तम गुणों से विभूषित तथा तेजस्वी होता है। उसकी सन्तान अभागी होती है तथा वह उदर रोग से पीड़ित रहता है।

जिसके बारहवें स्थान में केतु हो, वह जातक उच्च पद प्राप्त करने

वाला तेजस्वी व्यक्ति होता है। श्रेष्ठ कर्मों में उसका धन व्यय होता है। मुकदमे आदि में शत्रुओं के विरुद्ध उसकी जीत होती है। वह व्यक्ति गुप्तेन्द्रियों तथा नेत्रों की पीड़ा से व्यथित रहता है। ऐसा जातक चंचल, बुद्धिमान, ठग, धोखा देने वाला तथा सभी लोगों पर संदेह करने वाला होता है।

वर्षफल के लिए जानने योग्य बातें

मैं इस अध्याय में वर्षफल जानने के लिए कुछ विशेष अनुभवजन्य बिन्दु स्पष्ट कर रहा हूँ, जो पाठकों व ज्योतिषी बन्धुओं के लिए विशेष लाभदायक रहेंगे।

१. मुंथा जन्म लग्न से ६, ८, १२वें होकर वर्ष में जिस भाव में भी स्थित होती है, उस भाव की प्रबल हानि करती है। उदाहरणार्थ नवम भाव में होकर राज्यच्युति आदि संभावनाओं को ही जन्म देगी।

२. यदि वर्ष लग्नेश एवं मुंथेश दोनों ही अस्त, वक्री या नीच राशिगत हों तो उस वर्ष सन्तान की ओर से चिन्ता, मानसिक परेशानी एवं धनक्षय होता है।

३. यदि वर्ष लग्न, जन्म लग्न से अष्टम या षष्ठम हो तो उस वर्ष जातक मृत्युसम कष्ट प्राप्त करता है एवं आर्थिक दृष्टि से नुकसान उठाता है।

४. यदि जन्मकुण्डली का अष्टमेश वर्ष में लग्नस्थ हो या लग्नेश हो तो भी काफी कठिनाइयों एवं बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

५. यदि जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश एवं वर्षराट् तीनों ही वर्ष कुण्डली में अष्टमस्थ हों तो जातक मृत्यु या मृत्युसम कष्ट प्राप्त करता है।

६. वर्ष कुण्डली में चार ग्रहों—जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश, मुंथेश तथा वर्षराट्—पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। यदि ये षष्ठ, अष्टम या व्यय भाव में हों अथवा इन पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो अथवा ये पापग्रहों से युक्त हों तो उस वर्ष घोर कष्ट उठाना पड़ता है।

७. यदि वर्ष कुण्डली में चन्द्रमा ६, ८, १२ या लग्न में हो तथा

उस पर मंगल की दृष्टि हो तो				शस्त्रभय
शनि	"	"	"	रोग भय
सूर्य	"	"	"	शत्रु भय
बुध, गुरु, शुक्र		"		लाभ, पर रोग भी होताहै।

८. चतुर्थेश की दृष्टि चतुर्थ भाव पर हो तथा गुरु केन्द्र में हो तो उस वर्ष लाभ होता है तथा सुसंवाद सुनने को मिलते हैं।

९. ३, ६, ११वें भाव में शनि, मंगल, राहु व सूर्य हो तथा गुरु शुक्र, चन्द्र. त्रिकोण या केन्द्र में हो तो उस वर्ष आरोग्यता, सुख-सम्पत्ति एवं धन लाभ होता है।

१०. यदि वर्षराट् वली हो तथा धनभाव को धनेश एवं गुरु देखता हो, साथ ही भाग्येश-लाभेश की युति हो तो उस वर्ष बिना प्रयास धन-प्राप्ति होती है, लाटरी आदि की सम्भवनाएँ वढ़ जाती है।

११. यदि जन्म कुण्डली का धनेश वर्ष कुण्डली में पूर्णबली होकर शुभस्थान में स्थित हो तथा उसका सम्बन्ध वर्ष के धनेश से हो तो उस वर्ष आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता बढ़ती है।

१२. यदि जन्म कुण्डली में गुरु जिस राशि में बैठा हो, वह राशि वर्ष में पंचम भाव बने तथा उसमें गुरु स्थित हो या उस पर वर्ष के पंचमेश की दृष्टि हो तो उस वर्ष सन्तान लाभ होता है।

१३. यदि वर्ष कुण्डली में ३, १०, ११वें भाव में बलवान मंगल स्थित हो तो उस वर्ष भाई के द्वारा सुख, सम्पत्ति एवं यश मिलता है।

१४. जन्म कुण्डली में जो ग्रह शुभ भावों के अधिपति हों वे यदि

वर्ष कुण्डली में केन्द्र, त्रिकोण या शुभ भावों में स्थिति हों तथा अपने आप में पूर्णवली हों तो उस वर्ष निस्सन्देह उन-उन भावों की वृद्धि होकर लाभ होता है।

१५. वर्ष लग्नेश पर अष्टमेश या द्वादशेश की दृष्टि हो तो वह व्यक्ति वर्ष भर तकलीफ एवं दुःख भोगता है।

१६. यदि निर्बल धनेश भाग्य भाव में हो तो संचित धन का नाश हो जाता है।

१७. यदि पंचम भाव में शनि-सूर्य बैठे हो तो सन्तान के एक्सीडेन्ट से जातक दुःख भोगता है।

१८. छठे भाव में पापग्रह आरोग्यता प्रदान करता है।

१९. त्रिकोण में गुरु, सूर्य, शनि या मंगल के साथ बैठे तो उस वर्ष धन नाश होता है।

२०. शुक्र पापग्रह के साथ दूसरे या बारहवें भाव में स्थित हो तो उस वर्ष नेत्र पीड़ा या आँखों का ऑपरेशन होता है।

२१. सप्तम भाव में शुक्र हो तथा उस पर मंगल की दृष्टि हो तो सन्तान जन्म होता है।

२२. यदि पंचम भाव में मंगल तथा शुक्र साथ में बैठें तो सन्तान योग समझना चाहिए।

२३. यदि वर्षेश, मंगल वक्री होकर छठे भाव में हो तो रक्त पीड़ा एवं रक्त दूषणता होती है। सूर्य छठे भाव में हो तो ज्वर, पीड़ा, कमजोरी, शुक्र हो तो वायु रोग, चन्द्र हो तो पेट दर्द तथा हार्ट अटैक होता है।

२४. मुंथा, मुंथा वर्षपति, वर्ष लग्नेश तथा वर्ष लग्न ये पाँचों ही पापग्रहों से दृष्ट हों तो वह वर्ष जातक के लिए घोर कष्टमय होता है।

२५. छठे भाव में षष्ठेश हो तो स्त्री प्राप्ति में सहायक बनता है।

२६. पंचम स्थान में बलवान् गुरु-चन्द्र हो तो उस वर्ष निश्चय ही सन्तान प्राप्ति होती है।

२७. वर्षपति का लग्नेश से इत्थशाल हो तो उस वर्ष जातक मृत्यु या मृत्युसम कष्ट प्राप्त करता है।

२८. शनि दशम भाव में होकर द्रव्य की हानि करता है।

२९. यदि चतुर्थ भाव में मंगल हो तो मातृ सुख में न्यूनता समझनी चाहिए।

३०. यदि वर्ष में मंगल, चन्द्र का दृष्टि सम्वन्ध हो तथा तृतीयेश से इत्थशाल होता हो तो भ्रातृ सुख में कमी समझनी चाहिए।

३१. वलवान अष्टमेश केन्द्र में हो या वर्ष लग्नेश अष्टम भाव गत हो तो वर्ष अनिष्टप्रद समझना चाहिए।

३२. शुक्र कन्या राशि में हो या अस्त हो तथा चन्द्रमा भी वृश्चिक राशि में हो तो वर्ष अशुभ ही समझा जाना चाहिये।

३३. अष्टम भाव में लग्नेश मंगल की राशि का हो तथा मंगल से इष्ट हो तो वह वर्ष विशेष अशुभ समझा जाना चाहिए।

३४. वर्षेश निर्वल हो तथा धनेश एवं भाग्येश अपनी-अपनी नीच राशि में हों तो अनिष्टप्रद वर्ष समझा जाना चाहिए।

३५. चन्द्र-सूर्य एक ही राशि में हों अथवा दोनों ही ग्रह ६,८,१२वें हों तो वर्ष अनिष्टप्रद समझा जाना चाहिए।

३६. अष्टमस्थ सूर्य, बुध, मंगल धननाशक होते हैं।

३७. चन्द्रमा यदि वर्ष में चौथे या दशम भाव में हो तो वह वर्ष लाभदायक रहता है।

३८. धनेश-भाग्येश वलवान होकर केन्द्र या त्रिकोण में हों तो उस वर्ष विशेष लाभ रहेगा, ऐसा समझना चाहिए।

३९. दशमेश, अष्टमेश का सम्वन्ध स्थानान्तरण तथा राज्यच्युति कराता है।

४०. चन्द्रमा पापग्रह के साथ हो या दृष्टि में हो तो वर्ष में चित्त भ्रमित रहता है एवं मानसिक शान्ति नहीं मिल पाती।

४१. सप्तम भाव पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो वर्ष में पत्नी बीमार रहेगी या कष्टावस्था में होगी।